तरेगन

तरेगन

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

TAREGAN

Collection of Children Seed Stories in Maithili Language by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-19-3
दाम: 250/- (भा.रु.)

पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2010, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-क्रम

मनमनियाँ

अपने लोकनिक बीच बीहैन-कथाक छोट-छीन संग्रह उपस्थित अछि। प्रस्तुत संग्रह एक-लगाइत नहि, डेढ़-दू सालक बीच लिखल आ संकलित कएल कथा सभ अछि, जइमे मौलिक कथाक संग विश्व भरिक साहित्यक सार संक्षेप नेना आ बढ़ैत नेना सभ-ले जुटौल गेल अछि, सबहक प्रति आभार जइसँ रंग-बिरंगक विषय-वस्तुक ई जमघट भऽ गेल अछि।

आजुक भाग-दौड़क जिनगीमे दीर्घ कथा पढ़ैक पलखति नइ रहने लघु तथा बीहैन कथाक महत स्वत: बढ़ि गेल अछि।

कथा-लेखनमे श्रीनिवासजी (डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास, लोहना)क सहयोगक चर्च करब केना बिसैर सकै छिऐन।

समय-समयपर गजेन्द्रजी (श्री गजेन्द्र ठाकुर, मेंहथ)क आग्रह आ सुझाव आ संगहि श्रुति प्रकाशनक श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारीक भरपुर सहयोग भेटलासँ लिखैक नव उत्साहो आ आशो मनकेँ सक्कत बना देने अछि।

ऐ पोथीक नाओं ‘तरेगन’ श्री धीरेन्द्र कुमारजी (निर्मली)क देल अछि।

अन्तमे, कथा-प्रेमी सभसँ आग्रह जे अपन अमूल्य सुझावसँ अवगति करा आगू-ले उत्साहित करब।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

बाल दिवस, 14 नवम्बर 2009

स्रष्टाक समग्र रचना

सृष्टि निर्माणक काज सम्पन्न भऽ गेल छल। प्राणी सभकेँ बजा ब्रह्मा अपन-अपन कमीक पूर्ति करा लइले कहलखिन। सभ प्राणी अपन-अपन कमीक चरचा करए लगल। मुदा एक्के बेर जे सभ बाजए लगैत तँ हल्लामे कियो केकरो बात सुनबे ने करैत। तखन सभकेँ शान्त करैत ब्रह्मा बेरा-बेरी बजैले कहलखिन। सबहक बात सुनि ब्रह्मा केकरो अठन्नी, केकरो चौबन्नी, केकरो दस-पैसी सुधार कऽ देलखिन।

अखन धरि मनुक्ख पछुआएले छल। पहिने ब्रह्मा नारीकेँ पुछलखिन-

“अहाँमे की कमी रहि गेल अछि, बाजू?”

तमतमाइत नारी कहलकैन-

“हमरा तँ बड़ सुन्नर बनेलौं मुदा अपना सन दोसर नारीकेँ देखि मनमे जलन हुअ लगैए। तँए एक रंग दूटा नारी नै बनबियौ।”

मुस्कियाइत ब्रह्माजी एकटा ऐना आनि नारीक हाथमे दैत कहलखिन-

“बस, एक्केटा सहेली अहाँ सन बनेलौं। जखैन मन हुअए तखैन आगूमे ऐना रखि देखि लेब। जौं सेहो देखैक मन नै हुअए तँ ऐना देखबे ने करब।” ❑

प्रतिभा

डॉक्टर राममनोहर लोहिया जेहने विद्वान तेहने देशभक्त रहैथ। देश-प्रेमक विचार पितासँ विरासतमे भेटल रहैन। तेतबे नहि, ओहने मस्त-मौला सेहो रहैथ। सदिखन चिन्तन आ आनन्दमे जिनगी बितबैत रहैथ। विदेशसँ अबैकाल मद्रास बन्दरगाहपर जहाजसँ उतरला। कलकत्ता जेबाक छेलैन। मुदा संगमे टिकटोक पाइ नइ रहैन। बिना भाड़ा देने केना जइतैथ?

बन्दरगाहसँ उतैर सोझे हिन्दू अखबारक कार्यालयमे जा सम्पादककेँ राम मनोहर लोहिया कहलखिन- “अहाँक पत्रिका-ले हम दूटा लेख देब।”

सम्पादक कहलकैन- “लाउ कहाँ अछि।”

लेख तँ लिखल छेलैन नहि, कहलखिन- “कागत-कलम दिअ अखने लिखि कऽ दइ छी।”

लोहिया जीक जवाब सुनि सम्पादक टकर-टकर मुँह देखए लगलैन।

तखन डॉक्टर लोहिया अपन वास्तविक कारण बता देलखिन। कारण बुझला पछातइ सम्पादकजी बैसबोक आ लिखबोक ओरियान कऽ देलकैन। किछु घन्टा पछातइ दुनू लेख तैयार कऽ लोहियाजी दऽ देलखिन।

दुनू लेख पढ़ि सम्पादक गुम्म भऽ मने-मन हुनक प्रतिभाक प्रशंसा करए लगला।

ज्ञानक महत्ता सर्वोपरि अछि। ई बुझि एक्को क्षण व्यर्थ गमेबाक चेष्टा नै करक चाही। सदिखन अपनाकेँ नीक काजमे लगौने रहक चाही। ❑

मर्म

एकटा स्कूल छल जइमे हेलब सिखौल जाइ छेलइ। नव-नव विद्यार्थी प्रवेश लइ छल आ हेलैक कला सीख-सीख बाहर निकलै छल। स्कूलेक आगूमे खूब नमगर-चौड़गर पोखैर छेलइ। जेकरा कातमे तँ कम पानि मुदा बीचमे अगम पानि छल।

शिक्षक घाटपर ठाढ़ भऽ देखए लगला। विद्यार्थी सभ पानिमे धँसल। विद्यार्थी सभकेँ आगू मुहेँ माने अगम पानि दिस बढ़ल जाइत देखि शिक्षक कहलखिन- "बाउ, अखैन अहाँ सभ अनजान छी। हेलब नै जनै छी। तँए अखैन अधिक गहींर दिस नै जाउ। नहि तँ डुमि जाइ जाएब। जखैन हेलब सीख लेब तखैन पानिक ऊपरमे रहैक ढंग भऽ जाएत। जखैन पानिक ऊपरमे रहैक ढंग सीख लेब तखैन ओकर लाभ अपनो हएत आ दोसरोकेँ डुमैसँ बँचा सकब। अहिना संसारमे वैभवोक अछि। अनाड़ी ओइमे डुमि जाइए, मुदा विवेकबान ओइपर शासन करैए। जइसँ अपनो आ दोसरोक भलाइ होइ छइ।"

वैभवक स्थितिमे बेकती अपने कुसंस्कारसँ गहींर खाइ खुनि स्वयं डुमि जाइत अछि। ❑

अधखरूआ

दूटा चेला संग गुरु घुमैले विदा भेला। गामसँ निकैल पाँतरमे प्रवेश करिते बाध दिस नजैर पड़लैन। सगरे बाधक खेत सभमे माटिक ढिमका बनौल छल। तीनू गोरे रस्तेपर सँ हियासि-हियासि देखए लगला जे एना किए छइ। कनीकाल गुनधुन कऽ दुनू चेला

गुरुकेँ कहलकैन- “अपने एतै छाहैरमे बैसियौ, हम दुनू भाँइ देखने अबै छी।”

‘बड़बढ़ियाँ’ कहि गुरु ओतै बैस रहला। दुनू चेला विदा भेल। कातेक खेतसँ ढिमका देखैत दुनू गोरे सौंसे बाधक ढिमका देख, घुमि आएल। सभ ढिमकाक बगलमे कूप खूनल छेलइ। मुदा कोनो कूपमे पानि नै छेलइ। खाली एक्केटा कूपमे पानियोँ छेलै आ ढेकुलो गाड़ल छेलइ। ओना, तँ सौंसे बाधे खीड़ाक खेती भेल छल मुदा सभ खेतक लत्ती पानिक दुआरे जरि गेल रहए। खाली एक्केटा खेतमे झमटगर लत्तियो रहै आ सोहरी लगल फड़लो छेलइ।

गुरु लग आबि चेला कहलकैन- “सभ ढिमका कातमे कूप खुनल छै मुदा पानि नै छै खाली एक्केटा कूपमे पानियोँ छै, ढेकुलो गाड़ल छै आ खेतमे सोहरी लगल खीड़ो फड़ल छइ।”

चेलाक बात धियान सँ सुनि गुरु पुछलखिन- “एना किए छइ?”

दुनू चेला चुप्पे रहल। चेलाकेँ चुप देखि गुरु कहए लगलखिन-

“एहेन लोक गामो-घरमे ढेरियाएल अछि जे चट मंगनी पट बिआह करए चाहैए। जेते उथ्थर कूप छै जइमे पानि नै छै, ओ खुननिहारो सभ ओहने उथ्थर अछि।

कोनो काजकेँ -चाहे आर्थिक होइ आकि वौद्धिक आकि सामाजिक- अगर ढंगसँ नै कएल जेतै तँ ओहने हेतइ। बीचमे जे एकटा कूप देखलिऐ ओ खुननिहार किसान मेहनती छैथ। अपन धैर्य आ श्रमसँ माटिक तरक पानि निकालि खीड़ा उपजौने छैथ। तँए हुनका मेहनैतक फल भेट रहल छैन। बाँकी सभ कामचोर अछि तँए आशपर पानि फेरा गेलइ।” ❑

समैयक बेरबादी

एकटा बेवसायी खिस्सा सुनलक जे राजा परिक्षित एक्के सप्ताह भागवत सुनि ज्ञानवान भऽ गेल छला। तँए हमहूँ किए ने भऽ सकै छी। अहिना सोचि ओ कथावाचक भँजियाबए लगला। कथावाचक भेटलैन। दुनू गोरे माने कथोवाचक आ बेवसायियो अपन-अपन लाभक फेरमे रहैथ। कथावाचक सोचैथ जे मालदार सुनिनिहार भेटल आ बेवसायी सोचैथ जे जिनगी भरि बइमानी कऽ बहुत धन अरजलौं, से नहि तँ आबो– मरै बेर किछु ज्ञान अरजि ली जइसँ मुक्ति हएत।

कथा शुरू भेल। सप्ताह भरि कथा चलल। सप्ताह बितलापर बेवसायी कथावाचकेँ माने व्यासकेँ कहलकैन-

“अहाँ नीक-नहाँति कथा नै सुनेलौं हमरा ज्ञान कहाँ भेल? दछिना नै देब।”

बेवसायीक बात सुनि व्यासजी कहलखिन-

“अहाँक धियान सदिखन पाइ कमाइ दिस रहैए तँ ज्ञान केना हएत?”

दुनू एक-दोसरकेँ दोख लगबए लगला। कियो अपन गलती मानैले तैयारे ने। दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ी होइत-होइत पटका-पटकी हुअ लगल। तखने एकटा विचारवान बेकती रस्तासँ गुजरै छला। ओ देखलखिन। लगमे जा दुनू गोरेकेँ झगड़ा छोड़बैत पुछलखिन। दुनू गोरे अपन-अपन बात ओइ बेकतीकेँ कहलकैन। दुनूक बात सुनि ओ बेकती दुनूक हाथ-पएर बान्हि कहलखिन-

“आब अहाँ दुनू गोरे एक-दोसरक बान्ह खोलू।”

बान्हल हाथसँ केना खुलितै, बन्हन नै खुलल। तखन ओ

निर्णय दैत कहलखिन- “दुनू गोरेक मन केतौ और छल तँए सफल नै भेलौं। सप्ताह भरिक समय दुनूक गेल तँए अपन-अपन घाटा उठा घर जाउ। एकात्म भेने बिना आध्यात्मिक उदेसक पूर्ति नै होइ छइ।”❑

पहिने तप तखन ढलिहें

एक दिन एकटा कुम्हार माटिक ढेरी लग बैस, माटिसँ लऽ कऽ पकौल बरतन धरिक विचार मने-मन करै छल। कुम्हारकेँ चिन्तामग्न देखि माटि कहलकै- “भाय, तोँ हमर एहेन बरतन बनाबह जइमे शीतल पानि भरि कऽ राखी आ प्रियतमक हृदए जुड़ा सकी।”

माटिक सबाल सुनि, कनीकाल गुम्म भऽ कुम्हार माटिकेँ कहलक- “तोहर विचार तखने सम्भव भऽ सकै छौ जखैन तोरा कोदारिक चोट, मुंगरीक मारि खाइक आ गदहापर चढ़ैक, पएरक गंजन सहैक तथा आगिमे पकैक साहस हेतौ। ऐसँ कम गंजन भेने पवित्र पात्र नै बनि सकमेँ।” ❑

खलीफा उमरक सिनेह

खलीफा उमर गुलामक संग बुलैले देहात दिस जाइत रहैथ। किछु दूर गेलापर देखलखिन जे एकटा बुढ़िया जोर-जोरसँ आँगनमे बैस कानि रहल अछि। रस्तासँ ससैर ओ डेढ़ियापर जा ओइ बुढ़ियासँ कनैक कारण पुछलखिन।

हुचकैत बुढ़िया कहए लगलैन- “हमर जुआन बेटा लड़ाइमे मारल गेल। हम भूखे मरै छी मुदा एक्को दिन खलीफा उमर खोजो-

खबैर लइले नै आएल।"

बुढ़ियाक बात सुनि उमर चोट्टे घुमि घरपर आबि एक बोरी गहुम अपने माथपर लऽ बुढ़िया ओइठाम विदा भेला।

माथपर गहुमक बोरी देखि गुलाम कहलकैन- "अपने बोरी नै उठबियो। हमरा दिअ नेने चलै छी।"

गुलामकेँ उमर जवाब देलखिन- "हम अपन पापक बोझ लऽ खुदा घर नै जाएब तँ पाप केना कटत? अहाँ तँ हमरा पापक भागी नै हएब।"

गहुमक बोरी बुढ़ियाक घर उमर पहुँचा देलखिन। गहुम देखि बुढ़िया नाओं पुछलकैन। मुस्कियाइत उमर जवाब देलखिन- "हमरे नाओं उमर छी।"

आसिरवाद दैत बुढ़िया कहलकैन- "अपन प्रजाक दुख-दरदकेँ अपन परिवारक दुख-दरद जकाँ बुझि कऽ चलब तखने आदर्श बनि सकब। जखैन आदर्श बनब तखने हजारो-लाखो लोकक दुआ भेटत आ अमर हएब।" ❑

जखने जागी तखने परात

प्रसिद्ध उपन्यासकार डॉक्टर क्रोनिन बड़ गरीब रहैथ। मुदा जखन पी-एच.डी. केलैन आ किताब सभ बिकए लगलैन तखन धीरे-धीरे सुभ्यस्त हुअ लगला। धनकेँ अबैत देखि मनो बढ़ए लगलैन। क्रिया-कलाप सेहो बदलए लगलैन। क्रिया-कलापकेँ बदलैत देखि पत्नी कहलकैन-

"जखैन हम सभ गरीब छेलौं तखने नीक छेलौं जे कम-सँ-

कम हृदैमे दयो तँ छेलए। मुदा आब दया समापत भेल जा रहल अछि।”

पत्नीक बात सुनि क्रोनिन महसूस करैत कहलखिन-

“ठीके कहलौं। धनीक धनसँ नै होइए बल्कि मन आ हृदैसँ होइए। हम अपन रस्तासँ भटैक गेल छी। जौं अहाँ नै चेतैबतौं तँ हम आरो आगू बढ़ि ओइ जगहपर पहुँच जैतौं जेतए एक्कोटा मनुक्खक बास नै होइ छइ।” ❑

अस्तित्वक समाप्ति

एकठाम कनी हटि-हटि कऽ तीनटा पहाड़ छेलइ। पहाड़क पजरेमे नमगर आ गहींर खाधियो छेलइ। जइसँ लोकक आबाजाही नै भऽ पबै। एक दिन एकटा देवता ओइ दिशासँ होइत गुजरै छला। तीनू पहाड़केँ देखि पुछलखिन- “ऐ क्षेत्रक नामकरण करबाक अछि से केकरा नाओंसँ करी? संगहि अपन कल्याण-ले अहाँ सभ की चाहै छी?”

पहिल पहाड़ कहलकैन- “हम सभसँ ऊँच भऽ जाइ जइसँ दूर-दूर देखि पड़िऐ।”

दोसर बाजल- “हमरा खूब हरिअर-हरिअर प्राकृतिक सम्पदासँ भरि दिअ। जइसँ लोक हमरा दिस आकर्षित हुअए।”

तेसर कहलक- “हमर उँचाइकेँ छील ऐ खादिकेँ भरि दियौ जइसँ ई सौंसे क्षेत्र उपजाउ बनि जाए जइसँ लोकोक आबाजाही भऽ जेतइ।”

तीनूक जोगार लगा देवता विदा भऽ गेला। एक बर्ख पछातइ तीनूक परिणाम देखैले पुनः एला। पहिल पहाड़ खूब ऊँचगर भऽ गेल

छल। मुदा कियो ओमहर जेबे ने करैत। पानि-पाथर, बिहाड़ि, रौद आ जाड़क मारि सभसँ बेसी ओकरे सहए पड़इ। दोसर तेते प्राकृतिक सम्पदासँ भरि गेल जे बोनाह भऽ गेल। बोनैया जानवरक डरे कियो ओमहर जेबे ने करैत। तेसर पहाड़सँ खाधियो भरि गेलै आ अपनो समतल भऽ गेल। खाधिसँ लऽ कऽ पहाड़ धरिक जगह उपजाउ बनि गेलइ। खेती-वाड़ी करैले लोकक आबाजाही दिन-राति भऽ गेलइ।

तेसर पहाड़क नाओंपर क्षेत्रक नामकरण करैत देवता कहलखिन- “यएह पहाड़ अपन अस्तित्व समाप्त कऽ खाधियोकेँ अपना हृदैमे लगौलक। जइसँ ई क्षेत्र उपजाउ बनि गेल। तँए अहींक नाओंपर ऐ क्षेत्रक नाओं राखब उचित।” ❑

खजाना

एकटा इलाकामे रौदी भऽ गेलइ। सभ तरहक परिवारकेँ सभ तरहक जीबैक रस्ता छेलइ। मुदा एकटा दशे कट्ठाबला किसान मजदूर छल। जे अपने खेतमे मेहनैत कऽ गुजर करै छल। रौदी देखि वेचारा सोचए लगल जे जाबे पानि नै हएत ताबे खेती केना करब? जौं खेती नै करब तँ खएब की? तँए अनतहि चलि जाइ जे काज लागत तँ गुजरो चलत। जब बर्खा हेतै तँ धुमि कऽ चलि आएब आ खेती करब। ई सोचि सभ तूर नुआ-वस्तु लऽ विदा भऽ गेल।

जाइत-जाइत दुपहर भऽ गेलइ। भूखे-पिआसे बच्चा सभ लटुआए लगलै। छोटका बच्चा ठोहि फाड़ि-फाड़ि कानए लगलै। रस्ता कातमे एकटा झमटगर गाछ देखि सभकेँ छाहैरक आश भेलइ। सभ तूर गाछतर पड़ि रहल। छोटका बेटा माएकेँ कहलक- “माए,

भूखे परान निकलैए कुछो खाइले दे।"

बेटाक बात सुनि माएक करेज पघिलए लगलै मुदा करैत की, खाइले तँ किछु रहबे ने करइ। मुदा तैयो वेचारी कहलकै-

"बौआ, कनीकाल बरदास करू। खाइक जोगार करै छी।"

सभ तूर जोगारमे जुटि गेल। कियो माटिक गोलाक चूल्हि बनबए लगल, तँ कियो जारैन आनए गेल। कियो पानि आनए इनार दिस विदा भेल। सभकेँ सभ काजमे लगल देखि गाछक ऊपरसँ एकटा चिड़ै पुछलकै- "ऐ मूर्ख, पकबैक तँ सभ जोगार सभ करै छह मुदा पकेबह कथी? जखैन पकबैक कोनो चीज छहे नहि तँ छुच्छे चूल्हि जरेबह।"

बड़का बेटा यएह सोचै छल जे केतौसँ किछु कन्द-मूल आनि उसनि कऽ खाएब। मुदा तही बीच चिड़ैक मजाक सुनि खिसिया कऽ कहलकै-"तोरे सभ परिवारकेँ पकैड़ आनि पका कऽ खेबौ।"

चिड़ैक मुखिया डरि गेल। मने-मन सोचए लगल जे परस्पर सहयोगक पुरुषार्थ किछु कऽ सकैए। तँए झगड़ब उचित नहि। मिलान स्वरमे बाजल- "भाय, हमरा परिवारकेँ किए नाश करबह। तोरा गाड़ल खजाना देखा दइ छिअ। वएह लऽ आबह आ चैनसँ जिनगी बितबिहह।"

ओ चिड़ै खजाना देखा देलकै। सभ मिलि ओइ खजानाकेँ लऽ घर दिस घुमि गेल।

ओकरा घरक बगलेमे दोसरो ओहने परिवार छेलइ। जेकरा सभ बात ओ कहि देलकै। मुदा ओइ परिवारक सभ कोढ़ि आ झगड़ाउ रहए। खजानाक लोभे ऊहो सभ-तूर विदा भेल। जाइत-जाइत ओइ गाछ तर पहुँचल। पहुलके चिड़ै जकाँ ईहो सभ भानसक नाटक करए लगल। गारजन जेकरा जे अढ़बै से करैक बदला झगड़े

करए लगइ। गाछपर सँ वएह चिड़ै कहलकै-

“भोजनक जोगारे करैमे तँ सभ कटौझ करै छह तखैन पकेबह कथी?”

पहुलके जकाँ परिवारक मुखिया कहलकै- “तोरे पकैड़ कऽ पकेबह?”

हँसैत चिड़ै उत्तर देलकै- “हमरा पकड़ैबला कियो और छल जे सभ धन लऽ चलि गेल। तोरा बुत्ते किछु ने हेतह?” ❑

उग्रघारा

द्वापर युगक सन्धयाकालीन कथा छी। महाभारतक लड़ाइ सम्पन्न भऽ गेल छल। एक दिन एकान्तमे बैस अर्जुन त्रेताक राम-रावणक लड़ाइ आ द्वापरक कौरव-पाण्डवक लड़ाइक तुलना मने-मन करै छला। अनासुरती मनमे उठलैन जे लंका जाइकाल रामक सेना एक-एक पाथरक टुकड़ाकेँ जोड़ि जे समुद्रमे पुल बनौलैन, ओ तँ एक तीरोमे बनि सकै छल। ऐ प्रश्नपर जेते सोचैथ तेते शंका बढ़ले जाइन। अन्तमे, यएह सोचलैन जे पम्पापुरमे हनुमान तपस्या कऽ रहल छैथ तँए हुनकेसँ किए ने पुछि लेल जाए।

हनुमानकेँ भँजियबैले अर्जुन विदा भेला। जाइत-जाइत हनुमानक कुटीपर पहुँचलैथ। हनुमान तपस्यामे लीन रहैथ। कुट्टीक आगूमे बैस अर्जुन हनुमानक धियान टुटैक प्रतीक्षा करए लगला। जखन हनुमानक धियान टुटलैन तँ अर्जुनकेँ देखलखिन। आसनसँ उठि अतिथि-सत्कार करैत हनुमान अर्जुनकेँ पुछलखिन- “अहाँ के छी, कोन काजे ऐठाम एलौं हेन?”

अपन परिचए दैत अर्जुन कहए लगलखिन- “अपने त्रेताक

महावीर छी तँए एकटा शंकाक समाधान-ले एलौं हेन।"

"पुछू।"

"लंका जाइकाल जे समुद्रमे एक-एकटा पाथरक टुकड़ा जोड़ि जे पुल बनौल, ओ तँ एक तीरोमे बनि सकै छल?"

अर्जुनक बात सुनि किछु काल गुम्म भऽ हनुमान उत्तर देलखिन-

"हँ, मुदा ओ ओते मजगूत नै होइतै जेते एक-एक पाथरक टुकड़ा जोड़ि कऽ भेलइ।"

हनुमानक उत्तरसँ अर्जुन असहमत होइत कहलखिन-

"तीरोक बनल पुल तँ ओहने मजगूत भऽ सकै छेलै?"

ऐ प्रश्नपर दुनूक बीच मतभेद भऽ गेलैन। अन्तमे परीक्षाक नौबत आबि गेलइ। दुनू गोरे समुद्रक कात पहुँचला। तरकशसँ तीर निकालि अर्जुन धनुषपर चढ़ा समुद्रमे छोड़लैन। पुल बनलै। अपन विकराल रूप बना हनुमान पुलपर कुदबाक उपक्रम केलैन। अन्तर्यामी कृष्ण सभ देखैत रहैथ। मने-मन सोचलैन जे महाभारतक नायक अर्जुन हारि रहल छैथ। हुनक हारब हमर हारब हएत। संगहि महाभारतक लड़ाइ सेहो झूठ भऽ जेतइ। तँए प्रतिष्ठा बँचबैक घड़ी आबि गेल अछि। जइ सोझे हनुमान पुलपर खसितैथ तइ सोझे कृष्ण अपन कन्हा पुलक तरमे लगा देलखिन। हनुमान कुदला। पुल तँ टुटैसँ बँचि गेल मुदा कृष्णक करेज चहैक गेलैन। जइसँ पानिमे खून पसरए लगलै। खूनसँ रंगाइत पानि देखि हनुमान धियान करए लगला जे एना किए भऽ रहल छइ। भँजियबैत ओ ओइ जगहपर पहुँच कृष्णकेँ देखलखिन।

अचेत कृष्णकेँ देख, दुनू हाथ जोड़ि हनुमान क्षमा मंगलखिन।❑

बेवहारिक

जीवनी आ अनाड़ी माने बेवहारिक आ अबेवहारिकक प्रश्न असान नहि। ऐ विशाल संसारमे लाखो-करोड़ो ढंगक जिनगी बना लोक जीबैए। एकक जिनगी दोसरसँ मिलबो करैत आ भिन्नो होइत। तँए एकक बेवहारिक ज्ञान दोसरा-ले नीको होइए आ अधलो।

चारि आदमी स्नातक महाविद्यालयसँ निकैल गाम जाइत रहैथ। चारूकेँ अपन-अपन ज्ञानपर गर्व रहैन। दुपहर भऽ गेल छल। सभकेँ भूख लगलैन।

रस्तामे रूकि खाइक ओरियानमे चारू गोरे जुटि गेला। तर्कशास्त्री चिक्कस आनए दोकान गेला। प्लोथिनक झोरामे चिक्कस कीनि अबै छला। मनमे फुरलैन जे झोरा मजगूत अछि कि नहि? तथ्य जनैले झोराकेँ हाथसँ दबलैन। झोरा फाटि गेल। चिक्कस छिड़िया कऽ माटिमे मिलि गेल। फेर घुमि कऽ चाउर कीनि ओरिया कऽ नेने एला।

कलाशास्त्री जारैन आनए गेल छला। हरिअर-हरिअर सुन्नर गाछ देखि ओ मुग्ध भऽ गेला। गाछसँ सुखल जारैन नै तोड़ि काँचे झाड़ी काटि कऽ नेने एला।

कहुना-कहुना कऽ तेसर पाक-शास्त्री वएह कँचका जारैन पजारि बटलोही चढ़ौलैथ। अदहन जखन बजलै तँ चाउर लगौलैथ। थोड़बेकाल पछातइ बटलोहीमे चाउरो आ पानियोँ खुदबुदाए लगलै। बटलोहीमे खुदबुदाइत देखि पाक-शास्त्री मग्न भऽ गेला। चारिम जे व्याकरण जननिहार छला बटलोहीक खुदबुदीक आवाज सुनि व्याकरणक उच्चारणक हिसाबसँ गलत बुझि, तमसा कऽ ओकरा उल्टा देलखिन। सभटा भात चूल्हिमे चलि गेल।

बगलेमे ठाढ़ एक गोरे सभ तमाशा देखैत रहैथ। चारूकेँ भूखल देखि हुनका दया लगलैन ओ अपन मोटरीसँ नून-सतुआ निकालि चारू गोरेकेँ खाइले दैत कहलखिन- “किताबी ज्ञानसँ बेवहारिक अनुभवक मूल्य अधिक होइ छइ।” ❑

समर्पण

समुद्रसँ मिलैले धार विदा भेल। रस्तामे बलुआही इलाका पड़ै छेलइ। जुआनीक जोशमे धार विदा तँ भेल मुदा रस्ताक बालु आगू बढ़ै ने दइ छेलइ। सभ पानि सोंखि लिअए। धारक सपना टुटए लगलै। मुदा तैयो साहस कऽ धार अपन उद्गम स्रोतसँ जल लऽ लऽ दौग कऽ आगू बढ़ए चाहै छल मुदा तैयो धारक सभ पानि बालु सोंखि लइ छेलइ। जइसँ धार आगू बढ़ैमे असफल भऽ जाइ छल। अन्तमे झुंझला कऽ निराश भऽ धार बालुकेँ पुछलकै- “समुद्रमे मिलैक हमर सपना अहाँ नै पूर हुअए देब?”

बालु उत्तर देलकै- “बलुआही इलाका होइत जाएब सम्भव नइए। अगर जौं अहाँ अपना प्रियतमसँ मिलए चाहै छी तँ पहिने अपन सम्पैत वादलकेँ सौंपि दियौ, तखने पहुँच पाएब।”

अपन अस्तित्वकेँ समाप्त करबाक अद्भुत समर्पणक साहस धारकेँ हेबे ने करइ। मुदा बालुक विचारमे गम्भीरता छेलइ। किछु काल विचारि धार समर्पण-ले तैयार भऽ गेल। तखन ओ पानिक बूनक रूपमे अपनाकेँ बदैल वादलक सवारीपर चढ़ि समुद्रमे जा मिलल। ❑

उत्थान-पतन

एकटा शिष्य गुरुसँ पुछलकैन- “मनुक्ख शक्तिक भण्डार छी, फेर ओ किए डुमैए-गिड़ैए?”

शिष्यक प्रश्न सुनि गुरु कनीकाल सोचि अपन कमण्डल पानिमे फेक देलखिन। कमण्डल पानिमे तैरए लगल। कनीकालक बाद कमण्डल निकालि पेनमे भूर कऽ देलखिन। भूर केलाक पछातइ फेर कमण्डलकेँ पानिमे फेकलखिन। कमण्डल डुमि गेल। डुमल कमण्डलकेँ देखबैत गुरु कहलखिन- “जहिना छेद भेल कमण्डल पानिमे डुमि गेल मुदा बिनु छेद भेल कमण्डल नै डुमल तहिना मनुक्खोक अछि। जइ मनुक्खमे संयम छै ओ ऐ संसार रूपी पोखैरमे नै डुमैए मुदा जे असंयमी अछि ओ ओइ छेद भेल कमण्डल जकाँति डुमि जाइत अछि। अहिना गाएकेँ अगर चालैनमे दुहल जाए तँ दूध धरतीपर गिरत मुदा जौं सौंस बरतनमे दुहल जाएत तँ बरतनमे रहत। तहिना इन्द्रिय शक्ति जौं मानसिक शक्तिकेँ कुमार्ग दिस लऽ जाएत तँ ओ ओही चालैन जकाँ भऽ जाएत। मुदा जौं सुमार्ग दिस बढ़त तँ ओ जरूर शक्तिशाली मनुक्ख बनत।” ❑

देवता

मनुक्खक रोम-रोममे ईश्वर-परब्रह्म समाएल छैथ। केकरो अहित करबाक इच्छा करब अपना-ले पापकेँ बजाएब छी। दधीचिक पुत्र पिप्लाद अपन माएक मुहेँ अपन पिताक हड्डी देवता द्वारा मांगब आ ओइसँ बनौल बज्रसँ अपन प्राण बँचाएब सुनलैन। सुनिते पिप्लादकेँ देवताक प्रति असीम घृणा मनमे उठलैन। मने-मन सोचए

लगला जे अपन स्वार्थ साधैले दोसरक प्राण हरब, केते नीचता छी। मनमे क्रोध जगलैन। पिताक बदला लइले पिप्पलाद तप करैक विचार केलैन।

पिप्पलाद तप शुरू केलैन। तप शुरू करिते मनक ताप कमए लगलैन। बहुत दिनक पछातइ भगवान शिव प्रकट भऽ कहलखिन-

“वर मांगू?”

प्रणाम कऽ पिप्पलाद शिवकेँ कहलखिन- “अपने अपन रुद्र रूप धारण कऽ ऐ देवता सभकेँ डाहि कऽ भष्म कऽ दियौ।”

पिप्पलादक बात सुनि शिव स्तब्ध भऽ गेला। मुदा अपन वचन तँ पुरबए पड़तैन। तँए देवताकेँ जरबैले तेसर आँखि खोलैक उपक्रम करए लगला। ऐ उपक्रमक आरम्भेमे पिप्पलादक रोम-रोम जरए लगल। अपन अंगकेँ जरैत देखि जोरसँ हल्ला करैत शिवकेँ कहए लगलखिन- “भगवान, ई की भऽ रहल अछि? देवताक बदला हम खुदे जरि रहल छी!”

मुस्की दैत शिव कहलखिन- “देवता अहाँक देहमे सन्हियाएल छैथ। अवयवक शक्ति हुनके सामर्थ्य छिऐन। देवता जरता आ अहाँ बँचल रहब से केना हएत? आगि लगौनिहार स्वयं सेहो जरैए।”

पिप्पलाद अपन याचना घुमा लेलैन। तखन भगवान शिव कहलखिन- “देवता सभ तियागक अवसर दऽ अहाँ पिताक काजकेँ गौरवान्वित केलैन। मरब तँ अनिवार्य अछि। ऐसँ ने अहाँक पिता बँचितैथ आ ने वृत्तासुर राक्षस।”

पिप्पलादक भ्रम टुटि गेलैन। ओ आत्म कल्याण दिस मूड़ि गेला। ❑

पाप आ पुण्य

अपन पोथी-पतरा उनटबैत चित्रगुप्त आसनपर बैसल छला। तैबीच दू गोरेकेँ यमदूत हुनका लग पेश केलक। पहिल बेकतीक परिचए दैत यमदूत कहलकैन-

“ई नगरक सेठ छैथ। हिनका घनक कोनो कमी नै छैन। खूब कमेबो केलैन आ मन्दिर, धरमशाला सेहो बनौलैन।”

कहि यमराज सेठकेँ कातमे बैसा देलक।

दोसरकेँ पेश करैत बाजल-

“ई बड़ गरीब छैथ। भरि पेट खेनाइयो ने होइ छैन। एक दिन खाइत रहैथ आकि एकटा भूखल कुकुर लगमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। भूखल कुकुरकेँ देखि थारीमे जे रोटी बँचल छेलैन ओ ओकरा आगूमे दऽ देलखिन। अपने पानि पीब हाथ धोय लेलैन। आब अपने जे आज्ञा दिऐ।” यमदूतक ब्यान सुनि चित्रगुप्त पोथीओ देखैथ आ विचारबो करैथ। बड़ीकाल धरि सोचैत-विचारैत निर्णय देलखिन-

“सेठकेँ नरक आ गरीबकेँ स्वर्ग लऽ जाउ।”

चित्रगुप्तक निर्णय सुनि यमराजो आ दुनू बेकतियो अचम्भित भऽ गेल। तीनू गोरेकेँ अचम्भित देखि अपन स्पष्टीकरणमे चित्रगुप्त कहए लगलखिन-

“गरीब आ निःसहाय लोकक शोषण सेठ केने अछि। ओइ निःसहाय लोकक विवशताक दुरूपयोग केने अछि। जइसँ अपनो ऐश-मौज केलक आ बँचल सम्पैतक नाओं मात्र लोकेषणक पूर्ति हेतु व्यय केलक। तइमे लोकहितक कोन काज भेलै? ओइ मन्दिर आ धरमशल्ला बनबैक पाछू ई भावना काज करै छेलै जे लोक हमर प्रशंसा करए। मुदा पसेना चुबा कऽ जे गरीब कमेलक आ समय

एलापर ऊहो कुत्तेकेँ खुआ देलक। जौं ओकरा आरो अधिक धन रहितै तँ नै जानि केते अभावग्रस्त लोकक सेवा करैत।" ❑

परख

एकटा किसानकेँ चारिटा बेटा रहए। बेटा सबहक बुधि परखैले किसान सभकेँ बजा एक-एक आँजुर धान दऽ कहलक- "तूँ सभ अपन-अपन विचारसँ एकरा उपयोग करह।"

धानकेँ कम बुझि जेठका बेटा आँगनमे छिड़िया देलक। चिड़ै सभ आबि बीछ-बीछ खा गेल...।

माझिल बेटा ओइ धानकेँ तरहत्थीपर लऽ-लऽ रगैड़-रगैड़, भुस्साकेँ मुहसँ फूकि, खा गेल।

बापक देल धानकेँ सम्पैत बुझि साझिल बेटा कोहीमे रखि लेलक, जे जौं कहियो बाबू मंगता तँ निकालि कऽ दऽ देबैन।

छोटका बेटा, ओइ धानकेँ खेतमे बाउग कऽ देलक। जइसँ कएक बर बेसी धान उपजलै।

किछु दिन पछातइ चारू बेटाकेँ बजा किसान पुछलक- "धान की भेल?"

चारू बेटा अपन-अपन केलहा काज कहलकैन। चारू बेटाक काज देखि-सुनि किसान छोटका बेटाकेँ बुधियार बुझि परिवारक भार दैत कहलक- "परिवारमे एहने गुण अपनबए पड़ै छइ। एहने गुण अपनौलासँ परिवार सुसम्पन्न बनै छइ।" ❑

आलसी

एकटा गाछपर टिकुली आ मधुमाछी रहै छल। दुनूक बीच घनिष्ठ दोस्ती छेलइ। भरि दिन दुनू अपन जिनगीक लीलामे लगल रहै छल। अकलबेरामे दुनू आबि अपन सुख-दुखक गप-सप्प करै छल।

बरसातक समय एलइ। सतैहिया लादि देलकै। मधुमाछी-ले तँ अगहन आबि गेल मुदा टिकुली-ले दुरकाल। भूखे-पिआसे टिकुली घरक मोख लग मन्हुआएल बैसल छल। मुँह सुखाएल आ चेहरा मुरुझाएल छेलइ। चरौर कए कऽ आबि मधुमाछी टिकुलीकेँ पुछलकै-

“बहिन, एहेन सुन्नर समैमे एते सोगाएल किए बैसल छी?”

मधुमाछीक बात सुनि करुआएल मोने टिकुली उत्तर देलकै-

“बहिन, मौसमक सुन्नरतासँ पेटक आगि थोड़े मिझाइ छइ। तीन दिनसँ केतौ निकलैक समैए ने भेटल, तँए भूखे तबाह छी।”

उपदेश दैत मधुमाछी कहलकै- “कुसमय-ले किछु बँचा कऽ राखक चाही।”

मुड़ी डोलबैत टिकुली कहलकै- “कहलौं तँ बहिन ठीके मुदा बँचा कऽ रखलासँ आलसियो भऽ जैतौं आ भूखल सबहक नजैरमे चोरो होइतौं। ❑

प्रेम

जखन परिवारमे पति-पत्नी आ बच्चा सबहक बीच सिनेह रहै छै तखन परिवार स्वर्गोसँ सुन्नर बुझि पड़ै छइ। नमहर-सँ-नमहर विपैत परिवारमे किए ने आबए मुदा ढंगसँ चललापर ऊहो आसानीसँ

निपैट जाइ छइ।

एकटा छोट-छीन गरीब परिवार छल। दुइए परानी घरमे। सभ साल दुनू परानी -सुनिता आ सुशील- अपन विवाहोत्सव मनबैत। गरीब रहने तँ बहुत ताम-झामसँ उत्सव नै मनबैत मुदा मनबैत सभ साल छल। छोट-मोट उपहार एक-दोसरकेँ, यादि स्वरूप दइ छल। साले-साल ऐ परम्पराकेँ निमाहैत आबि रहल छल।

अहू बर्ख ओ दिन एलइ। उत्सवक दिनसँ किछु पहिनेसँ उपहारक योजना दुनूक मनमे बनए लगलै। मुदा दुनूक हाथ खाली। भरि पेट

खेनाइयो ने पूरै तखन जमा कए कऽ की रखैत। मने-मन सुशील योजना बनौने जे पत्नीक केशमे लगबैले किलीप नै छै तँए ऐ बेर किलीपे उपहार देबैन। तहिना सुनितो सोचैत जे पति हाथक घड़ीक चेन पुरान भऽ गेल छैन तँए ऐ बेर चेन कीनि कऽ देबैन। दुनू अपन-अपन जोगारमे। मुदा नाजाइज कमाइ नै रहने जोगारे ने बइसै। उत्सवक दिन अबैमे एक दिन बाँकी रहलै। अन्तिम समैमे सुशील सोचलक जे आइ साँझमे घड़ी बेचि किलीप कीनि लेब।

एमहर सुनितो सोचली जे अपन केश कटा कऽ बेचि लेब तइसँ घड़ीक चेन भऽ जाएत। साँझू पहर दुनू गोरे- फूट-फूट बाजार गेल।

सुशील घड़ी बेचि किलीप कीनि लेलक आ सुनिता केश बेचि चेन वेसाहलक। खुशीसँ दुनू गोरे घर आबि अपन-अपन वस्तु–चेन आ किलीप ओरिया कऽ रखि लेलक।

सबेरे सूति उठि कऽ दुनू परानी हँसैत एक-दोसरकेँ उपहार दइले आगू बढ़ल। सुनिता टोपी पहिरने छेली। किलीप निकालि सुशील सुनिताक टोपी हटा किलीप लगबए चाहलक मुदा केशे नहि!

तहिना चेन निकालि सुनिता घड़ीमे लगबए चाहलैन तँ हाथमे

घड़ीए नहि।

आमने-सामने दुनू ठाढ़। दुनूक मुहसँ तँ किछु नै निकलैत मुदा दुनूक हृदैमे हर्ष-विस्मयक बीच घमासान लड़ाइ बजैर गेलइ। अन्तमे हृदए बाजल- “जे सिनेह दूधक समुद्रमे झिलहोरि खेलैए ओइले किलीप आ चेनक कोन महत छइ।” ❑

हैरियट स्टो

अमर लेखिका हैरियट एलिजाबेथ स्टो विश्व-विख्यात पोथी, ‘टाम काकाक कुटिया’ लिखने छैथ। जइ समैमे ओ पोथी लिखै छला ओइ समय ओ कठिन परिस्थितिमे जिनगी बितबैत रहैथ। ओना, अकसरहाँ लोक ऐ पोथीकेँ अमेरिकाक दास प्रथाक विरोधमे लिखल मानैए।

अपना परिस्थितिक सम्बन्धमे अपन भौजीकेँ कहलखिन-

“चूल्हि-चौकाक काज– नुआ-बस्तर धोनाइ, सिआइ केनाइ, जूता-चप्पलक पॉलिस आ मरम्मैत केनाइ जिनगीक मुख्य काज अछि। बच्चा आ परिवारक सेवामे भरि दिन सिपाही जकाँ खटै छी। छोटका बच्चा लगमे सुतैए तँए जाधैर ओ सूति नै रहैए ताधैर किछु ने सोचि सकै छी आ ने लिखि पबै छी। गरीबी आ पारिवारिक काज ऐ रूपेँ दबने अछि जइसँ समैए कम बँचैए। मुदा तैयो एक-दू घन्टा सुतैक समय काटि अपना सन लोक, जिनका परिवारक अंग बुझै छिऐन तिनका-ले किछु लिखि-पढ़ि लइ छी।”

हुनके लिखल पोथीसँ उत्तरी अमेरिका आ दछिनी अमेरिकामे दास प्रथाक खिलाप क्रान्ति भेल। ❑

बुझैक ढंग

एकटा यात्री वृन्दावन विदा भेल। किछु दूर गेलापर रस्ताक बगलमे मीलक पत्थरपर नजैर पड़लै। ओइ मीलक पत्थरमे वृन्दावनक दूरी आ दिशा लिखल छेलइ। ओ यात्री ओतै अँटैक बैस रहल आ बाजए लगल- “पाथरक अंकन तँ गलती नै भऽ सकैए किएक तँ बिसवासी लोकक लिखल छिऐ। वृन्दावन तँ आबिए गेल छी, आगू बढ़ैक की प्रयोजन?”

थोड़ेकाल पछातइ एकटा बुझनिहार आदमी ओइ रस्ते केतौ जाइत रहैथ तँ सुनलखिन। मने-मन खूब हँसलैथ। कनीकाल ठाढ़ भऽ हँसैत ओइ यात्रीकैँ कहलखिन- “पाथरपर सिरिफ संकेत मात्र अछि। ऐठामसँ वृन्दावन बहुत दूर अछि। जौं अहाँ ओतए जाए चाहै छी तँ तुरन्ते सभ समान समेट विदा भऽ जाउ नहि तँ नइ पहुँचब।”

भोला-भला यात्री अपन भूल मानि विदा भेल...।

एहेन बहुतो लोक छैथ जे शास्त्रो पढ़ै छैथ, शास्त्रीय बातो सुनै छैथ मुदा धरम धारण करबाक रस्ता पकड़बे ने करै छैथ तखन ओ धरम केना बुझथिन जे धरम की छिऐ? ❑

श्रमिकक इज्जत

अपन संगी-साथीक संग नेपोलियन टहलैले जाइत रहैथ। जेरगर रहने सौंसे रस्ता छेकाएल छेलइ। दोसर दिससँ एकटा घसबहिनी माथपर घासक बोझ नेने अबै छेली। ओइ घसबहिनीपर सभसँ पहिल नजैर नेपोलियनक पड़लैन। ओ पाछू घुमि कऽ देखलैन। सौंसे रस्ता घेराएल छेलइ। अपन पैछला संगीक हाथ पकैड़

घिंचैत कहलखिन- “श्रमिकक सम्मान करू..! एक भाग रस्ता खाली कऽ दियौ। यएह देशक अमूल्य सम्पैत छी। एकरे बले कोनो देशक उन्नैत होइ छइ।”

घसबहिनी टपि गेल। थोड़े आगू बढ़लापर पुनः नेपोलियन संगी सभकेँ कहलखिन- “सद्प्रवृत्तिकेँ बढ़ेबाक चाही। ओकरा जेते महत देबै ओते जन-उत्साह जगतै। जइसँ देशक कल्याण हेतइ।” ❑

वंश

महान् विचारक सिसरोकेँ एकटा धनिक सरदारसँ कोनो बाते कहा-सुनी हुअ लगलैन। ने ओ धनिक पाछू हटैले तैयार आ ने सिसरो। दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ीक नौबत आबए लगलै। खिसिया कऽ ओ धनिक सिसरोकेँ कहलकैन- “तूँ नीच कुलक छैँ, तँए तोरा-हमरा कथीक वरावरी?”

ऐ बातसँ सिसरो विचलित नै भऽ साहससँ उत्तर देलखिन- “हमरा कुलक कुलीनता हमरासँ शुरू हएत मुदा तोरा कुलक कुलीनता तोरासँ अन्त हेतौ।”

सभ्यता आ कुलीनता जनमसँ नै बल्कि चरित्र आ कर्तव्यसँ पैदा लइए। ❑

तियाग

सत्संग, भागवत आ प्रवचनमे बेर-बेर तियागक महिमाक चर्चा होइत रहल अछि। तियागकेँ ईश्वर प्राप्तिक रस्ता बतौल जाइए। बेर-बेर जरायुध ऐ चर्चाकेँ सुनथि। तँए मनमे बिसवास भऽ गेलैन जे सत्ते तियागसँ ईश्वरक प्राप्ति होइ छइ। जरायुध अपन सभ सम्पैत दान कऽ देलखिन। मुदा दान केलो पछातइ हुनका ने मनमे शान्ति एलैन

आ ने ईश्वर भेटलैन। निराश भऽ जरायुध महाज्ञानी शुकदेव लग पहुँच पुछलखिन- “जनक तँ संग्रही छला मुदा तैयो हुनका ब्रह्मज्ञान प्राप्ति भऽ गेल छेलैन आ हम सभ किछु तियागिओ कऽ ने ब्रह्मज्ञान पाबि सकलौं आ नहियेँ शान्ति भेटल। एकर की कारण छइ?”

धियानसँ जरायुधक बात सुनि सुकदेव उत्तर देलखिन-

“आवश्यक वस्तुकेँ परमार्थमे लगा देब तँ नैतिक आ सामाजिक कर्तव्य बुझल जाइत। आध्यात्मिक स्तरक तियागमे सभ वस्तुक ममत्व छोड़ि ओकरा ईश्वरक घरोहर बुझए पड़त। शरीर आ मन सेहो सम्पदा छी। ओकरा ईश्वरक अमानत मानि हुनके इच्छानुसार केलापर बुझबै जे सही तियाग भेल आ मोक्षक रस्ता भेटत।” ❑

सद्विचार

एकटा न्यायप्रिय राजा साधुक भेषमे अपन प्रजाक कुशल-क्षेम बुझैले निकललैथ। जहिया कहियो ओ राजा साधुक भेषमे निकलैथ तहिया खाली एकटा मंत्रीकेँ चेला रूपमे संग कऽ लैथ। ने अंगरक्षक रहैन आ ने अमिला-फमिला आ ने केकरो जानकारी देथिन।

बहुतो गोरेसँ सम्पर्क करैत राजा एकटा बगीचामे पहुँचला। ओइ बगीचामे एकटा वृद्ध किसान नवका -बच्चा- गाछ रोपैत रहैथ। गाछ देखि राजा किसानकेँ पुछलखिन- “ई तँ अखरोटक गाछ बुझि पड़ैए?”

मुस्कियाइत किसान कहलकैन- “हँ भैया, अहाँक अनुमान सोलहन्नी जाइज अछि।”

"बीस-पच्चीस बर्खक गाछ भेलापर अखरोट फड़ै छै, ताधैर अहाँ जीविते रहब?"

"ऐ बगीचार्कें हमर बाप-दादा लगौने छैथ। खून-पसीना एकबट्ट कऽ एकरा पटौलैन, देखभाल केलैन। जेकर फड़ हम सभ खाइ छी। तँए आब हमरो कर्तव्य बनैए जे ओते हमहूँ रोपि दिऐ। अपनेटा-ले गाछ लगौनाइ तँ स्वार्थक बात भऽ जाइ छइ। हम ई नै सोचै छी जे आइ ऐ गाछक उपयोगिता कि छइ? भविसमे दोसरकेँ फल दइ बस यएह इच्छा अछि।"

किसानक विचार सुनि राजा मंत्रीकेँ कहलखिन- "जौं अहिना सभ बुझए लगै जे हमरा लगबैसँ मतलब अछि तँ समाजो आ परिवारोमे सद्-विचार पसैर जाएत। जाधैर समाजमे सद्-वृत्तिक प्रसार नै हएत ताधैर नीक समाज बनब मात्र कल्पना रहत।" ❑

साहस

सोवियत संघक नेता लेनिन। हिनकापर एकटा सिरफिरा पेस्तौल चला देलकैन। गोली तँ निकैल गेलैन मुदा छर्रा गरदैनमे फँसले रहि गेलैन। तैबीच देशमे एकटा पुल टुटि गेल। पुल मुख्य मार्गमे छेलै, तँए जेते जल्दी भऽ सकैत ओते जल्दी पुल बनौनाइ जरूरी छेलइ। आपात् स्थिति घोषित कऽ ओइ पुलक मरम्मैत युद्धस्तरपर हुअ लगलै। देशप्रेमी जनता ओइ काजमे लागि गेल। लेनिन सेहो ओइ काजमे जुटला। श्रमिके जकाँ लेनिनो काज करैत रहथिन। गरदैनमे गोली रहनौं ओ बीस-बीस घन्टा काज करै छेलखिन। काज करैत देखि एकटा श्रमिक पुछलकैन तखन ओ कहलखिन- "अगुआ भऽ कऽ जखैन हमहीं काजमे पाछू रहब तखैन जन उत्साह केना बढ़तै? जेकर खगता देशमे अछि।" ❑

बरदास

अब्राहम लिंकन अमेरिकाक राष्ट्रपैत रहैथ। हुनक पत्नी चिड़चिड़ा एवम् कठोर सोभावक छेलखिन। जइसँ लिंकनक पारिवारिक जीवन दुःखमय छेलैन। कएक दिन एहेन होइ छेलै जे जखन परिवारक सभ सूति रहै छेलैन तखन लिंकन चुपचाप पैछला दरबज्जासँ आबि सुइत रहै छला। आ सुरूज उगैसँ पहिने तैयार भऽ निकैल ऑफिस चलि जाइ छला। दिन भरि अपन काजमे मस्त भऽ बिता लइ छला। संगी-साथीक संग हँसी-मजाक कऽ मन बहला लइ छला।

एक दिन परिवारक एकटा नोकरकेँ हुनक पत्नी गारियो पढ़लखिन आ फटकारबो केलखिन। नोकरकेँ बड़ दुख भेलइ। ओ कोठीसँ निकैल सोझे लिंकनक ऑफिस जा सभ बात कहलकैन। नोकरक सभ बात सुनि लिंकन बुझबैत कहलखिन- "ऐ भले आदमी, पनरह बरखसँ हम ऐ परिस्थितिसँ मुकाबला करैत शान्तिसँ रहैत एलौं आ अहाँ एक्के दिनक फटकारमे एते दुखी भऽ गेलौं। बरदास कऽ लिअ।"

अचताइत-पचताइत वेचारा नोकर लिंकनक बात मानि लेलक। ❑

भूल

प्रख्यात दार्शनिक वरटेण्ड रसेल अपन जीवनीमे लिखने छैथ, जे हमर पहिल स्त्री सचमुच विचारवान छेली। जखन ओ मोन पड़ै छैथ तखन हृदए दहैक जाइए। दुनू गोरेक बीच अगाध प्रेम छल। एक दिन कोनो बाते दुनू गोरेक बीच अनबन भऽ गेल। खिसिया कऽ हम

बिनु खेनहि ऑफिस विदा भऽ गेलौं। रस्तामे एकाएक मनमे उपकल जे अपन क्रोधक बात पत्नीकेँ कहि दिऐन। रस्तेसँ घुमि गेलौं। घुमि कऽ घर एलापर पत्नी घुमैक कारण पुछलैन। हमर क्रोध आरो उग्र भऽ गेल। हम कहलयैन- “आब अहाँले हमरा हृदैमे मिसियो भरि जगह नै अछि।”

पतिक बात सुनि पत्नी स्तब्ध भऽ गेल मुदा किछु बाजल नहि। वेचारीक हृदैमे ई बात जरूर पकैड़ लेलकैन जे हमरा ओ -पति- कपटी बुझै छैथ। आइ धरि हम भ्रममे छेलौं।

दुनूक बीच फाँक बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। होइत-होइत पति पत्नीकेँ तलाक दऽ देलक। वेचारी रसेलक घरसँ सदा-सदाक-ले चलि गेली। ❑

धैर्य

इंग्लैंडक प्रसिद्ध विद्वान टामस कूपर अंग्रेजीक शब्दकोष तैयार करैत रहैथ। काजमे कूपर तेना ने लीन भऽ गेल छला जे घरक कोनो सुधिये-बुधिये ने रहलैन। पत्नीकेँ घरक सरंजाम जुटबैमे परेशानी होनि, तँए ओ पतिपर खूब बिगड़ैथ। मुदा तेकर कोनो असैर कूपरकेँ नै होइन। एक दिन कूपर केतौ गेल रहैथ, तैबीच पत्नी खिसिया कऽ शब्दकोषक सभ कॉपी डाहि देलकैन। जखन ओ घुमि कऽ एला तँ देखलखिन जे वर्षोक मेहनैत जरि गेल। मुदा धैर्य एते प्रवल रहैन जे एक्को मिसिया तामस नै उठलैन। ने एक्कोरत्ती पत्नीपर बिगड़लखिन आ ने अपसोच केलैन। मुस्कियाइत खाली एतबे कहलखिन- “आठ बर्खक काज अहाँ आरो बढ़ा देलौं।” ❑

मनुखक मूल्य

एक दिन सिकन्दर आ अरस्तू केतौ जाइत रहैथ। रस्तामे एकटा नदी छल। जइ नदीमे नावपर पार हुअ पड़ै छेलइ। पहिने अरस्तू पार हुअ चाहै छला मुदा सिकन्दर हुनका रोकि अपने पार भेला। जखन सिकन्दर दोसर पार गेला तखन अरस्तूकेँ पार होइले कहलखिन। पार भेलापर अरस्तू सिकन्दरकेँ पुछलखिन-

“पहिने हमरा पार होइसँ किए मना केलौं?”

हँसैत सिकन्दर उत्तर देलखिन-

“अगर हम नदीमे डुमि जैतौं तैयो अहाँ हमरा सन-सन दसो सिकन्दर पैदा कऽ सकै छी मुदा जौं अहाँ डुमि जैतौं तँ हमरा सन-सन दशोटा सिकन्दर बुत्ते एकटा अरस्तू नै बनौल भऽ सकैए।”

सिकन्दरक विचार सुनि अरस्तू अपन जिनगीक मूल्य बुझलैन। ❑

मदैत नै चाही

मिश्रमे एकटा किलेन्थिस नामक लड़का एथेंसक तत्ववेत्ता जीनोक पाठशालामे पढ़ै छल। किलेन्थिस बड़ गरीब छल। ने खाइक कोनो ठेकान आ ने देह झँपैले वस्त्रक। मुदा पाठशालामे सही समैपर फीस दऽ दइ छल। पढ़ैमे चन्सगर रहने सुभ्यस्त परिवार सभक विद्यार्थी ओकरासँ इर्ष्या करैत। किलेन्थिसकेँ दबबैले एकटा षड्यंत्र ओ सभ रचलक। षड्यंत्र यएह जे किलेन्थिस पाठशालामे जे फीस दइए ओ चोरा कऽ अनैए। चोरीक मोकदमा किलेन्थिसपर भेलइ।

पुलिस पकैड़ कऽ जहल लऽ गेलइ। जखन ओकरा न्यायालयमे हाजिर कएल गेल तखन ओ जजकेँ कहलक- “हम निरदोस छी। हमरा फँसौल गेल अछि। तँए हम अपन व्यान-ले दूटा गवाही न्यायालयमे देब।”

जजक आदेशसँ दुनू गवाही बजौल गेल। पहिल गवाही एकटा माली छल आ दोसर वृद्ध औरत। मालीसँ पुछल गेल।

माली कहलकै- “सभ दिन ई लड़का हमरा बगीचामे आबि इनारसँ पानि भरि-भरि गाछ पटा दइए जेकरा बदलामे हम मजूरी दइ छिऐ।”

वृद्धासँ सेहो पुछल गेल ओ कहलकै- “हम वृद्धा छी। हमरा परिवारमे कियो काज करैबला नै अछि। सभ दिन ई बच्चा आबि गहुम पीस दइए, जेकरा बदलामे मजूरी दइ छिऐ।”

गवाहीक व्यान सुनि जज मोकदमा समाप्त करैत सरकारी सहायतासँ पढ़ैले सेहो आदेश देलक। परन्तु किलेन्थिस सरकारी सहायता लइसँ इनकार करैत बाजल- “हम स्वयं मेहनैत कऽ पढ़ब तँए हमरा दान नै चाही। हमरा माए-बाबू कहने छैथ जे मनुक्खकेँ स्वावलंबी बनि जीबाक चाही।”❑

मेहनतिक दरद

एकटा लोहार छल। मेहनैत आ लूरिसँ परिवार नीक-नहाँति चलबै छल। मुदा बेटा जेहने खर्चीला तेहने कामचोर छेलइ। बेटाक चालि-चलैन देखि लोहारकेँ बड़ दुख होइ। सभ दिन दशटा गारि आ फज्झैत बेटाकेँ करै मुदा तैयो बेटा-ले धैनसन। कोनो गम नहि। लोहार सोचलक जे ई एना नै मानत। जाबे एकरा खर्च करैले पाइ देनाइ नै बन्न कऽ देबै ताबे अहिना करैत रहत। दोसर दिनसँ पाइ देब

बन्न कऽ कहलकै- "अपन मेहनैतसँ चाइरौटा चौबन्नी कमा कऽ ला तखन खर्चा देबौ। नहि तँ एक्को पाइ देखब सपना भऽ जेतौ।"

बापक बात सुनि बेटा कमाइक परियास करए लगल। मुदा लूरि नै रहने हेबे ने करइ। अपन पैछला रखल चारिटा चौबन्नी नेने पिता लग आबि कऽ देलक। पिता भाथी पजारि हँसुआ बनबै छल। चारू चौबन्नीकेँ आगिमे दऽ कहलकै- "ई पाइ तोहर कमाएल नै छियौ।"

पिताक बात सुनि बेटा लजाइत ओतएसँ ससैर गेल।

दोसर दिन चुपचाप माएसँ चारिटा चौबन्नी मंगलक। माए देलकै। चारू चौबन्नी नेने बेटा बाप लग पहुँचल। बेटाक मुहेँ देखि पिता बुझि गेल। चारू चौबन्नी बेटा बापकेँ देलक। भीतरसँ बापकेँ तामस रहबे करइ। ओ चारू चौबन्नी हाथमे लऽ पुनः आगिमे फेक देलक।

पिताक काज देखि बेटा बुझलक जे बिना कमेने काज नै चलत। तखन ओ मेहनैत करए लगल। तेसर दिन चारिटा चौबन्नी बापक हाथमे देलक। चारू चौबन्नीकेँ लोहार पहुलके जकाँ आगिमे फेकए लगलै आकि हल्ला करैत बेटा बापक हाथ पकैड़ बाजल-

"बाबू, ई हमर मेहनैतक पाइ छी। एकरा किए बेदरदी जकाँ नष्ट करै छिऐ?"

बाप बुझि गेल। मुस्कियाइत बेटाकेँ कहए लगल- "बेटा, आब तूँ बुझलेँ जे मेहनैतक कमाइक दरद केहेन होइ छइ। जाधैर अन्ट-सन्टमे हमर कमेलहा खरच करै छेलेँ ताधैर हमरो एहने दरद होइ छेलए।"

पिताक बात बेटा बुझि गेल तखने सप्पत खेलक जे आइ दिनसँ एक्को पाइ फालतू खरच नै करब।❑

मैक्सिम गोर्की

बच्चेसँ मैक्सिम गोर्की निराश्रित भऽ गेल रहैथ। ओइ दशामे जीबैले झाड़ू लगौनाइसँ लऽ कऽ चौका-बरतन, चौकीदारी सभ काज केलैन। कएक दिन तँ कूड़ा-कचड़ाक ढेरीसँ काजक वस्तु ताकि-ताकि निकालि, बेचि कऽ अपनो आ बुढ़ नानीक पेटक आगि मुझबैथ। एहेन परिस्थितिमे पढ़ब-लिखब असाध्य कार्य छी। एहेन असाध्य परिस्थितिसँ मुकाबला कऽ अनुकूल बनौनिहार मैक्सिम गोर्कियो भेला।

रद्दी-रद्दी पत्रिका, फाटल-पुरान अखबार सभ एकत्रित कऽ पढ़नाइ सिखलैन। जखन पढ़ैक जिज्ञासा बढ़लैन तखन समय बँचा कऽ वाचनालय जाए लगला। रसे-रसे लिखैक अभ्यास सेहो करए लगला। कोनो-कोनो बहाना बना साहित्यकार सभसँ सम्बन्ध बनबए लगला। मैक्सिम गोर्की जे किछु लिखैथ ओकरा साहित्यकार सभसँ सुधार करबैथ।

वएह मैक्सिम गोर्की रूसक महान् साहित्यकार भेला। अन्यायी शासनक विरुद्ध जनताक अधिकार-ले खाली लिखबे टा नै करैथ बल्कि हुनका सबहक बीच जा संगठित आ संघर्षक नेतृत्व सेहो करैथ। जखन हुनकर लिखल पोथी तेजीसँ बिकए लगल तखन ओ अपन खर्चा निकालि बाँकी सभ पाइ संगठन चलबैले दऽ दिअए लगलखिन। ❑

मूलधन

एकटा वृद्ध पिता तीन बरख-ले तीर्थाटन करए निकलए चाहैथ। निकलैसँ पहिने चारू बेटाकेँ बजा अपन सभ पूजी बरबैर कऽ बाँटि कहलखिन-

“तीन साल-ले हम तीर्थाटन करए जा रहल छी। अगर जीबैत घुमलौं तँ अहाँ सभ पूजी घुमा देब नहि तँ कोनो बाते नहि।”

अपन हिस्सा रुपैआकेँ जेठका बेटा सुरक्षित रखि पिताक प्रतीक्षा करए लगल। मझिला बेटा सूदिपर लगा देलक। सझिला ऐश-मौजमे फूँकि देलक। छोटका ओकरा पूजी बुझि कारोबार करए लगल।

तीन साल पछातइ पिता एला। चारूसँ पूजी आपस मंगलखिन। घरसँ आनि जेठका ओहिना रुपैआ घुमा देलकैन। मझिला सूद सहित मूलधन घुमौलकैन। सझिला तँ खरच कऽ नेने छल तँए अगर-मगर करैत चुप भऽ गेल। छोटका बेवसायसँ खूब कमेने छल तँए चारि गुणा बेसी घुमौलकैन। छोटका बेटाकेँ प्रशंसा करैत पिता बजला- “रुपैआ तँ व्याजोपर लगा बढ़ौल जा सकैए मुदा एहेन काज अधिक पूजीबलाक छिऐ। मुदा जे अपने पूजी दुआरे बेरोजगार अछि ओकरा-ले नहि। ओकरा तँ जएह पूजी छै ओइमे अपन श्रमक संग जोड़ि जिनगीकेँ ठाढ़ करए पड़तै। तहूमे परिवारक दायित्व बलाकेँ तँ आरो सोचि-विचारि इमनदारीसँ चलए पड़तै। तखने परिवार चैनसँ चलि सकतै।” ❑

कपटी मित

एकटा सज्जन खढ़िया छल। ओ खढ़िया कतेकोसँ दोस्ती केलक। दोस्ती ऐ दुआरे करैत जे बेरपर हमहूँ मदैत करबै आ हमरो करत। एक दिन शिकारी कुकुर ओकरा पकड़ैले खिहारलक। खढ़िया भागल। भागल-भागल अपन मिता गाए लग पहुँच कऽ कहलकै-

“अहाँ हमर पुरान दोस छी। कुकुर हमरा रेबाड़ने अबैए। अहाँ ओकरा अपन सींगसँ मारि कऽ भगा दियौ जइसँ हमर जान बँचि जाएत।”

खढ़ियाक बात सुनि गाए कहलकै- “हमरा घरपर जाइक समय भऽ गेल। बच्चा डिरिआइत हएत। आब एक्को क्षण ऐठाम नै अँटकब।”

गाएक बात सुनि खढ़िया निराश भऽ गेल। कुकुर सेहो पाछूसँ ऐबते रहए। खढ़िया गाए लगसँ पड़ाएल आ घोड़ा लग पहुँचल। घोड़ो पुरान मिता खढ़ियाक छेलइ। घोड़ा लग पहुँच खढ़िया कहलकै-

“दोस, अहाँ अपना पीठपर बैसा लिअ। जइसँ हमरा ओइ कुकुरसँ जान बँचि जाएत।”

घोड़ा कहलकै- “हमरा पीट्ठीपर केना बैसब? हम तँ बैसनाइए बिसैर गेलौं।”

घोड़ाक बात सुनि खढ़िया निराश भऽ पड़ाएल। जाइत-जाइत गदहा लग पहुँच कहलकै-

“दोस, हम मुसीबतमे पड़ि गेल छी। अहाँ दुलकी चलनाइ जनै छी से कनी कुकुरकेँ मारि कऽ भगा दियौ, जइसँ हमर जान बँचि

जाएत।”

खढ़ियाक बात सुनि गदहा कहलकै- “घरपर जाइमे देरी हएत तँ मालिक मारत। तँए हम जाइ छी।”

फेर ओत्तौसँ खढ़िया भागल। जाइत-जाइत बकरी लग पहुँच कहलकै- “दोस, हम मरि रहल छी। अहाँ जान बँचाउ।”

अपन ओकाइत देखैत बकरी उत्तर देलकै- “दोस, झब दे ऐठामसँ दुनू गोरे भागू नहि तँ हमहूँ खतरामे पड़ि जाएब।”

बकरीक बात सुनि खढ़िया आरो निराश भऽ गेल। मनमे एलै जे अनका भरोसे जीअब बेकार छी। अपने बुत्ते अपन दुख मेटा सकै छी। भलेँ मन-मोताबिक जिनगी नै जीब सकी। तखन खढ़िया छाती मजगूत कऽ पड़ाएल। पड़ाएल-पड़ाएल एकटा झारीमे नुका रहल। कुकुर देखबे ने केलकै। दौगल-दौगल आगू बढ़ि गेल। खढ़ियाक जान बँचि गेलइ। ❑

भीख

एकटा मच्छर मधुमाछी छत्ता लग पहुँचल। छत्तामे ढेरो मधुमाछी छेलइ। छत्ता लग बैस मच्छर मधुमाछीकेँ कहलकै-

“हम संगीत विद्यामे निपुण छी। अहूँ सभ संगीत सीखू। हम सिखा देब। बदलामे थोड़े-थोड़े मधु दैत रहब जइसँ हमरो जिनगी चलत।”

मधुमाछी सभ अपनामे विचार करए लगल। मुदा बिना रानी माछीक विचारसँ कियो किछु नै कऽ सकै छेलै तँए रानीसँ पुछब जरूरी छेलइ। सभ मधुमाछी विचारि कऽ एकटा मधुमाछीकेँ

रानीमाछी लग पठौलक। रानीमाछी सभ बात सुनि कहलकै-

“जहिना संगीत-शास्त्रक ज्ञाता मच्छर, भीख मंगैले अपना ऐठाम आएल अछि तहिना जौं हमहूँ सभ मेहनैत छोड़ि देब तँ ओकरे जकाँ दशा हएत। तँए मेहनैतक संस्कार छोड़ि सस्ता संस्कार अपनौनाइ मुरुखपाना हएत। अगर अहूँ सभकेँ संगीतक सख होइए तँ मेहनैतो करू आ बैसारीमे संगीतो सीखू।” ❑

भगवान

सिद्ध पुरुष भऽ कबीर प्रख्यात भऽ गेल छला। दूर-दूरसँ जिज्ञासु सभ आबि-आबि दर्शनो करैत आ उपदेशो सुनै छल। मुदा कबीर अपन बेवसाय -कपड़ा बीनब- नै छोड़लैन। कपड़ो बीनथि आ सत्संगो करैथ। एकटा जिज्ञासु कबीरक बेवसाय देखि पुछलकैन-

“जाधैर अपने साधारण छेलौं ताधैर कपड़ा बीनब उचित छल मुदा आब तँ सिद्ध-पुरुष भऽ गेलिऐ तखन कपड़ा किए बीनै छी?”

जिज्ञासुक विचार सुनि मुस्कियाइत कबीर उत्तर देलखिन-

“पहिने पेट-ले कपड़ा बीनै छेलौं। मुदा आब जन-समाजमे समाएल भगवानक देह झँपैले आ अपन मनोयोगक साधना-ले बीनै छी।”

एक्के काज रहितो दृष्टिकोणक भिन्नतासँ उत्पन्न होइबला अन्तरकेँ बुझलासँ जिज्ञासुक समाधान भऽ गेलैन। ❑

एकाग्रचित

इंग्लैडक इतिहासमे अल्फ्रेडक नाओं इज्जतक संग लेल जाइए। ओ अनेको साहसी काज प्रजा-ले केलैन। तँए हुनका महान् अल्फेड, अल्फ्रेड द ग्रेट नाओंसँ इतिहासमे चरचा अछि।

शुरूमे अल्फ्रेड साधारण राजा जकाँ क्रिया-कलाप करै छला। जहिना बाप-दादाक अमलदारीमे चलै छेलै तहिना। खेनाइ-पीनाइ, ऐश-मौज केनाइ यएह जिनगी छेलैन। जइसँ एक दिन एहेन भेलै जे हुनकर कोढ़िपना दुश्मन-ले बरदान भऽ गेलइ। दुश्मन आक्रमण कऽ अल्फ्रेडकेँ सत्तासँ भगा देलकै। नुका कऽ ओ एकटा किसानक ऐठाम नोकरी करए लगल। बरतन माँजब, पानि भरब आ चुल्हि-चौकाक काज अल्फ्रेड करए लगल। नमहर किसान रहने अल्फ्रेडक देखि-रेख हुनकर पत्नी करै छेली।

एक दिन ओ कोनो काजे बाहर जाइ छेली। बटलोहीमे दालि चूल्हिपर चढ़ल छेलइ। औरत अल्फ्रेडकेँ कहि देलकै जे दालिपर धियान राखब। अल्फ्रेड चूल्हि लग बैस अपन जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगल। सोचैमे एते मग्न भऽ गेल जे बटलोहीक दालिपर धियाने ने रहलै। बटलोहिक दालि जरि गेलइ। जखन ओ औरत घुमि कऽ एली तँ देखालैन जे बटलोहिक सभ दालि जरि गेल अछि।

क्रोधसँ अल्फ्रेडकेँ कहलक-

“अरे मुर्ख युवक, बुझि पड़ैए जे तोरापर अल्फ्रेडक छाप पड़ल छौ। जहिना ओकर दशा भेलै तहिना तोरो हेतौ। जे काज करै छेँ ओकरा एकाग्रचित भऽ कर।”

वेचारी औरतकेँ की पता जे जेकरा कहै छिऐ ओ वएह छी।

औरतक बात सुनिते अल्फ्रेड चौंक गेल। अपन गलतीक भाँज लगबए लगल। मने-मन ओ संकल्प केलक जे आइसँ जे काज करब ओ एकाग्रचित भऽ करब। खाली कल्पने केलासँ नै हएत। अल्फ्रेड नोकरी छोड़ि देलक। पुनः आबि अपन सहयोगी सभसँ भेँट कऽ धनो आ आदमीओक संग्रह करए लगल। शक्ति बढ़लै। तखन ओ दुश्मनपर चढ़ाइ केलक। दुश्मनकेँ हरौलक। पुनः सत्तासीन भेल। सत्तासीन भेलापर पैघ-पैघ काज कऽ महान भेल। ❑

सीखैक जिज्ञासा

महादेव गोविन्द रानाडे दच्छिन भारतक रहैथ। ओ बंगला भाषा नै जनै छला। एक दिन रानाडे कलकत्ता गेला। कलकत्तामे अपन काज-सभ निपटा आपस होइले गाड़ी पकड़ए स्टेशन एला तँ एकटा बंगला अखबार कीनि लेलैन। बंगला अखबार देखि आश्चर्यसँ पत्नी कहलकैन- “अहाँ तँ बंगला नै जनै छी तखन अनेरे ई अखबार किए वेसाहलौं?”

मुस्कियाइत रानाडे जवाब देलखिन-

“दू दिनक गाड़ी यात्रा अछि। आसानीसँ बंगला सीख लेब।”

नीक-नहाँति रानाडे बंगला लिपि आ शब्दक गठनपर धियान दऽ सीखए लगला। पूना पहुँच पत्नीकेँ झूर-झार अखबार पढ़ि कऽ सुनबए लगलखिन।

एहेन छेलैन साठि वर्षीए रानाडेक मनोयोग। तँए अन्तिम समय धरि हर मनुक्खकेँ सीखैक जिज्ञासा रहक चाही। ❑

अनुभव

बेकती अपन अनुभवसँ सीखबो करैए आ दोसरो-ले दिशा निर्धारित करैए।

एक दिन झमझमौआ बर्खा होइत रहै आ मेधो गरजै, बिजलोको चमकै तथा तेज हवो बहैत रहए। तखने रस्ता टपैत एक आदमीक मृत्यु भऽ गेलइ। बर्खा छुटलै। लग-पासक लोक जखन निकलल तँ रस्तापर ओइ आदमीकेँ मरल देखलक। चारू भरसँ लोक जमा भऽ कियो कहैत वादलक आवाजसँ मृत्यु भेलइ। तँ कियो किछु कहै आ कियो किछु।

तखने एक अनुभवी आदमी सेहो पहुँचलैथ। ओ कहलखिन-

“जौं आवाजसँ मृत्यु होइतै तँ बहुतो लोक आवाज सुनलक। सबहक होइतै। तँए मृत्यु आवाजसँ नै लगमे ठनका गिरलासँ भेलइ।” ❑

आसिरवादक विरोध

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर अभाव आ गरीबीक बीच पढ़ि-लिखि पचास टाकाक मासिक नोकरी शुरू केलैन। हुनक सफलता देखि कुटुम-परिवार सभ आसिरवाद देमए पहुँचए लगलैन। एकटा कुटुम कहलकैन-

“भगवानक दयासँ अहाँक दुख मेटा गेल। आब आरामसँ रहू आ चैनसँ जिनगी बिताउ।”

ई आसिरवाद सुनिते विद्यासागरक आँखिसँ नोर खसए लगलैन। नोर पोछैत कहलखिन- “जइ अध्यवसायिक बले हम ओहन भीषण परिस्थितिक मुकावला केलौं ओकरे छोड़ि दइले कहै छी? अहाँकेँ ई कहबाक चाही छल जे जइ गरीबीक कष्ट स्वयं अनुभव केलौं ओइ परिस्थितिकेँ बिसरू नहि। अपन असाध्य श्रमसँ ओइ अवरुद्ध रस्ताकेँ साफ करू।” ❑

धर्मक असल रूप

श्रावस्तीक सम्राट चन्द्रचूड़केँ अनेक धरम आ ओकर प्रवक्ता सभसँ नीक लगाउ छेलैन। राज-काजसँ जे समय बँचैन ओकरा ओ धर्मेक अध्ययनो आ सत्संगेमे बितबैथ। ई क्रम बहुत दिनसँ चलि अबै छल। एक दिन ओ असमंजसमे पड़ि गेला। मनमे एलैन जे जखन धरम मनुक्खक कल्याण करैए तखन एतेक मतभेद एक-दोसर प्रवक्तामे किए अछि?

अपन समस्याक समाधान-ले चन्द्रचूड़ भगवान वुद्ध लग पहुँचला। ओइठाम ओ अपन बात वुद्धकेँ कहलखिन। चन्द्रचूड़क बात सुनि वुद्धदेव हँसए लगला। सत्कारपूर्वक हुनका ठहरैले कहि दोसर दिन भिनसरे समाधानक वचन देलखिन। एकटा हाथी आ पाँचटा आन्हर ओ जुटौलैन।

दोसर दिन भिनसरे वुद्धदेव चन्द्रचूड़केँ संग केने ओइ हाथी आ अन्हरा लग पहुँचला। एकाएकी ओइ अन्हरा सभकेँ हाथी छूबि ओकर स्वरूप बुझबैले कहलखिन। बेरा-बेरी ओ अन्हरा सभ हाथीकेँ छूबि-छूबि देखए लगल। जे जे अंग हाथीक छूलक ओ ओहने स्वरूप हाथीक बतबए लगलैन। कियो खुट्टा जकाँ तँ कियो

सूप जकाँ तँ कियो डोरी जकाँ तँ कियो टीला जकाँ कहलकैन।

सबहक बात सुनि वुद्धदेव चन्द्रचूड़कँ कहलखिन-

“राजन, सम्प्रदाय अपन सीमित क्षमताक अनुरूप धर्मक एकाकी व्याख्या करैए। अपन-अपन मान्यताक प्रति जिद्द धऽ अपनेमे सभ लड़ै छैथ। जहिना एक्केटा हाथीक स्वरूप पाँचो अन्हरा पाँच रंगक कहलक, तहिना धरमोक व्याख्या करैबला सभ करै छैथ। धरम तँ समता, सहिष्णुता, उदारता आ सज्जनतामे सन्निहित अछि।” ❑

सौन्दर्य

संगीतकार गाल्फर्ड लग पहुँच एकटा शिष्या अपन मनक बेथा कहए लगलैन- “कुरूपताक कारणे संगीतक मञ्चपर पहुँचते मनमे आबए लगैए जे आन लड़कीक अपेक्षा दर्शक हमरा नापसिन कऽ हँसी उड़बैए। जइसँ सकपका जाइ छी। गेबाक जे तैयारी केने रहै छी ओ नीक जकाँ नै गाबि पबै छी। वएह गीत घरपर बढ़ियाँ जकाँ गबै छी मुदा मञ्चपर पहुँचते की भऽ जाइत अछि जे हक्का-बक्का भऽ जाइ छी।”

शिष्याक बात सुनि गाल्फर्ड एकटा नमगर-चौड़गर ऐना लऽ, आगूमे रखि, गबैक विचार दैत कहलखिन-

“अहाँ कुरूप नै छी, जेना मनमे होइए। गीत गौनिहारिकेँ स्वरक मिठास हेबाक चाही जेकरा कुरूपतासँ कोनो सम्बन्ध नै छइ। जखैन भाव-विभोर भऽ गाएब तखैन अहाँक आकर्षण बढ़ि जाएत। कियो सुनिनिहार कुरूपतापर धियान नै दऽ स्वरपर धियान देत।

जइसँ मनक हीनता समाप्त भऽ जाएत आ आत्म-बिसवास बढ़ि जाएत।”

फ्रान्सक वएह गायिका मेरी वुडनाल्ड नाओंसँ प्रख्यात भेली।❑

स्तब्ध

दोसर विश्वयुद्ध समाप्त भऽ गेल छल। इंगोएशियन माने आंग्ल-रूसी संधिपर हस्ताक्षर करैले चर्चिल मास्को एला। संधिपर हस्ताक्षरो भऽ गेल। मास्को छोड़ैसँ एक दिन पहिने अनासुरती स्तालिन आ मोलोटोव चर्चिल लग पहुँच कहलकैन- “लड़ाइ-उड़ाइ तँ बहुत भेल। नीक समझौतो भऽ गेल। काल्हि अहाँ जेबो करब तँए आइ थोड़े मौज-मस्ती कऽ लिअ। हमरा ऐठाम चलि भोजन करू।”

स्तालिनक आग्रह सुनि चर्चिल मने-मन सोचए लगला जे महान् तानाशाह स्तालिन नोत देबए एला, आइ जरूर किछु अद्भुत वस्तु देखैक मौका भेटत। चर्चिल नोत मानि स्तालिनक संग विदा भेला। रस्तामे सिपाही सभ अभिवादन करैन। थोड़े दूर गेलापर एकटा पीअर रंगक दु-महला मकानक आगूमे कार रूकल। सभ कियो उतरला। स्तालिनक संग चर्चिल मकानक भीतर गेला। भीतर जा चर्चिलकेँ बैसबैत स्तालिन कहलखिन- “ऊपरका तल्लामे लेनिन रहै छला। ओ गुरु छैथ तँए ओइ तल्लाक उपयोग हम नै करै छी। ओ म्युजियम बनल अछि। निच्चाँमे तीनटा कोठरी अछि एकटामे दुनू परानी रहै छी। दोसरमे बेटी रहैए आ तेसरमे पार्टी सदस्य-ले बैसकी बनौने छी।”

स्तालिनक बात सुनि चर्चिल छगुन्तामे पड़ि गेला जे जइ तानाशाहक डरे पूजीवादी जगत थरथराइत अछि ओइ तानाशाहक रहैक बेवस्था एहने छइ। मने-मन सोचैत चर्चिल गुम्म रहैथ आकि स्तालिन कहलकैन- "थोड़ेकाल हमरा छुट्टी दिअ। भोजन बनबए जाइ छी।"

ई सुनि चर्चिल अचम्भित होइत पुछलखिन-

"अपने भानस करै छी, भनसिआ नै अछि?"

मुस्कियाइत स्तालिन उत्तर देलखिन- "नहि। अपने दुनू परानी मिलि भानस करै छी।"

स्तालिनक बात सुनि चर्चिल हतप्रभ होइत कहलखिन- "बड़ बढ़ियाँ, आइ घरेवालीकेँ भानस करए कहियनु। अहाँ गप-सप्प करू।"

"हम लाचार छी। पत्नी घरपर नै छैथ। ओ पाँच बजे कपड़ा मिलसँ औती।"

चर्चिल स्तब्ध भऽ गेला। ❑

एकता

एकटा पैघ भवनक निर्माण होइ छेलइ। निर्माणस्थल लग एक भाग पजेबा, दोसर भाग बालु, तहिना लकड़ी, सिमटी, चून इत्यादि जमा छल। ढेरीसँ पजेबा बाजल-

"अकास ठेकल कोठा हमरेसँ बनत, तँए कोठाक श्रेय हमरे भेटक चाही।"

पजेबाक बात सुनि सिमटी आ बालु प्रतिवाद करैत कहलकै-

“तोँ झूठ बजै छेँ। तोरा ई नै बुझल छौ जे एकसँ दोसर पजेबाक बीच जौं हम नै रहबौ तँ तूँ ढनमनाइते रहमे। संगे तोरा ईहो नै बुझल छौ जे जेते दूर तक तोँ जेमे तेते दूर तक हमहूँ संगे जेबौ आ तोरोसँ ऊपर हमहीं सुइत कऽ रक्षो करबौ।”

बालु आ सिमटीक बात सुनि खिड़की आ केबाड़ीक लकड़ी तामसे थरथराइत कहलकै-

“तोरा तीनू बुत्ते बड़ हेतौ तँ देबाल बनि जेमे, मुदा बिना हमरे ने छत बनि सकमे आ ने मुँह-कान चिक्कन हेतौ। जाबे हम नै रहबौ ताबे कुकुर-बिलाइक घर रहमे।”

सभ समानक बीच कटौझ चलै छल। कारीगर चाह पीब बीड़ी सुनगेलक। बिड़ीओ पीऐ छल आ मने-मन हँसबो करै छल। जखन भरि मन बीड़ी पीलक, मूड साफ भेलै, तखन तीनूकेँ चुप करैत कहलक-

“अगर तूँ सभ मिलाने कऽ लेमे, तइसँ की हेतौ? जाबे हम नै इलमसँ तोरा सभकेँ बनेबौ ताबे ओहिना माटिपर पड़ल रहमे आ कौआ-कुकुर आबि-आबि गंदा करैत रहतौ।”

सबहक विचार सुनि निर्णय करैत भवन कहलकै-

“अपना-अपना जगहपर सबहक महत छौ। मुदा जाबे एक-दोसरसँ मेल कए कऽ नै रहमे ताबे भवन नै कहेमे। ओहिना पजेबा, सिमटी, चून, लकड़ी रहमे। तँए अपन-अपन बड़प्पन छोड़ि मिलानक रस्ता पकड़ जइसँ कल्याण हेतौ।” ❑

विधवा बिआह

राजस्थानक इतिहासमे हठी हम्मीरक विशेष स्थान अछि। ओ एहेन जिद्दी छल जे जे उचित बुझै छेलै, करै छल। भलेँ केतबो विरोध आ निन्दा किए ने होइ। जखन हम्मीर बिआह करै जोकर भऽ गेल तखन बिआहक चरचा शुरू भेल। विद्यार्थीए जीवनमे हम्मीर विधवाक दुर्दशाकेँ गहराइसँ अध्ययन केने छल। पढ़ैयेक समय संकल्प कऽ नेने छल जे हम विधवे औरतसँ बिआह करब। हम्मीरक बिआहक चरचा पसरलै।

मुदा हम्मीर एकदम संकल्पित छल जे विधवेसँ बिआह करब। कुटुम परिवार सभ हम्मीरपर बिगड़ै मुदा तेकर एक्को पाइ गम नहि। पण्डित सबहक माध्यमसँ परिवारबला कहबौलक जे विधवा अमंगल सूचक होइए तँए एहेन काज नै करक चाही।

मुदा हम्मीर केकरो बात सुनैले तैयारे नहि।

एकटा बाल-विधवाकेँ हम्मीर देखलक। विधवाकेँ देखि हृदए पसीज गेलइ। तखने ओइ विधवाकेँ हम्मीर कहलक- “हम अहाँसँ बिआह करब। भलेँ परिवारक केतबो विरोध हुअए।”

हम्मीरक बात सुनि विधवा खुशीसँ अह्लादित भऽ उठली। हम्मीर बिआहक दिन तँइ कऽ कुटुम-परिवार आ पुरहित-पण्डितकेँ छोड़ि अपन संगी-साथी आ सैनिक सभकेँ संग केने जा बिआह कऽ लेलक।

जखन हम्मीर मेबारक शासक बनल तखन सभ विरोधी सहयोगी बनि गेलइ। पण्डित सभ घोषणा केलक- “विधवा नास्ति अमंगलम्।” ❑

देश सेवाक व्रत

सुभाषचन्द्र बोस बच्चे रहैथ। एक दिन सुतली रातिमे माए लगसँ उठि निच्चाँमे सूतए लगला। बेटाकेँ निच्चाँमे सुतैत देखि माए पुछलखिन जे एना किए करै छी?

सुभाष जवाब देलखिन- “माए, आइ स्कूलमे मास्टर साहैब कहने छेलखिन जे हमर पूर्वज ऋृषि-मुनि जमीनेपर सूतबो करैथ आ कठिन मेहनैतो करै छला। हमहूँ ऋृषि बनब। तँए कठिन जिनगी जीबैक अभ्यास शुरू कऽ रहल छी।”

सुभाषचन्द्रक पिता जगले रहथिन। सभ बात सुनि सुभाषकेँ पिता कहलखिन- “बेटा, जमीनेपर सुतनाइ पर्याप्त नै होइ छइ। एकरा संग-संग ज्ञानोक संचय आ मनुक्खोक सेवा आवश्यक अछि। आइ माइए लग सूति रहू, जखैन नमहर हएब तखैन तीनू काज संगे करब।”

खाली शिक्षकेक बात नै पितोक बातकेँ सुभाष गीरह बान्हि लेलैन। आई.सी.एस. केलाक पछातइ जखन नोकरीक बात सोझहामे एलैन तखन ओ कहलखिन- “हम जिनगीक लक्ष्य तँइ कऽ नेने छी। नोकरी नै करब। मातृभूमिक सेवा करब।” ❑

आत्मबल-1

फ्रान्सक कथा छी। रस्ताकातक पहाड़ीपर बैस एक गोरे अपन जुत्ता मरम्मैत करबैत रहैथ। एकटा ढेरबा बच्चा जुत्ता मरम्मैत करै छल। ओइ बच्चाक बगए-वानिसँ गरीबी झलकैत रहए। मुदा आत्मबल आ लगन मजगूत छेलइ। जुत्ता मरम्मैत करा ओ आदमी

एक रुपैआ पारिश्रमिक दऽ चलए लगल। मुदा माएक विचार ओहिना ओइ बच्चाक हृदैमे जीबै छल। बच्चा अपन उचित पाइ काटि बाँकी घुमबए लगल। ओ महानुभाव -जूत्ता मरम्मैत करौनिहार- सभ पाइ रखि लइले कहलक। तैपर बच्चा बाजल-

"हमर जेतबे उचित मजूरी हएत, ओतबे लेब। माए कहने छैथ जे जेतबे श्रम करी ओतबे मजूरी ली।"

बच्चाक बात सुनि ओ गुम्म भऽ ओइ बच्चाकेँ ऊपरसँ निच्चाँ घरि निङहारए लगल। वएह बच्चा फ्रान्सक राष्ट्रपति दगाल भेला। ❑

स्वाभिमान

सुभाष चन्द्र बोस स्कूलक पढ़ाइ समाप्त कऽ कौलेजमे नाओं लिखौला। ओइ कौलेजमे अंग्रेजीक शिक्षक अंग्रेज छल। नाओं छेलैन सी.एफ. ओटन। ओहुना सत्तामे रहनिहारक बोली जनताक बोलीसँ भिन्न होइ छइ। मुदा ओटनमे आरो बेसी रोब छेलइ। बात-बातमे ओ भारतीय जिनगीक मजाक उड़बैत रहै छला। भारतवासीक जिनगीक प्रति घृणा पैदा करब ओ अपन बहादुरी बुझै छला।

सुभाषबाबूकेँ ओटनक बेवहार पसिन नै होइन। मुदा विद्यार्थी रहने मन मसोसि कऽ रहि जाथि। एक दिन वर्गमे सुभाष बैसल रहैथ। ओटन भारतवासीक प्रति व्यंग्य करए लगला। व्यंग्य सुनि सुभाषक हृदैमे आगि धधकए लगलैन। क्रोधे ओ बेकाबू भऽ गेला। अपन जगहसँ उठि आगू बाढ़ि ओटनक गालमे कसि कऽ दू थापर लगबैत कहलखिन- "भारतवासीमे अखनो स्वाभिमान जीबै छइ। जौं कियो ऐ बातकेँ बिसैर चुनौती देत तँ अहिना मारि खाएत।" ❑

कलंक

गामक कोन लेखा जे पँचकोसीक लोक किसुन भायकेँ इमानदार बुझै छैन। ओना, ओ एकचलिया लोक छैथ मुदा गामो आ परोपट्टोक लोक बहुचलिया। तँए किसुन भायकेँ जेते प्रशंसा होइत ओतबे निन्दो। ओना, ज्ञान-अज्ञानक बीच, सुख-दुखक बीच, धरम-पापक बीच, उत्थान-पतनक बीच, प्रशंसा-निन्दाक बीच तँ पहिनेसँ संघर्ष होइत आएल अछि। मुदा किसुन भाय अनकर प्रशंसा-निन्दाकेँ ओते महत नै दैत जेते अपन सैद्धान्ति जिनगीकेँ। अपन जिनगीक रस्तापर सदिखन सचेत रहै छैथ। कएक दिन एहेन होइत जे किसुन भायक विचारसँ अलग सौंसे गामक लोकक विचार भऽ जाइत। मुदा तेकर एक्को पाइ गम हुनका नहि। अपन रस्तापर ओ असगरो निर्भीकसँ ठाढ़ रहै छला। मुदा विचार बदलैले तैयार नै होइथ।

जिनगीक आरम्भे किसुन भाय खेतीसँ केलैन। खेत तँ बहुत नै छेलैन मुदा जेतबे छेलैन तइमे मेहनैतक बले परिवार चला लैथ। बाढ़ि, रौदी आ आरो-आरो प्राकृतिक आफत तथा उपद्रव जकाँ मानवीय आफतक मुकावला करबाक लूरि सीख नेने छैथ। तँए आन परिवार जकाँ परिवारमे चिन्तो नै होइन। खानदानी खेतीकेँ केतौ बदैल तँ केतौ सुधाइर कऽ करैथ। जइसँ गामोक खेतिहर अचता-पचता कऽ हुनके अनुकरण करै छल। तेसर साल टहलैले पंजाब गेल रहैथ। टहलैले की जइतैथ, खेती देखैले गेल रहैथ। पंजाबक खेती अगुआएल तँए देखब जरूरी बुझि पड़लैन। पंजाबमे झिमनिक खेती देखलखिन। मिथिला क्षेत्रमे जेते-जेते घेड़ा, होइत तेते-तेते झिंगुनी देखलखिन। फड़ो अटुट। झिंगुनी देखि किसुन भायक मनमे गड़ि गेलैन। मने-मन सोचलैन जे जइ पंजाबक माटि गोंग अछि तखन जब एहेन अछि तँ अपन माटि (मिथिलाक माटि) मे केहेन हएत!

तत्काल ओ नै सोचि सकला। मुदा बीआ नेने एला। समैपर बीआ रोपलैन। ओइ चारि कट्ठा झिंगुनिक खेतीसँ किसुन भाय एकटा जरसी गाए वेसाहलैन। अपना-ले ओते बीआ शुरूहेक फड़ रखि लेलैन जे छह कट्ठा खेती ऐगला साल करब। झूर-झार जखन झिंगुनी बेचए लगला तखन गामोक लोक बीआ मंगलकैन। पचता फड़क बीआ लोक सभले रखि देलखिन अगता फड़क समय तँ निकैल गेल छल। ऐ बेर गाममे, झिंगुनिक अनधुन खेती भेल। किसुन भायक उपजा तँ पैछले साल जकाँ भेल मुदा गामक लोकक दब भऽ गेलइ। दब होइक कारण छेलै उपजबैक ढंग आ पचता बीआ। सौंसे गामक लोक हुनका ठक कहि कलंकित करए लगलैन। केतेक गोरे सोझहोमे कहलकैन। ठकक कलंकसँ किसुन भाय सोगाए लगला। जेना केते भारी कुकर्म कऽ नेने होइथ। मनमे सदिखन यएह नचैत रहैन जे एना भेलै किए?

ऐ प्रश्नक उत्तर मनमे जगबे ने करैन। अनासुरती एक दिन हृदैसँ आवाज उठलैन- “किसुन, तोहर दोख एक्कोपाइ नै छह। अनेरे सोगाएल छह। तोहर कलंकक कारण बीआक मुरहन आ दौजी गुणे भेल छह।”

हृदैक आवाज सुनि किसुन भाय पुछलखिन- “अगर हम ऐ बातकेँ मानि अपनाकेँ निरदोस बुझिए लेब तैयो आन केना बुझत?”

“हँ, तोरा ओइ दिन तक कलंकक मोटरी कपारपर राखए पड़तह जइ दिन तक ऊहो सभ मुरहन आ दौजीक भेद बुझि नै जाएत।” ❑

बुलकी

एकटा खेत-बोनिहारक घरवाली नाकक बुलकी-ले रूसि रहल। बुलकी वेसाहैक उपय पतिकेँ नहि। हर जोति कऽ जखन ओ बोनिहार आएल तँ घरवालीकेँ रूसल देखलक। मुँह-तुँह फुलौने ओसारपर बैसलि। धिया-पुता खाइले कनैत। बोनिहार अपन तामसकेँ घोंटि घरवाली लग जा कऽ कहलकै- "किए रूसल छी? भूखे बच्चो सभ लहालोट होइए। आबो भानस करू।"

अपन रोष झाड़ैत पत्नी बाजल- "जाबे बुलकी नै आनि देब ताबे ने खाएब आ ने किछु करब।"

खुशामद करैत पति कहलकै-

"आइए साँझमे हाटसँ कीनि कऽ आनि देब। अखैन भानस करू गऽ।"

पतिक बात पत्नी मानि गेल। बोनिहार कर्ज रुपैआ अनैले विदा भेल। दस रुपैआ अना दर सूदपर आनि घरवालीक हाथमे दऽ देलक। भानस भेलइ। सभ खेलक। बेरू पहर दुनू परानी हाटसँ बुलकी कीनि अनलक।

दोसर साँझमे बुलकी पहिर सुगिया-दादीकेँ गोड़ लगैले बोनिहारिन गेल। सुगिया दादी ओसारपर बैस पोता-पोतीकेँ नल-दमयन्तीक खिस्सा सुनबैत रहैथ। दादीकेँ गोड़ लागि बोनिहारिन बुलकी देखैले कहलकैन। बुलकी देखि दादी कहए लगलखिन-

"कनियाँ। सोन-चानी गरीब-गुरबा घरमे नै रहै छइ। जइ घरमे पेटेक भूख नै मेटाइ छै ओइ घरमे सिंगारक चीज केना रहतै। अनेरे एहेन सख करै छह। कहुना-कहुना बच्चा सभकेँ पालह जे कुल-खानदान जीबैत रहतह।"

दादीक बात सुनि बोनिहारिन आँगन आबि पतिकेँ कहलक-

“गलती भेल जे हम रूसि कऽ अहाँसँ बुलकी किनेलौं। अखैन रखि दइ छिऐ, काल्हि घुमा कऽ कर्जाबलाक रुपैआ दऽ एबै।” ❑

भद्रपुरुष

एक दिन एकटा वृद्धा कोठीसँ निकलैत एकटा भद्र-पुरुषकेँ कहलखिन-

“अहाँ, ऐ कोठीक मालिकसँ कनी भेँट करा दिअ?”

ओ भद्र-पुरुष पुछलखिन-

“कोन काज अछि कहू?”

वृद्धा बजली-

“हमरा बेटीक बिआह छी। तीन साए रुपैआक खगता अछि। अगर रुपैआ नै हएत तँ बिआह रूकि जेतइ।”

मुड़ी डोलबैत कहलकैन-

“चलू।”

भद्र-पुरुष अपन कारमे वृद्धाकेँ बैसा लऽ गेलखिन। थोड़ेक दूर गेलापर कारसँ उतैर सामनेक मकानमे प्रवेश केलैन। वृद्धोकेँ संगे नेने गेलखिन। भीतर गेलापर वृद्धाकेँ ओसारपर बैसा अपने कोठरीमे गेला। कोठरीमे जा पाँच साए रुपैआ नोकरकेँ दऽ ओइ वृद्धाकेँ दऽ अबैले कहलखिन। पाँचो सौ रुपैआ नेने आबि नोकर वृद्धाकेँ दैत कहलक- “दाइ, पाँच सौ रुपैआ अछि। तीन सएमे बेटीक बिआह सम्हारि लेब आ दू सएसँ कोनो धंधा शुरू कऽ लेब। जइसँ आगूक जिनगी आसानीसँ चलत।”

रुपैआ हाथमे लऽ वृद्धा ओइ नोकरक मुँह दिस देखैत कहलक- “भाय, कोठीक मालिक कहाँ भेटलैथ?”

नोकर- “जिनका संग अहाँ कारमे एलौं वएह ऐ कोठीक मालिक- बाबू चितरंजन दास छैथ।”

जइ आदमी-ले सौंसे समाज परिवार होइत, जे अनको दुखकेँ अपन दुख बुझि जीबैक प्रेरणा दैत वएह तँ भद्र-पुरुष होइत। ❑

झूठ नै बाजब

बंगालक पूर्व मुख्यमंत्री डॉक्टर विधानचन्द्र राय बच्चेसँ मानवीय गुणक अंगीकार करैत रहैथ। जे गुण हुनक पितासँ भेटैत रहैन। सत्यक प्रति निष्ठा आ साहस दिनानुदिन बढ़ैत गेलैन। जखन विधानचन्द्र डॉक्टरी पढ़ैत रहैथ तखने अध्यापक मोटर एक्सिडैंटक सम्बन्धमे झूठ गबाही दइले कहलकैन। अध्यापकक इच्छा रहैन जे विधानचन्द्र छात्र छी तँए जे कहबै से करत। मुदा झूठ नै बाजैक संकल्प विधानचन्द्र केने रहैथ। अध्यापकक कहलापर विधानचन्द झूठ बजैसँ इनकार करैत कहलकैन-

“हम जे देखलिऐ सएह कहबै। मुदा झूठ नै बजब।”

जेकर परिणाम विधानचन्द्रकेँ भोगए पड़लैन। परीक्षामे फेल कऽ देल गेला। मुदा फेल होइसँ ओ ओते दुखी नै भेला जेते खुशी अपन संकल्प निमाहैसँ भेला। ❑

आर्दश माए

आर्मेनियाक सर्वोच्च सेनापति सीरोज ग्रिथक बेकतीत्व हुनक माइयेक बनौल छेलैन। जखन ग्रिथ बच्चे रहैथ तखने पिता मरि गेलैन। विधवा नार्विन ग्रिड कपड़ा सीबि-सीबि गुजरो करैथ आ बेटोकेँ पढ़बैथ। गरीब परिवारक ग्रिथ अछि ई बात स्कूलोक शिक्षक सभ जनैत। फीस माफ होइले ग्रिथ आवेदन देलक। फीस माफो भऽ गेलइ। फीस माफक समाचार ग्रिथ माएकेँ कहलक। माए बिगैड़ कऽ बाजल- "हम मेहनैत कए कऽ गुजर करै छी, तखैन फीस किए ने देबै। हम मेहनती छी नै कि गरीब। हमर अपन स्वाभिमान कहैए जे गरीब नै छी।"

स्वाभिमानी माए अपन बच्चाक एहेन चरित्र बनौलक जे देशक सर्वोच्च सेनापति भेल। ❑

नारी सम्मान

नेपोलियन बोनापार्ट अपन टुइ-लेरिस नामक महलमे स्नान-घरक मरम्मैत करबैले सचिवकेँ कहलखिन। सचिव महलक अधिकारीकेँ फ्रान्सक कुशल कारीगरकेँ बजा मरम्मैत करैले कहलकै। कारीगर आबि मरम्मैत करए लगलै। जखन मरम्मैत भऽ गेलै तखन नारीक नग्न चित्र सभ सेहो बना देलकै।

नेपोलियन नहाइले गेला। नहाइसँ पहिने चित्र सभ देखलखिन। चित्र देखि नेपोलियन चोट्टे घुमि कऽ आबि अधिकारीकेँ बजौलखिन। अधिकारी आएल। हृदैक क्रोधकेँ दबैत नेपोलियन अधिकारीकेँ कहलखिन- "नारीकेँ प्रतिष्ठा देब सीखू। स्नान घरमे जे

नारीक नग्न चित्र बनबौने छी ओ निन्दनीय अछि। जइ देशमे नारीकेँ विलासक साधन बनौल जाएत ओइ देशक विनाश निश्चित हेतइ।"

नेपोलियनक आदेश सुनि अधिकारी कारीगरकेँ बजा सभ चित्र मेटिबौलक। ❑

अनुशासन

अंग्रेजी शासनक खिलाप आन्दोलन उग्र रूप धेने जा रहल छल। आन्दोलन चलबैले क्रान्तिकारी दलकेँ डकैतियो करए पड़इ। एक दिन राम प्रसाद विस्मिलक नेतृत्त्वक दल एकटा गाममे डकैती करैले पहुँचल। एकटा परिवारमे सभ घुसल।

जेतए जे किछु दलकेँ भेटलै लऽ कऽ निकलल। सभ एकत्रित हुअ लगल आकि अपन साथीक गिनती करए लगल। गिनतीमे एक गोरे कमैत रहए। घरेमे चन्द्रशेखर एकटा बुढ़ियाक कैदमे पड़ल छल। ओ बुढ़िया अपन जेबर आ नगदीबला बक्सापर बैस चन्द्रशेखरक गट्टा पकड़ने छेली। चन्द्रशेखर चुपचाप आगूमे ठाढ़। ने बाँहि झमारैत आ ने किछु बजैत।

सभ कियो घर पसि देखलक जे चन्द्रशेखर बुढ़ियाक पालामे पड़ल छैथ।

क्रान्तिकारी पार्टीक बीच अनुशासन छेलै जे ने महिलापर हाथ उठौल जाएत आ ने ओकर जेबर-ले जाएत। आजाद बुढ़ियाकेँ बुझबैत कहथिन- "माता जी, अहाँ बक्सापर सँ हटि जाउ। हम खाली नगद लेब। जेबर नै लेब।"

आजादक विनम्र बातसँ बुढ़ियाक साहस बढ़ि गेल छेलइ। जखन चन्द्रशेखरसँ संगी सभ पुछलकैन तखन ओ सभ बात

कहलखिन। आजादक बात सुनि सभ ठाहाका दऽ हँसए लगल। गट्टा छोड़बैले एक गोरे बढ़ए लगला आकि चन्द्रशेखर कहलखिन-

"माताजीक सभ सम्पैत घुमा दिअनु।"

सम्पैतक नाओं सुनि भावुक बुढ़िया चन्द्रशेखरक गट्टा छोड़ि देलकैन। तखन ओ घरसँ संगी सबहक संगे निकलला। ❑

सादा जिनगी

सन 1949 इस्वीक बात छी। ओइ समय स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री उत्तर प्रदेश सरकारमे गृहमंत्री रहैथ। एक दिन लोक निर्माण विभागक किछु कर्मचारी हुनका डेरामे कूलर लगबैले आएल। शास्त्रीजी डेरामे नै रहैथ। परिवारक बच्चो आ पत्नियोकेँ कूलर देखि खुशी भेलैन।

साँझमे लालबहादुर शास्त्री डेरा एला। डेरा ऐबते देखलखिन जे कूलर लगबैले लोक निर्माणक कर्मचारी सभ छैथ। कूलरसँ शास्त्री जीकेँ खुशी नै भेलैन। ओ कूलर लगबैसँ मना कऽ देलखिन। परिवारक सभ स्तब्ध भऽ गेल। पत्नी कहलकैन-

"जे सुविधा सरकार दऽ रहल अछि ओकरा मना किए करै छी?"

गम्भीर स्वरमे शास्त्रीजी उत्तर देलखिन- "ई जरूरी नै अछि जे हम सभ दिन मंत्रीए रहब। कूलरसँ सबहक आदैत बिगैड़ जाएत। परिवारमे बेटियो अछि जेकर बिआह हेतइ। दोसर घर जाएत। अगर जौं ओकरा ओइ परिवारमे एहेन सुविधा नै होइ तखैन तँ कष्ट हेतइ।" ❑

विचारक उदय

गाँधीजी बच्चे रहैथ। हुनक बड़का भाय हुनका मारलकैन। गाँधीजी कनैत माए लग आबि कहलखिन। गाँधीक बात सुनि माए कहलखिन- "तहूँ किए ने मारलह?"

माएक बात सुनि गाँधीजी कानब छोड़ि कहलखिन- "जे गलती भैया केलैन सएह करैले हमरो कहै छी। आकि हुनका मनाही करबैन।"

बेटाक बात सुनि माए कहलखिन- "बौआ, हम तोहर परीक्षा लेलियह। अगर तोरामे एहेन विचारक विकास हेतह तँ आगू चलि कऽ सौंसे दुनियाँक प्रति सिनेह आ प्रेम पौबह।"

बच्चाक समुचित विकासक आरम्भ परिवारेसँ शुरू होइत अछि। ❑

पुष्ट इकाइसँ समर्थराष्ट बनैत

फ्रान्स हालैंडपर आक्रमण कऽ देलक। फ्रन्स नमहर देशो आ सम्पन्नो। मुदा होलैंड छोटो आ पछुआएलो। मुदा फ्रान्स हालैंडसँ जीत नै पबैत। ई देख, फ्रन्सक राजा लुइ-चौदहम बिगैड़ मंत्री कालवर्टकेँ बजा पुछलखिन- "हमर देश एते पैघ आ सामरिक सम्पन्न रहितो पछड़ि किए रहल अछि?"

राजाक बात सुनि कालवर्ट नम्र भऽ उत्तर देलकैन- "महत्ता आ समर्थता। कोनो देशक विस्तार आ वैभवपर निर्भर नै करैत। ओ निर्भर करैए ओइ देशक देश-भक्त आ बहादुर नागरिकपर। जे

अपना देशक अपेक्षा हालैंडमे मजगूत अछि।”

मंत्रीक बात सुनि राजा अपन सेना आपस बजा लेलक। हालैंडमे बच्चा-बच्चाकेँ राष्ट्रक सशक्त इकाईक रूपमे ढालल जाइत। जइसँ ओ शक्तिशाली बनि ठाढ़ अछि। ❑

डर नै करी

उगैत सुरूज जकाँ जिनगी अपन दिशामे अपना ढंगसँ बढ़ैत जा रहल छल। एक विरामपर जा जिनगी पाछू मुहेँ घुमि कऽ तकलक तँ चौंक गेल। चण्डालिनी सन कारी आ कुरूप छाया पाछू-पाछू अबै छल। छायाकेँ देखि जिनगी ललकारि कऽ पुछलक-

“अभागिनी, तोँ के छेँ। हमरा पाछू-पाछू किए अबै छेँ? तोहर कारी आ कुरूप काया देखि हमरा डर होइए। जो भाग। हमरासँ हटि कऽ रह।”

छाया छिप गेल। मुदा जिनगी घिंघयाइत बढ़ल। पुनः छाया आबि कहलकै-

“बहिन, हम तोहर सहचरी छियौ। तोरे संग हमहूँ चलि रहल छी। आ अन्तमे दुनू गोरे संगे रहब। तँए डरैक कोनो बात नहि। तोँ हमरा नै चिन्है छेँ, हमरे नाओं मृत्यु छी।”

मृत्युकेँ पाछू लगल अबैत देखि जिनगी डरि गेल। सकपका कऽ गिर पड़ल। ❑

आसिरवाद उलैट गेल

एक गोरेकेँ दूटा बेटा छेलइ। दुनूक बीच तीन बर्खक जेठाइ-छोटाइ छेलइ। गामेक स्कूलमे दुनू भाँइ पढ़बो केलक। अपर प्राइमरी स्कूल रहने दुनू-भाँइ पँचमे तक पढ़लक। बाप-माए दुनू बेटाक बिआह कऽ देलक। जाबे धरि छोटका बेटाक दुरागमन नै भेल छेलै ताबे धरि तँ परिवार शान्त रहलै, मुदा छोटकाक दुरागमन होइते परिवारमे खटपट शुरू हुअ लगलै। एक्को दिन एहेन नै होइ जइ दिन दुनूक बीच झगड़ा नै होइत। सभ दिन दुनू दियादनीकेँ झगड़ा करैत देखि बापकेँ बरदास नै भेलइ। दुनू बेटाकेँ बजा बाप कहलकै- “बौआ, सभ दिन झगड़ा केने घरसँ लक्ष्मी पड़ा जेथुन तँए अखैन हमहूँ जीविते छी दुनू भाँइ भीन भऽ जाह। जे चीज छह दुनूकेँ बाँटि दइ छिअ।”

जेठका बेटाकेँ नगद आ जेवर-जात हिस्सा भेलै आ छोटकाकेँ दू बीघा खेत आ बड़द भेलइ। दुनू भाँइ खुशीसँ भीन भऽ गेल। नगद आ गहना-गुरिया पाबि जेठका खूब ऐश-मौज करए लगल। दुनू परानी छोटका दिन-राति मेहनैत करए। गामक लोक जेठकाकेँ करमगर आ छोटकाकेँ करमघट्टू कहए लगलै।

समय बितए लगलै। दुइए साल पछातइ पाशा पलटए लगलै। जेठका बेटाक रुपैओ आ गहनो सठि गेलै मुदा छोटकाक उन्नैत हुअ लगलै। नगद आ जेबर सठने जेठका चोरि करए लगल। एक दिन चोरि करए गेल तँ घरेमे पकड़ा गेल। जइसँ मारियो खूब खेलक आ जहलो गेल। गामक लोकक आसिरवाद उनटए लगल। जही मुहसँ जेठकाकेँ करमगर आ छोटकाकेँ करमघट्टू कहै छेलै ओही मुहसँ लोक जेठकाकेँ करमघट्टू आ छोटकाकेँ करमगर कहए लगलै। ❑

रत्न गमेवाक दुख

एकटा गोंताखोर कएक दिनसँ असफल होइत आएल छल। भरि-भरि दिन परिश्रम करै छल मुदा किछु हाथ नै लगइ। जइसँ परिवार चलब कठिन भऽ गेलइ। आन काज करैक लूरि रहबे ने करै जे करैत। भोरे घरसँ निकैल नदीक महारपर जा बैस रत्नक आशमे टक-टक पानि दिस तकैत रहै छल।

निराश भऽ गोंताखोर मनमे विचारलक जे आइ ऐ काजक आखिरी दिन छी। जौं आइ किछु नै भेटत तँ काल्हिसँ छोड़ि देब। जाल लऽ नदीक महारपर बैस, मने-मन भगवानसँ कहए लगलैन-

“अगर अहाँ मदैत नै करब तँ हम जीब केना?”

भगवानसँ प्रार्थना कऽ गोंताखोर पानिमे पसि डुमकी लगौलक। एकटा पोटरी भेटलै। पोटरी नेने ऊपर भेल। किनछैरमे बैस पोटरी खोललक। छोट-छोट पाथर ओइ पोटरीमे। पाथर देखि गोंताखोर निराश भऽ गेल। मनमे क्रोधो उठलै। एकाएकी ओइ पाथरकेँ पानिमे फेकए लगल। पाथरो फेकैत आ मने-मन अपना भाग्योकेँ कोसैत। फेकैत-फेकैत एकटा पाथर बँचलै।

ओइ पाथरकेँ जखन फेकए लगल आकि ओइपर नजैर पड़लै। पाथर चमकैत रहए। ओ नीलम पाथर रहए। गोंताखोर चीन्हि गेल। मुदा ताघरि तँ सभटा फेक देने छल। अपसोच करए लगल मुदा सभ तँ पानिमे चलि गेल छेलै तँए अपसोच कैये कऽ की हेतइ। अपसोच करैत देखि भगवान चिड़ै बनि आबि कहए लगलखिन-

“ऐ गोंताखोर, खाली तोँहींटा एहेन अभागल नै छेँ, ढेरो अछि

जे जीवन रूपी रत्न-राशिकेँ अहिना गमबैए। जो, जएह बँचल छौ ओकरे बेचि कऽ गुजर कर गऽ। मुदा ज्ञान बढ़ा। जइसँ धनो पबैक लूरि भऽ जेतौ आ मनुक्खो बनि जीमे।" ❑

निशाँ

एकटा वेपारी अफीम खाइ छल। ओ अपना नोकरोकेँ अफीमक चहैट लगा देलक। एक दिन दुनू गोरे बाजार जाइक विचार केलक। दोकानमे जे समान सभ सठल रहै ओकर पुरजी बनौलक। रुपैआ गनलक। दुरस्त बाजार रहने दुनू गोरे घरेपर भरि पेट खा लेलक। बाजार विदा भेल। किछु दूर गेलापर दुनू गोरे खेनाइ बिसैर गेल। रस्तामे होटल छेलै, दुनू गोरे घोड़ासँ उतैर खाइले गेल। घोड़ाकेँ छानि कऽ चरैले छोड़ि देलक। दोकानमे दुनू गोरे खा सोझे बजार विदा भेल। बजारक कात जखन पहुँचल तँ वेपारीकेँ मोन पड़लै जे घोड़ा ओतै छुटि गेल। मनहूस भऽ दुनू गोरे माथपर हाथ दऽ बैस रहल। थोड़ेकाल गुनधुन करैत घोड़ा आनए दुनू गोरे घुमि गेल। घुमि कऽ दोकान लग आएल तँ घोड़ाकेँ चरैत देखलक। लगाम लगा दुनू गोरे चढ़ि बजार दिस विदा भेल। बाजार पहुँच दोकानमे सौदाबारी वेसाहलक। समान समेट, मोटरी बान्हि जखन रुपैआ देमए लगलै तँ रुपैआक झोरे नहि। दुनू गोरे मोन पाड़ए लगल जे रुपैआक झोरा की भेल? किछु काल पछातइ मोन पड़लै जे झोरा तँ ओतै छुटि गेल जेतए बैसल छेलौं। दुनू गोरे बपहारि काटए लगल। एकटा ग्रामीण महिला समान वेसाहै छेली, दुनूकेँ कनैत देखि वेपारीकेँ कहलक-

"ई गति खाली अहीं दुनू गोरेकेँ मात्र नै बल्कि सभ नसेरीकेँ होइ छइ।"❑

सामना

वनमे अनेको सुगर परिवार छल आ एकटा सिंह सेहो रहै छेलइ। जखन कखनो सिंहकेँ भूख लगै आकि टहैल सुगरकेँ पकैड़ खा जाइत। दोसर-तेसर सुगर सिंहकेँ देखिते पड़ा जाइत। एक दिन सभ सुगर मिलि बैसार केलक। बैसारमे तँइ केलक-

"जखैन एका-एकी मरिये रहल छी तखैन लड़ि कऽ किए ने मरब।"

ऐ विचारसँ सभ सुगरमे साहस जगलै। सभ मिलि लड़ैले विदा भेल। सभ हल्लो करै आ चिकैर-चिकैर सिंहकेँ गरियेबो करइ। जेते जोरगर सुगर छल ओ आगू-आगू आ अबलाहा सभ पाछू-पाछू विदा भेल। सिंहकेँ देखिते सभ जोरसँ हल्ला करैत दौगल। आइ धरि सिंहकेँ एहेन मुकाबलासँ भेँट नै भेल रहए। सिंह डरा गेल। अपन जान बँचबैले पड़ाएल। सिंहकेँ पड़ाइत देखि सुगर पाछूसँ खिहारलक। सिंह वनसँ बाहर भऽ गेलइ। वन खाली भऽ गेलइ। सभ सुगर निचेनसँ रहए लगल। ❑

शिष्टाचार

एकटा इनारपर चारिटा पनि-भरनी पानि भरैले आएल छेली। एक्केटा डोल छेलै तँए एक गोरे पानि भरै छेली आ तीन गोरे गप-सप्प करै छेली। सभ अपन-अपन बेटाक बड़ाइ करैत। पहिल औरत बाजल- "हमर बेटाक आवाज एते मधुर अछि जे रजो-रजवारमे ओकरा सम्मान भेटतै।"

दोसर कहलकै- "हमरा बेटाक शरीरमे एते तागैत अछि जे

नमहर भेलापर बड़का-बड़का पहलमानकेँ पटकत।”

तेसर बाजल- “हमर बेटा एहेन तेजगर अछि जे सभ साल इस्कूलमे फस्ट करैए।”

मुड़ी निच्चाँ केने चारिम बाजल- “आने बच्चा जकाँ हमर बेटा साधारण अछि।”

पनिभरनी सभ इनारपर गप-सप्प करिते छल आकि स्कूलमे छुट्टी भेलइ। अबैत-अबैत चारूक बेटा इनार लग देने गुजरैत रहए। एकटा गीत गबैत दोसर कुदैत-फनैत, तेसर किताब खोलि किछु पढ़ैत आ चारिम पाछू-पाछू चुपचाप अबै छल। इनार लग ऐबते चारिम अपन माएक भरल घैल माथपर लऽ लेलक आ माएक हाथमे अपन बस्ता दऽ देलक। आगू-पाछू दुनू माए-बेटा आँगन विदा भेल।

इनारे लग बैसल एकटा बुढ़िया सभ बात सुनै छेली। ओ चारू पनिभरनीकेँ रोकि, बजली- “ई चारिम लड़का जे अछि ओ सभसँ नीक अछि। एकर शिष्टाचार सभसँ नीक छइ।” ❑

ठक

एकटा ठक लोमड़ी गाछक निच्चाँमे छल। गाछपर बैसल मुर्गाकेँ पट्टी दऽ रहल छेलै जे भाय तूँ नै सुनलहक जे सभ पशु-पक्षी आ जानवरक बीच सभा भेल। जइमे सर्वसम्मतिसँ निर्णय भेलै जे अपनामे कियो केकरो अधला नै करत, तोँ किए गाछपर छह निच्चाँ आबह आ दुनू गोरे अपन जिनगीक दुख-सुखक गप-सप्प करह। लोमड़ीक चलाकी मुर्गा बुझै छल तँए गाछेपर सँ हूँह-कारी दैत रहै मुदा निच्चाँ नै उतरै। ताबे दूटा आवारा कुकुरकेँ दौगल अबैत लोमड़ी देखलक। कुकुरकेँ देखिते पड़ाएल। लोमड़ीकेँ पड़ाइत देखि गाछेपर

सँ मुर्गा कहलकै- “भाय, भगै किए छह? जखैन सबहक बीच समझौता भऽ गेलै तखैन तोरा किए डर होइ छह?”

लोमड़ी भगबो करैत आ उत्तरो दइत- “भऽ सकैए जे तोरे जकाँ ओकरो नै बुझल होइ।” ❑

पत्नीक अधिकार

गृहस्ताश्रम ओहन आश्रम होइत जइमे आत्मसंयम, पारस्परिक सद्भाव आ सद्प्रवृत्तिक अभ्यास आसानीसँ कएल जा सकैए। एक दिन हजरत उमरसँ भेँट करए एक आदमी आएल। थोड़े काल बैसल तँ उमरक पत्नीकेँ जोर-जोरसँ उमरपर बजैत सुनलक। उमर चुपचाप सुनैत रहए। किछु उत्तर नै दइत। ओइ आदमीकेँ बड़ छगुन्ता लगलै जे पत्नी यत्र-कुत्र कहि रहल छैन मुदा किछु उत्तर उमर नै दइ छथिन। ओइ आदमीकेँ नै रहल गेलइ। ओ उमरकेँ पुछलकैन-

“अपनेक पत्नी यत्र-कुत्र कहि रहल छैथ मुदा अहाँ मुड़ियो उठा कऽ ओमहर नै तकै छी?”

गम्भीर स्वरमे उमर जवाब देलखिन-

“भाय, ओ हमर मैल-कुचैल कपड़ा खिंचै छैथ, खेनाइ बनबै छैथ, सेवा करै छैथ आ सभसँ पैघ बात जे हमरा पाप करैसँ सेहो बँचबै छैथ। तखैन जौं ओ बिगैड़ कऽ दू-चारिटा बाते कहै छैथ तँ की हुनका एतबो अधिकार नै छैन।” ❑

शिनीची सिनेह

तीन दिनसँ चूल्हि नै पजरने, दुनू परानी सियान तँ बरदास केने रहैथ मुदा बच्चा सभ भूखे ओसारपर ओंघरनियोँ दैत आ हुचैक-हुचैक कनबो करैत। अनेको परियास सियान केलक मुदा खेनाइक कोनो गर नै लगलै। अन्तमे निराश भऽ सियान अपन जिनगीकेँ बेकार बुझि, आत्महत्या करैक विचार मनमे ठानि लेलक।

आत्महत्या करैले विदा भेल। निराश मन दुखक अथाह सागरमे डुमए लगलै आकि पाछूसँ एक आदमी कान्हपर हाथ दऽ कहलकै-“मित्र, ऐ अमूल्य जिनगीकेँ गमौलासँ की हएत? हम मानै छी जे अहाँक विपैत अहाँकेँ आत्महत्या करैले बेबस कऽ देलक। मुदा की अहाँ ऐ विपैतकेँ हँसैत-हँसैत पाछू नै धकेल सकै छी?”

आत्मीयताक शब्द सुनि सियान बोम फाँड़ि कानए लगल। कनबो करैत आ अपन सभ मजबूरी ओइ आदमीकेँ कहबो करैत। मजबूरी सुनि शिनीचियोकेँ आँखिमे नोर आबि गेलैन। तत्काल ओ सियानकेँ भोजनक जोगार करैले किछु रुपैआ दऽ देलखिन। सियान घुमि कऽ घर आबि भोजनक बेवस्था केलक। वएह शिनीची जापानक प्रसिद्ध कवि छैथ।

अहीठाम ओ संकल्प केलैन जे अप्पन कमाइक तीन-चौथाइ भाग ओहन बेकतीक सेवामे लगाएब जे कष्टमय जिनगीमे पड़ल अछि। घरपर आबि शिनीची एकटा गुप्तदानक पेटी बना मुख्य चौराहापर रखि देलैन। ओइ पेटीक ऊपरमे लिखि देलखिन-

“जइ सज्जनकेँ सचमुच पाइक खगता होनि ओ ऐ पेटीसँ अपना काज जोकर निकालि लैथ।”

सभ दिन साँझकेँ शिनीची आबि पेटी खोलि देखि लैथ। जौं पेटी खाली रहैत तँ दऽ दैथ। ❑

सिखबैक उपय

एकटा गरुड़ छल। ओकरा एकटा बच्चा छेलइ। बच्चाकेँ पीठपर लऽ गरुड़ एकठामसँ दोसर ठाम जा कऽ चरौर करै छल। साँझू पहरकेँ बच्चाकेँ पीठपर लदने घर अबै छल। उड़ै जोकर बच्चा भऽ गेल छेलै मुदा पीठपर बैसैक जे आदैत लागि गेल रहै से छोड़बे ने करैत। कएक दिन गरुड़ बुझौलकै मुदा ओ अपन बानि छोड़बे ने करैत। मने-मन गरुड़ सोचलक जे सोझे कहनेसँ नै मानत तँए रस्ता धड़बए पड़त।

दोसर दिन बच्चाकेँ पीठपर नेने गरुड़ उड़ैत विदा भेल। जखन खूब ऊपर गेल तखन आस्तेसँ अपन पाँखि समेट बच्चाकेँ छोड़ि देलक। बच्चा निच्चाँ गिरए लगल। अपनाकेँ निच्चाँ गिरैत देखि बच्चा पाँखि फड़फड़बए लगल। आस्तेसँ निच्चाँ उतरल। आँखि उठा-उठा गरुड़ देखबो करैत आ बँचबैक उपैयो सोचैत। निच्चाँमे आबि बच्चा पाँखि चलबैक परियास करए लगल, जइसँ उड़ब सीख लेलक। साँझुपहर जखन सभ एकठाम भेल तखन बच्चा बापक शिकाइत करैत माएकेँ कहलक- “माए, आइ जौं पाँखि नै फड़फड़ेने रहितौं तँ बाबू बिच्चे रस्तामे मारि दइतए।”

माए बुझि गेली। हँसैत बेटाकेँ कहलखिन- “बौआ, जे अपनेसँ नै सिखत, स्वावलंवी बनत, ओकरा सिखबैक एकटा ईहो रस्ता छिऐ।” ❑

कर्तव्यपरायन सुगा

एकटा जमीन्दार रहैथ। हुनका बहुत खेत रहैन। धानक खेती केने रहैथ। खेतक चारू कोणपर रखबार खोपड़ी बना ओगरबाहि करै छल। रखबारकेँ रहितो सुगा सभ उड़ैत आबि, धानो खाइत आ सीस काटि-काटि लैयो जाइत। एकटा एहेन सुगा छल जे अपने खेतेमे खा लैत आ उड़ै काल छह गोट सीस काटि लोलमे लऽ उड़ि जाइत। एक दिन रखबार ओकरा जालमे फँसा लेलक। सुगाकेँ नेने जमीन्दार लग रखबार लऽ गेल।

सुगाकेँ देखि जमीन्दार पुछलकै- "धानक सीस काटि केतए जमा करै छेँ?"

निर्भीक भऽ सुगा उत्तर देलकैन- "दूटा सीस कर्ज सठबैले, दूटा कर्ज लगबैले आ दूटा परमार्थ-ले लऽ जाइ छी। कुल छह-टा सीस, अपन पेट भरलापर लऽ उड़ि जाइ छी।"

अचम्भित होइत जमीन्दार पुछलकै-

"की मतलब?"

सुगा बाजल- "बृद्ध माए-बाप छैथ जिनका उड़ि नै होइ छैन, तिनका-ले दूटा सीस। दूटा बच्चा अछि तेकरा-ले दूटा सीस आ पड़ोसीया दुखित अछि दूटा सीस हुनका-ले।"

सुगाक बात धियानसँ सुनि जमीन्दार गुम्म भऽ गेला। किछु समय मने-मन विचारि रखबारकेँ कहलखिन-

"ऐ सुगाकेँ चीन्हि लहक। जौं कहियो धोखासँ पकड़ाइयो जा तँ छोड़ि दिहक।" ❑

तस्वीर

एकटा चित्रकार तीनटा तस्वीर बनौलक। एकटा सोचमे, दोसर हाथ मलैत आ तेसर माथ धुनैत। एक गोरे तीनू तस्वीरकेँ देखि चित्रकारसँ पुछलक- “तीनू तीन रंगक बुझि पड़ैए।”

उत्तर दैत चित्रकार कहलक- “ई तीनू एक्के आदमीक तीन अवस्थाक छी।”

“कोन-कोन अवस्थाक छी।”

“पहिल बिआहसँ पहुलका छी। जखैन युवक कल्पनामे उड़ैए। सोचैए जे केते सुन्नर कनियाँ भेटत। दोसर बिआह पछातइक छी। जखैन पारिवारिक जिनगी शुरू होइ छै आ जिम्मेवारी बढ़ै छइ। जिम्मेवारी बढ़लाक बादे समस्यासँ टकराए पड़ै छइ। तखैन बुझि पड़ै छै जे कोन जंजालमे पड़ि गेलौं तँए हाथ मलैए। तेसर तस्वीर ओ छी जखैन स्त्रीक वियोग आकि विरोध होइ छइ। तखैन माथ घुनैत सोचए पड़ै छै जे हमर कपार फूटि गेल। अपने किरदानीसँ अपन, परिवारक आ खानदनक नाक कटा देलिऐ। जौं हमहूँ सही रस्तापर आबि चलैत रहितौं तँ एहेन दिन नै देखए पड़ैत।” ❑

मितक खगता

एकटा पैघ पोखैर छल। ओकर उत्तरबरिया महारमे मोर रहै छल आ दछिनबरियामे मोरनी। दुनू असगरे-असगरे रहैत रहए। एक दिन मोर मोरनी ऐठाम जा बिआहक प्रस्ताव रखलक। मोरक प्रस्ताव सुनि मोरनी पुछलकै- “अहाँकेँ कएटा दोस अछि?”

नजैर दौगबैत मोर उत्तर देलकै- “एक्कोटा नहि।”

मोरक जवाब सुनि मोरनी बिआह करैसँ इनकार कऽ देलक। तखन मोरक मनमे एलै जे सुखसँ जीबैले दोस जरूरी अछि। ओतएसँ विदा भऽ मोर पुबरिया महार होइत चलल। पुबरिया महारमे सिंह रहै छल। आ पछबरियामे काछु। सिंह बैसल-बैसल झपकी लइ छल। मोर सिंहक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मोरकेँ बजैक साहसे ने होइ। बड़ी खान धरि मोरकेँ ठाढ़ भेल देखि सिंह पुछलकै-

“की बात?”

निराश मोने मोर कहलकै-

“भैया, हम अहाँसँ दोस्ती करए एलौं हेन। किएक तँ जिनगी-ले मितक खगता होइ छइ।”

सिंह मानि दोस्ती कऽ लेलक। सिंहसँ दोस्ती भेला पछातइ मोर पछबरिया महार आबि काछुसँ सेहो दोस्ती केलक। पछबरिये महारक गाछपर टिटही सेहो रहै छल। जे अपन काज इमानदारीसँ करै छल। जखन कखनो शिकारीक आगमन होइ आकि कोनो आफत अबैबला रहै तँ टिटही सभकेँ जानकारी दऽ दइत।

दोस्ती केलाक पछातइ मोर मोरनी लग आबि सभ बात कहलक। मोरनी बिआह करैले राजी भऽ गेल। दुनूक बीच बिआह भऽ गेलइ। दुनू एक्के ठाम रहए लगल।

एक दिन एकटा शिकारी शिकारक भाँजमे पहुँचल। भरि दिन शिकारी शिकारक पाछू हरान भेल रहए मुदा केतौ किछु नै भेलइ। थाकिओ गेल रहए आ भूखो लागि गेल रहइ। गाछक निच्चाँमे सुसताए लगल। गाछक निच्चाँमे चिड़ैक चट देखि गाछपर चढ़ि चिड़ैकेँ पकड़ैक विचार केलक। गाछेपर सँ मोर-मोरनी सेहो शिकारीकेँ देखै छल। शिकारीकेँ गाछपर चढ़ैत देखि दुनू परानी -

मोर-मोरनी- सोचए लगल जे आइ दुनूक जान जाएत। मोर उड़ैत टिटही लग गेल। टिटही जोर-जोरसँ बोली देमए लगलै। सिंह बुझि गेल। शिकार पकड़ैले सिंह विदा भेल। ताबे कछुआ सेहो पानिसँ निकैल किनछैरमे आबि गेलइ। सिंहकेँ देखि शिकारी भगैक ओरियान करए लगल आकि काछुपर नजैर पड़लै। काछुकेँ पकड़ए शिकारी किनछैरमे गेल आकि काछु ससैर पानिमे चलि गेल। शिकारी पानिमे पैइसए लगल आकि गादि -दलदल- मे लसकि गेल। ने आगू बढ़ि होइ आ ने पाछू भऽ होइ। ताबे सिंह आबि शिकारीकेँ पकैड़ लेलक। शिकारीकेँ पकड़ल देखि मोरनी मोरकेँ कहलक-

"बिआह करैसँ पहिने जे मितक संख्या पुछने रही से देखलिऐ। आइ जौं दोस्ती नै केने रहितौं तँ की होइत?" ❑

स्वार्थपूर्ण विचार

एकटा बच्चाक मृत्यु भऽ गेलइ। अभिभावक संग किछु गोरे ओकरा उठा कऽ असमसान लऽ गेल। बर्खा होइत रहए। असमसानमे सभ विचारए लगल जे एहेन दुरकाल समैमे लाशकेँ की कएल जाय? अपनामे सभ विचारिते छल आकि बिलसँ एकटा सिआर निकैल कहलकै- "एहेन समैमे लाशकेँ जरौनाइसँ नीक माटिमे गारनाइ हएत। धरती माएक गोदमे समरपित करब सभसँ नीक हएत।"

सिआरक बात समाप्तो ने भेल छल आकि काछु कहए लगलै-

"धारमे फेक दियौ। ऐसँ नीक दोसर नै हएत।"

ताबे एकटा गीध उड़ैत आबि कहए लगलै- "सभसँ नीक हएत जे ओहिना फेक दियौ, धारेमे नहा लिअ आ गामपर चलि जाइ

जाउ।”

कठियारीबला सभ तीनूक चलाकी बुझि गेल। तीनूकेँ धैनवाद दैत विदा केलक। बर्खो छुटि गेलइ। सभ मिलि चीता खुनि जारैन दऽ डाहि देलक। ❑

संगीक महत

एकटा गाछ लग एकटा फूलक लत्ती जनैम कऽ लटपटाइत बढ़ैत गाछक फुनगी धरि पहुँच गेल। गाछक आश्रए पाबि ओ लत्ती फुलए-फड़ए लगल। लत्तीक फड़-फूल देखि गाछक मनमे द्वेष जागए लगलै जे हमरे बले ई लत्ती एते बढ़ि, फड़ै-फुलाइए। जौं हम सहारा नै दैतिऐ तँ कहिया- केतए ने माल-जाल चरि नष्ट कऽ देने रहितै। लत्तीपर रोब जमबैत गाछ कहलकै-

“तोरा हम जे आदेश दियौ से तूँ कर। नहि तँ मारि कऽ भगा देबौ।”

वृक्ष लत्तीकेँ कहिते छल आकि दूटा बटोही ओही रस्ते जाइ छल। लत्तीसँ सुशोभित गाछ देखि एकटा राही दोसरकेँ कहलक-

“संगी, ऐ वृक्षकेँ दखियौ जे केते सुन्नर लगैए। निच्चाँमे केते-शीतल केने अछि। ऐठाम बैस बीड़ी-तमाकुल कऽ लिअ, तखैन आगू बढ़ब।”

लत्ती संग अपन महत सुनि गाछक रोब समाप्त भऽ गेलइ। ओइ दिनसँ दुनू मिलि प्रेमसँ रहए लगल। ❑

उपहास

कोनो अधलो प्रचलन माने चलैन आकि ढर्राकेँ तोड़ब अपने-आपमे कठिन कार्य होइत। जखन कखनो कियो समाज आकि परिवारमे गलत कार्यकेँ छोड़ि स्वस्थ आकि तर्कयुक्त कार्य आरम्भ करैत तँ खाली परिवारेटा मे नै समाजोमे सभ उपहास करैए। जइसँ धैर्यवान तँ स्थिर रहैत मुदा साधारण मनुक्ख अधीर भऽ जाइत।

पहिने इंग्लैंडमे छत्ता ओढ़नाइकेँ गमाड़पन बुझल जाइ छेलइ। जइ दुआरे लोक बरखोमे भीजैत चलैत मुदा छाता नै ओढ़ैत। ऐ गलत प्रथाक विरोध करैत हेनरी जेम्स छाता ओढ़ब शुरू केलैन। सदिखन ओ छाता संगेमे रखैथ। जइसँ जेमहर होइत चलैथ व्यंग्यक बौछार हुअ लगैन। मुदा तेकर एक्को पाइ परवाह नै करैथ।

देखा-देखी लोक हुनकर अनुकरण करए लगल। किछु दिन पछातइ सभ छाता राखए लगल। जइसँ चलैन बनि गेल। चलैन एते बढ़ि गेलै जे स्त्रीगणो आ राजमहलोक सभ छाता ओढ़ए लगल।

बादमे जएह सभ व्यंग्य करैत वएह सभ हेनरी जेम्सकेँ बधाइ देमए लगलैन। बधाइ देनिहारकेँ हेनरी जेम्स कहथिन- “जे कियो, उपहास आ व्यंग्यक विरोधसँ नै डरत, वएह छोट-सँ-पैघ धरि परिवर्तन कऽ सकैए।”

चाहे शिक्षा हो आकि खेती आकि आन-आन जिनगीक पहलू, रुढ़िवादी पुरान प्रथाकेँ तोड़ए पड़त। जाबे ओ नै टुटत ताबे नव समाजक निर्माण कल्पना रहत। तँए किछु प्रथाकेँ तोड़ि आ किछुकेँ सुधाइर चलए पड़त। अइले सभमे साहस आनए पड़त। ❑

महादान

अज्ञानक निवारण करब सभसँ पैघ पुण्य परमार्थ छी। जे स्वध्याय आ ज्ञानार्जनसँ होइए। उत्तराखंडमे एकटा पुरान नगरमे सुबोध नामक राजा राज्य करै छला। राजा सुबोधक निअम छेलैन जे राजक काज शुरू करैसँ पहिने, आएल याचक सभकेँ दान दइ छेलखिन। ऐ निअममे कहियो भूल नै भेलैन। एक दिन सभ याचककेँ दान दऽ देलखिन मुदा विचित्र स्थिति पैदा भऽ गेलैन। एकटा याचक ओहन आएल छल जे दान-ले तँ हाथ पसारै छल मुदा मुहसँ किछु नै बजैत। सभ हरान होइत जे हिनका की देल जानि? एतदर्थ बुधियार सबहक सलाहकार बोर्ड बनौलैन। कियो विचार दन्हि जे वस्त्र देल जाए तँ कियो अन्न देबाक सलाह देथिन। कियो सोना-चानीक विचार देथिन। मुदा समस्याक यथार्थ समाधान हेबे ने करैत। सुबोधक पत्नी उपवर्गा रहथिन। उपवर्गा कहलकैन- “राजन, जइ आदमीक मुहसँ बोल नै निकलै ओकरा आन कोनो चीज देब उचित नहि। तँए एहेन लोककेँ मुहमे बोल देब सभसँ उत्तम हएत। अर्थात् ज्ञानदान। ज्ञानसँ मनुक्ख अपन सभ इच्छा-आकांक्षाक पूर्ति कऽ सकैए आ दोसरोकेँ मदैत कऽ सकैए।”

उपवर्गाक विचार सभकेँ जँचलैन। ओइ आदमी-ले शिक्षा बेवस्था कएल गेल। ओइ दिन सुबोध अपन दानक सार्थकता बुझलैन। ❑

भाग्यवाद

भाग्यवाद, शकुन, फलित ज्योतिष जकाँ अनेको प्रकरण अछि जे जनसमुदायकेँ जंजालमे ओझरा शोषणक रस्ता शोषक-ले खोलि दइए। एकटा ज्योतिषी सुख-दुख, जनम-मरणक बात कहि मनसम्फे धन जमा कऽ ताड़ी-दारू खूब पीऐ छला। एक दिन एकटा जमीन्दारक ऐठाम पहुँच, हुनक हाथ देखि कहलखिन जे एक बर्खक अभियन्तरे अहाँक मृत्यु भऽ जाएत। ज्योतिषीक बातक बिसवास कऽ जमीन्दार दिनो-दिन सोगाए लगला। जमीन्दारकेँ तीनटा बेटा। तीनू पिताक आज्ञापालक। पिताकेँ सोगाइत देखि मझिला बेटा पुछलकैन- “बाबूजी, अपने दिनानुदिन किए रोगाएल जाइ छी?”

चिन्तित मोने जमीन्दार उत्तर देलखिन- “बौआ, हमर औरदा पूरि गेल। सालक भीतरे मरि जाएब।”

“ई, अहाँ केना बुझलिऐ?”

“ज्योतिषी हाथ देखि कहलैन।”

मझिला बेटा ज्योतिषीकेँ बजा पुछलकैन-

“अहाँ अपने केते दिन जीब?”

हँसैत ज्योतिषी उत्तर देलखिन- “तीस बरख।”

ज्योतिषीक बात सुनि ओ घरसँ फरुसा आनि सोझे ज्योतिषीक गरदैनपर लगा देलक। ज्योतिषीक मुड़ी धरसँ अलग भऽ गेलइ। तखन ओ पिताकेँ कहलक- “हिनकर उमेर तीस बरख बँचले छेलैन तखन आइ किए मरला? ई सभ ठक छी। ठकक बातमे पड़ि अहाँ अनेरे सोगाएल जाइ छी।”

जमीन्दारक भ्रम टुटि गेलैन। धीरे-धीरे निरोग हुअ लगला। ❑

सद्वृति

स्कन्द पुराणक कथा छी। एक बेर कात्यायन देवर्षि नारदसँ पुछलकैन-

“भगवान, आत्म-कल्याण-ले भिन्न-भिन्न शास्त्रमे भिन्न-भिन्न उपय आ उपचार बतौल गेल अछि। गुरुजन सेहो अपन-अपन विचारानुसार केते तरहक साधन-विधानक महात्म्य बतौने छैथ। जेना- जप, तप, तियाग, वैराग्य, योग, ज्ञान, स्वध्याय, तीर्थ, व्रत, धियान-धारण, समाधि इत्यादि अनेको रस्ता कहने छैथ। जे सभ करब असम्भवे नै असाध्यो अछि। समान्यजन तँ निर्णय नै कऽ सकैए जे ऐमे केकरा चुनल जाए? कृपा कऽ अपने एकर समाधान करियौ जे सर्वसुलभ सेहो होइ आ सुनिश्चित मार्ग सेहो होइ।”

धियानसँ नारद कात्यायनक बात सुनि कहलखिन-

“हे मुनिश्रेष्ठ, सद्ज्ञान आ भक्तिक एक्के मार्ग अछि। जे छी मनुक्खकेँ सत्कर्ममे प्रवृत्त करब। स्वयं संयमी बनि अपन सामर्थ्यसँ गिरल आदमीकेँ उठबए आ उठलकेँ उछालैमे नियोजित करए। सत्प्रवृत्तिये असल देवी छी। जेकरा जे जेते श्रद्धासँ सिंचैए ओ ओते विभूतिकेँ अर्जित करैए। आत्म-कल्याण आ विश्व-कल्याणक समन्वित साधना-ले परोपकार-रत् रहब श्रेष्ठ अछि। चाहे बेकती कोनो जाति आकि धर्मक किए ने होइथ।” ❑

आश्रम नहि सोभाव बदली

एकटा युवक उद्धत सोभावक छल। बात-बातमे खिसिया कऽ आगि-अंगोड़ा भऽ जाइत। जौं कियो बुझबै-सुझबै छेलै तँ ओ घर छोड़ि संयासी बनैक धमकी दिअ लगइ। युवकसँ परिवारक सभ परेशान रहैत। एक दिन पिता खिसिया कऽ संयासी बनैले कहि देलक।

घरसँ किछुए दूर हटि संयासीक आश्रम छेलइ। जे ओकरा बुझल छेलइ। घरसँ निकैल युवक सोझे संयासीक आश्रम पहुँच गेल। आश्रमक संचालक ओइ युवकक उदण्डतासँ परिचित छला। युवककेँ आश्रममे पहुँचते, संचालक रस्तापर आनै दुआरे पुचकारि कऽ लगमे बैसा विचार पुछलखिन। ओ युवक संयासक दीक्षा लइक विचार व्यक्त केलक। दोसर दिन दीक्षा दइक आश्वासन संचालक दऽ देलखिन।

दीक्षाक विधानमे पहिल कर्म छल गोसाँइ उगैसँ पहिने समीपक धारमे नहा कऽ एनाइ। आलसी प्रवृत्ति आ जाड़सँ डरैबला युवककेँ ई आदेश खूब अखड़लै। मुदा करैत की? निअम पालन तँ करए पड़तै।

कपड़ाकेँ देवालक खुट्टीपर टांगि युवक नहाइले गेल। जखन युवक नहाइले गेल आकि संचालक कपड़ाकेँ चिड़ी-चोंत कऽ देलकै। नहा कऽ थरथराइत युवक आएल तँ देखलक। तामसे आरो थरथराए लगल। मुदा करैत की?

दीक्षाक मुहूर्त्त संचालक सौंझुका बनौलक। ताधैर मात्र किछु फल-फलहरी खेबाक छेलइ। तँए ओइ युवक-ले नून मिलौल करैला परोसि कऽ थारीमे देल गेलइ। एक तँ करैला ओहिना तीत दोसर

छुच्छे। कण्ठसँ निच्चाँ युवककेँ उतरबे ने करए।

भोरमे उठब, जाड़मे नहाएब, फाटल-चीटल कपड़ा पहिरब आ तैपरसँ तीत करैला खेनाइ! युवक खिन्न हुअ लगल। संचालक सभ बुझैथ। युवककेँ बजा संचालक कहलखिन- “संयासी बनब कोनो खेल नै छिऐ। ऐ दिशामे बढ़निहारकेँ डेग-डेगपर मनकेँ मारए पड़ै छइ। परिस्थितिसँ ताल-मेल बैसा, संयम बरैत, अनुशासनक पालन करए पड़ै छइ। तखन कियो संयासी बनैए।”

भरि दिन युवक अपन प्रस्तावपर सोचैत-विचारैत रहल। तेसर पहर अबैत-अबैत ओ पुनः घुमि कऽ घर आबि गेल। संयम साधना आ मनोनिग्रहक नाउँए तँ संयास छी। जे घरोपर रहि लोक पालन कऽ सकैए।

सोभाव बदलने वातावरणो बदैल जाइ छइ। ❑

पुरुषार्थ

संसारक कुशल-क्षेम बुझैले भगवान एक दिन नारदकेँ पृथ्वीपर पठौलखिन। पृथ्वीपर आबि नारद एकटा दीन-हीन बुढ़ आदमी लग पहुँचला। ओ वेचारे -वृद्ध-आदमी- अन-वस्त्र-ले कलहन्त छल। नारद जीकेँ देखिते चीन्हि गेलखिन। कनैत-कलपैत कहए लगलैन-

“अहाँ घुमि कऽ जखन भगवान लग जाएब तखन कहबैन जे हमरा सन-सन लोक-ले जीबैक जोगार करैथ।”

बुढ़क बात सुनि उदास मोने नारद आगू बढ़ला। आगू बढ़िते एकटा धनीक आदमीसँ भेँट भेलैन। ऊहो नारदकेँ चीन्हि गेलैन। ओ

धनीक नारदकेँ कहलकैन-

“भगवान हमरा कोन जंजालमे फँसौने छैथ जे दिन-राति परेशान-परेशान रहै छी। कम धन दितैथ जे गुजरो चलैत आ चैनोसँ रहितौं। तँए भगवानकेँ कहबैन जे जंजाल कम कऽ दैथ।”

दुनूक बात सुनलापर नारद मने-मन सोचए लगला जे कियो धने तबाह तँ कियो निर्धने तबाह। सोचैत-विचारैत नारद आगू बढ़ला। थोड़े आगू बढ़लापर बाबाजीक झुण्ड भेटलैन। नारदकेँ देखि बाबाजी घेरि कऽ कहए लगलैन-

“स्वर्गमे तोहीं सभ मौज करबह। हमरो सभले राजसी ठाठ जुटाबह नहि तँ चुट्टासँ मारि-मारि भुस्सा बना देबह।”

नारद घुमि कऽ भगवान लग पहुँचला। यात्राक वृतान्त भगवान नारदसँ पुछलकैन। तीनू घटनाक वृतान्त नारद सुना देलखिन। हँसैत नारायण कहए लगलखिन-

“देवर्षि, हम केकरो कर्मक अनुसार किछु दइले बेबस छी। जे कर्महीन अछि ओकरा केतएसँ किछु देबै। अहाँ फेर जाउ। ओइ वृद्ध गरीबकेँ कहबै जे भाय अपन गरीबी मेटबैले संघर्ष करू। अपन पुरुषार्थकेँ जगाउ। तखन सभ किछु भेटत। दोसर ओइ धनीककेँ कहबै जे अहाँकेँ धन दोसराक उपकार करैले देलौं। से नै कऽ संग्रही बनि गेलौं तँए अहाँ धनक जंजालमे फँसि गेल छी। आ ओइ बाबाजी सभकेँ कहबै जे परमार्थीक भेष बना कोढ़ि आ स्वार्थी बनि गेल छी, तँए अहाँ सभकेँ नरक हएत। ❑

नैष्ठिक सुधन्वा

महाभारतमे सुधन्वा आ अर्जुनक बीच लड़ाइक कथा आएल अछि। दुनू महाबलि युद्ध विद्यामे निपुन। दुनूक बीच लड़ाइ छिड़ल। धीरे-धीरे लड़ाइ जोर पकड़ैत गेलइ। लड़ाइ एहेन भयंकर रूप लऽ लेलकै जे निर्णयक दौड़ आबिए ने रहल छेलइ।

अन्तिम बाजी ऐ विचारपर अड़ल जे फैसला तीन वाणमे हुअए। या तँ एतबेमे कियो हारि जाए नहि तँ लड़ाइ बन्न कऽ दुनू हारि कबूल कऽ लिअए। जीवन-मरणक प्रश्न दुनूक सामने। कृष्ण सेहो रहथिन। कृष्ण अर्जुनकेँ मदैत करैत रहथिन। हाथमे जल लऽ कृष्ण संकल्प केलैन जे “गोवरधन उठौला आ ब्रजक रक्षा करैक पुण्य हम अर्जुनक वाणक संग जोड़ै छी।”

सुधन्वा संकल्प केलक- “पत्नी धरम पालनक पुण्य अपन अस्त्रक संग जोड़ै छी।”

दुनू अस्त्र अकास मार्गसँ चलल। अकासेमे दुनू टकराएल। अर्जुनक अस्त्र कटि गेल। सुधन्वाक अस्त्र आगू बढ़ल मुदा निशान चूकि गेलइ।

दोसर अस्त्र पुनः उठल। कृष्ण अपन पुण्य अस्त्रक संग जोड़ैत कहलखिन- “गोहिसँ हाथीक जान बँचाएब आ द्रौपदीक लाज बँचबैक पुण्य जोड़ै छी।”

अपन अस्त्रक संग जोड़ैत सुधन्वा बाजल- “नीतिपूर्वक उपारजन आ दोषरहित चरित्रक पुण्य जोड़ै छी।”

दुनू अस्त्र अकासेमे टकराएल। सुधन्वाक वाण अर्जुनक वाणकेँ काटि धरासायी कऽ देलक। तेसर अस्त्र बाँकी रहल। ऐपर निर्णय आबि गेल। अर्जुनक वाणक संग जोड़ैत कृष्ण कहलखिन-

“बेर-बेर ऐ धरतीपर अवतार लऽ धरतीक भार उतारैक पुण्य जोड़ै छी।”

अपन वाणक संग जोड़ैत सुधन्वा कहलक-

“स्वार्थ-ले धनकेँ एक्को क्षण बिनु सोचल आ सदैत परमार्थमे लगौल पुण्य जोड़ै छी।”

दुनू वाण आकास मार्गसँ चलल। अर्जुनक वाण कटि कऽ निच्चाँ गिड़ल। दुनू पक्षमे के अधिक समर्थ, ई जानकारी देवलोकमे पहुँचल। देवलोकसँ फूलक वर्षा सुधन्वापर हुअ लगल। लड़ाइ समाप्त भेल। भगवान कृष्ण सुधन्वाक पीठि ठोकि कहलखिन-

“नरश्रेष्ठ, अहाँ साबित कऽ देलौं जे नैष्ठिक गृहस्थ साधक कोनो तपस्वीसँ कम नै होइए।” ❑

सद्गृहस्त

एकटा गृहस्त छला। संयमसँ जीवन-यापन करै छला। परिवारकेँ सुसंस्कारी बनबैमे सदिखन लगल रहैथ। नीतिपूर्वक आजीविकासँ जिनगी बितबैथ। परिवारक काज आ खर्चसँ जे समय आ धन बँचैत रहैन ओ परमार्थमे लगबैथ। ओ गृहस्त कहियो तपोभूमि नै गेला मुदा घरेमे तपोवन बना नेने छला। देवतो प्रसन्न रहै छेलखिन।

एक दिन गृहस्तक क्रियासँ खुशी भऽ इन्द्र आबि वर मांगैले कहलखिन। गृहस्त असमंजसमे पड़ि गेला जे की मंगबैन। जखन असंतोषे नै तखन अभाबे कथीक? स्वाभिमानी गमौलाक उपरान्ते कियो केकरोसँ किछु पबैए। ई बात सोचि गृहस्त मने-मन विचारए लगला जे जइसँ ऋृणो-भार नै हुअए आ देवतो अपमान नै बुझैथ से

करबाक अछि। बड़ीकाल धरि सोचैत-विचारैत गृहस्त इन्द्रसँ मंगलकैन- "हमर छाया जेतए पड़ै ओतए कल्याणक बर्खा होइ।"

इन्द्र वरदान तँ दऽ देलखिन मुदा अचम्भित भऽ गृहस्तसँ पुछलखिन- "हाथ रखलापर कल्याणो होइ छै आ आनंदो, प्रशंसो आ प्रत्युपकारक सम्भवनो होइ छइ। मुदा छायासँ कल्याण भेलोपर लाभसँ बंचित रहए पड़ै छइ। तखैन एहेन विचित्र वर किए मंगलौं?"

मुस्कियाइत गृहस्त कहलखिन- "देव, सोझहाबलाक कल्याण भेने अपनामे अहंकार पनपैए। जइसँ साधनामे बाधा उपस्थिति होइए। छाया केकरापर पड़लै, के केते लाभान्वित भेल, ई पता नै लागब जीवन-ले श्रेयस्कर छी।"

साधनाक यएह रूप पैघ होइ छइ। एहने क्रमक प्रगतिक रस्तापर चलैत-चलैत बेकती महामानव बनैए। ❑

सद्भाव

अपन शिष्यक संग महात्मा इसा केतौ जाइत रहैथ। साँझ पड़ि गेलइ। राति बितबैले एकठाम ठहैर गेला। संगमे पाँचेटा रोटी खाइले छेलैन। रोटीक हिसाबे खेनिहार अधिक तँए सभकेँ पेट भरब कठिन छेलइ। अपनामे शिष्य सभ यएह गप-सप्प करैत रहए। इसो सुनलखिन। मुस्कियाइत इसा कहलखिन- "सभ रोटीकेँ टुकड़ी-टुकड़ी तोड़ि एकठाम कऽ लिअ आ चारू भागसँ सभ बैस, खाउ। जइसँ सभकेँ एक रंग भोजन भेट जाएत।"

महात्मा इसाक विचार मानि, सभ सएह केलक। संतोषक जनम सबहक हृदैमे भऽ गेल। सभ कियो खेनाइ शुरू केलक। रोटी

सठैत-सठैत सबहक पेटो भरि गेलइ। तखन एकटा शिष्य बाजल-

"ई गुरुदेवक चमत्कार छिऐन।"

शिष्यक बात सुनि इसा कहलखिन- "ई अहाँ लोकैनक सद्भावक सहकार छी नै कि चमत्कार। अगर अहाँ सभ अपनामे छीना-झपटी करितौं तँ ई सम्भव नै होइतए। जैठाम सद्भावसँ परिवारक सम्बन्ध होइ छै तैठाम अहिना प्रभुक अयाचित सहयोग भेटैए।" ❑

आलस्य वनाम पिशाच

वन विहार करैले वासुदेव, बलदेव आ सात्यकि घोड़ापर चढ़ि निकलला। घनघोर जंगल रहने तीनू गोरे रस्तामे भटैक गेला, जाइत-जाइत एहेन सघन वनमे पहुँच जाइ गेला जैठामसँ ने पाछू होएब बननि आ ने आगू बढ़ब। मुन्हारि साँझ भऽ गेल छेलइ। अन्हारमे चलब आरो कठिन भऽ गेलैन। अचताइत-पचताइत तीनू गोरे अँटैक गेला। एकटा झमटगर गाछ छेलै जहिक निच्चाँमे घोड़ा बान्हि तीनू गोरे राति बितबैक कार्यक्रम बनौलैन। खाइ-पीबैले किछु रहबे ने करैन तँए गाछेक निच्चाँमे दूबिपर सुतैक ओरियान केलैन। मुदा मनमे शंका होइत रहैन जे जौं तीनू गोरे सूति रहब आ घोड़ा कियो खोलि कऽ लऽ जाए? तीनू गोरे विचारलैन जे एक-एक पहर जागि अपनो आ घोड़ोक ओगरबाहि कऽ लेब आ बेरा-बेरी सूतियो लेब।

पहरा करैक पहिल पारी सात्यकिक भेलैन। वासुदेव आ बलदेव सूति रहला। सात्यकि जगल रहला। कनीकाल पछातइ गाछपर सँ पिशाच उतैर सात्यकिकेँ मल्लयुद्ध करैले ललकारलक। ओहने उत्तर सात्यकियो देलक। दुनूक बीच घुस्सा-घुस्सी हुअ लगल।

सौंसे पहर दुनूक बीच मल्लयुद्ध चलैत रहल। सात्यकिक देहमे चोटो लगलै, छालो ओदरलै। पहर बित गेल।

दोसर पारी बलदेवक आएल। सात्यकि सूति रहल। बलदेव पहरा करए लगल। थोड़ेकाल पछातइ पिशाच पुनः आबि चुनौती देलकैन। बलदेवो ओहने उत्तर देलकै। पिशाचक आकार सेहो नमहर भऽ गेल छेलइ। दुनूक बीच मल्लयुद्ध शुरू भेल। पिशाच बलदेवोकेँ दुरगैत कऽ देलकैन। दोसरो पहर बितल। तेसर पहरक पारी वासुदेवक छेलैन। पुनः पिशाच आबि हुनको चुनौती देलकैन। मुदा वासुदेव हँसबो करैथ आ कहबो करथिन- “बड़ मजगर अहाँ छी। निन्न आ आलससँ बँचैले मित्र जकाँ मखौल करै छी।”

पिशाचक बल घटए लगलै। आकारो छोट होइत गेलइ। भिनसर भेल। नित्यकर्मसँ तीनू गोरे निवृत्ति भऽ चलैक तैयारी करए लगला। तखन सात्यकि आ बलदेव अपन रतुका चरचा करैत जेतए-जेतए चोट लगल रहैन सेहो देखोलखिन। हँसैत वासुदेव कहलखिन-

“ई पिशाच आरो किछु नै छी। ई मात्र कुसंस्कार रूपी क्रोध छी। ओकरो ओहने प्रत्युत्तर भेटलै तँए बढ़ैत गेल। मुदा जखैन ओकरा उपेक्षाक रूपमे देखलिऐ तखैन ओ छोट आ दुर्बल भऽ गेल।” ❑

स्वर्ग आ नर्क

विद्यालयक ओसारपर बैस गुरु आ शिष्य गप-सप्प करैत रहैथ। एकटा शिष्य गुरुसँ स्वर्ग आ नर्कक सम्बन्धमे पुछलकैन। शिष्यकेँ बुझबैत गुरु बजला- “स्वर्ग आ नर्क अही धरतीपर अछि। जे कर्मक अनुसार अही जिनगीमे भेटै छइ।”

गुरुक उत्तरसँ शिष्य सन्तुष्ट नै भेल। शंका बनले रहलै। पुनः गुरुसँ अपन शंका व्यक्त केलक। गुरु बुझलैन जे बिना बेवहारिक जिनगी देखौने शिष्य सन्तुष्ट नै हएत। ओ उठि शिष्य सभकेँ संग केने गाम दिस विदा भेला।

गाममे एकटा बहेलियाक घर छेलइ। ओइठाम पहुँचते सभ देखलक जे पेट-पोसैले बहेलिया जीव-हत्या कऽ रहल अछि। तेतबे नहि, जीव हत्यो केने ने देहपर वस्त्र छै आ ने भरि पेट भोजन भेटै छइ। धियो-पुतोक देहपर माछी भिनकै छइ। एक्को क्षण ओतए रहैक इच्छा केकरो नै होइ छेलइ। चुपचाप गुरुजी शिष्यक संग ओतएसँ विदा भऽ गेला। दोसर ठाम पहुँचला। ओ बेश्याक घर छेलइ। युवावस्थामे ओ बेश्या खूब पाइयो कमेने छेली आ भोगो केने छेली। मुदा बुढ़ाड़ीमे आबि अनेको रोगसँ ग्रसित भऽ परिवारो-समाजोसँ तिरस्कृत भेल छेली। पेटक दुआरे भीख मंगै छेली। सभ कियो देखि ओतएसँ विदा भऽ गेला।

तेसर परिवार गृहस्तक छल। जैठाम जा सभ देखलखिन जे गृहस्त जेहने संयमी छैथ तेहने परिश्रमी। सोभावसँ उदार आ सद्गुणी सेहो छैथ। जइसँ परिवार सुख-समृद्धिसँ भरल-पूरल छेलइ। गृहस्तक परिवार देखि गुरुजी शिष्यक संग आगू बढ़ि चारिम परिवारमे पहुँचला। पोखैरक मोहारपर एकटा संत कुटी बनौने रहैथ। शिक्षा आ प्रेरणा पबैले दिन-राति समाजक लोक अबैत-जाइत रहै छल। संतजी मस्त-मौला जिनगी बितबैत रहैथ। ने मनमे एक्को मिसिया क्रोध आ ने कोनो तरहक चिन्ता।

चारू परिवार देखि शिष्यक संग गुरुजी विद्यालय दिस चलला। रस्तामे शिष्यकेँ कहलखिन- “पहिल जे दुनू परिवार देखलिऐ ओ नरकक रूपमे छल आ बादक जे दुनू परिवार देखलिऐ ओ स्वर्गक रूपमे। ❑

यथार्थक बोध

शिखिध्वज ब्रह्मज्ञानी बनए चाहैत रहैथ। ओ सुनने रहथिन जे तियाग आ वैराग्यसँ मनुक्ख ब्रह्मज्ञानी बनैए। तँए शिखिध्वज घर-परिवार छोड़ि जंगलमे कुटी बना रहए लगला। ओइ वनमे तपस्वी शतमन्यु सेहो रहै छेलखिन। शतमन्युकेँ पता लगलैन जे एकटा नवांकुर घर-परिवार छोड़ि कुटी बना रहैए।

शतमन्यु आबि शिखिध्वजकेँ कहलखिन- “गामक घर-गिरहस्ती उजारि वनमे वएह सभ सरंजाम जुटबैमे लागि गेलौं, तइसँ की लाभ? वैराग्य तँ अहंता आ लिप्सासँ हेबाक चाही। जौं भऽ सकए तँ घरेमे तपोवन बना सकै छी।”

शतमन्युक विचार सुनि शिखिध्वजकेँ वास्तविकताक बोध भऽ गेलैन। ओ घुमि कऽ घर आबि परिवारक बीच रहि सेवा-साधनामे जुटि गेला। शिखिघ्वज एकाकी मुक्तिक जगह सामूहिक मुक्तिक मार्ग अपनौलैन। हुनके वंशमे बाल्यखिल्य ॠृषि भेला जे सौंसे जम्वूद्वीपकेँ देवभूमि बना देलखिन। ❑

विद्वताक मद

एक दिन महाकवि माघ राजा भोजक संग वन-विहार कऽ घुमल अबैत रहैथ। रस्तामे एकटा झोपड़ी देखलखिन। ओइ झोपड़ीमे एकटा वृद्धा टोकरी माने तकली कटैत रहैथ। ओइ वृद्धासँ माघ पुछलखिन- “ई रस्ता केतए जाइत अछि?”

वृद्धा माघकेँ चीन्हि गेली। ओ हँसैत उत्तर देलखिन- “वत्स, रस्ता तँ केतौ नै जाइत अछि। जाइत अछि ओइपर चलैबला राही।

अहाँ सभ के छी?”

माघ कहलखिन- “हम सभ यात्री छी।”

मुस्कियाइत वृद्धा बजली- “तात्, यात्री तँ सुरूज आ चान दुइए टा छैथ। जे दिन-राति चलैत रहै छैथ। सच-सच कहू जे अहाँ के छी?”

थोड़े चिन्तित होइत माघ कहलखिन- “माँ, हम क्षणभंगुर आदमी छी।”

थोड़े गम्भीर होइत पुनः वृद्धा कहलकैन- “बेटा, यौवन आ धनेटा क्षणभंगुर होइए। पुराण कहैए जे ऐ दुनूक बिसवास नै करी।”

माघक चिन्ता आरो बढ़लैन। रोषमे कहलखिन- “हम राजा छी।”

हुनका मनमे एलैन जे राजाक नाओं लेलासँ ओ सहैम जेती। मुदा ओ वृद्धा निर्भीक भऽ उत्तर देलकैन- “नै भाय, अहाँ राजा केना भऽ सकै छी? शास्त्र तँ दुइए टा राजा- यम आ इन्द्र मानने अछि।”❑

अनन्त

“हरि अनन्त हरि कथा अनंता” --तुलसी

एक दिन भगवान वुद्ध आनन्दक संग एकटा सघन वनसँ गुजरैत रहैथ। रस्तामे दुनू गोरेक बीच ज्ञानक चर्च चलै छल। आनन्द पुछलखिन- “देव, अपने तँ ज्ञानक भण्डार छिऐ। अपने जे जनै छी ओ हमरा बुझा देलौं?”

आनन्दक बात सुनि उलैट कऽ वुद्धदेव पुछलखिन- “ऐ जंगलक जमीनपर केते सुखल पात पड़ल छै, जइ गाछक निच्चाँमे

ठाढ़ छी ओइ गाछमे केते सुखल पात लगल छइ? आ अपना सबहक पएरक निच्चाँ केते पड़ल अछि। सभटा मिला कऽ केते हएत?”

वुद्धदेवक प्रश्नसँ आनन्द निरुत्तर भऽ गेला। आनन्दकेँ उत्तर नै दैत देखि तथागत कहलखिन- “ज्ञानक विस्तार ओते अछि जेते ऐ वन प्रदेशमे सुखल पातक परिवार। अखैन धरि हमहूँ एतबे बुझलौं हेन जे जेते वृक्षक ऊपर सुखल पात अछि। मुदा पएरक निच्चाँ जे अछि ओ हमहूँ ने बुझै छी।” ❑

हँसैत लहास

जिनगीकेँ जिनगी बुझि मनुक्खकेँ जीबाक चाही। जौं से नै भेल तँ जिनगीक कोनो महत तँ नै रहि जाइत। जे कियो जिनगीकेँ कमेनाइ-खेनाइ धरि रखैत, ओकर संस्कार मरलोपर ओहिना रहि जाइत। एक दिन दूटा शव एक्के बेर असमसान पहुँचल। कठिआरीक लोक डाहैक ओरियान करए लगल। एकटा शव दोसरकेँ देखि ठहाका मारि हँसए लगल। हँसैत शवकेँ देखि दोसर शव पुछलक- “बन्धु, एहेन कोन बात भऽ गेल जे अहाँ हँसि रहल छी। मुदा दुनू गोरे एक्के स्थितिमे छी?”

हँसैत शव उत्तर देलक-

“बन्धु, अहाँकेँ मोन अछि कि नहि, मुदा हमरा तँ मोन अछि। दुनू गोरे संगे गामक स्कूलमे पढ़ने रही। पढ़ला पछातइ अहाँ वणिक वृत्तिमे लगि दिन-राति पाइएक हिसाबो आ भोग-विलासमे लगि गेलौं। आब अहाँक ओहन स्थिति भऽ गेल अछि जे असमसानो

घाटपर पाइएक हिसाब आ भोगे-विलासक गर लगबै छी।”

“और अहाँ?” -दोसर पुछलक।

“जाधैर जीबै छेलौं मस्तीमे रहलौं। ने कहियो बेसी पाइक खगता भेल आ ने तइले मनमे चिन्ता। जहिना चिन्ता मुक्त पहिने छेलौं तहिना अखैन छी। अच्छा आब अहूँ जाउ आ हमहूँ जाइ छी। अछिया तैयार भऽ गेल। नमस्कार।”

-कहि पहिल शव चीता दिस बढ़ि गेल आ दोसर कनगुरिया ओंगरीपर हिसाब जोड़ए लगल। ❑

अनगढ़ चेतना

ज्ञान अनगढ़ चित्तकेँ सुगढ़ बनबैए। जइसँ सोचै आ चलैक दिशा निर्धारित होइए। ओना, मनुक्खक अनगढ़ताक प्राप्ति जन्मजात होइ छइ। जहिना शरीरक रक्षा-ले भोजनक प्रयोजन होइत अछि तहिना मनुक्खता प्राप्त करैले विद्याक। वशिष्ठजी रामकेँ भयंकर वनमे विचरण करैबला उनमत्तक आँखिक देखल कथा सुनबैत कहलखिन-

“उनमत्त देखैमे तँ स्वस्थ बुझि पड़ैत मुदा ओकर जे क्रिया-कलाप होइत ओ विल्कुल पागल सदृश होइत। सदिखन रस्ताक व्यतिक्रम करैत। जहाँ-तहाँ बौआएलो घुमैत आ अन्ट-सन्ट रस्ता सेहो बनबैत। जइसँ अपनो देह-हाथक नोकसान करैत आ काँट-कुशमे ओझराइलो रहैत। मुदा तैयो अपनाकेँ बुधियार बुझि दोसराक नीको विचारकेँ मोजर नै दइत। जइसँ सदिखन डर आ चिन्तासँ मन त्रस्त रहैत। मुदा तैयो ने अधला रस्ता छोड़ैत आ ने केकरो नीक करैत।”

वशिष्ठक विचार सुनि राम पुछलखिन- “भगवन, ओ उन्मादी केतए रहैए, ओकर नाओं की छिऐ आ ओकर कोनो उपचार छै की नहि?”

वशिष्ठ- “वत्स, ओ कियो आन नहि, मनुक्खक अनगढ़ चेतना छी। जे जालमे फँसल ओइ चिड़ै सदृश अछि जे मरैक रस्ता देखि फड़फड़ाइत तँ अछि मुदा निकलैक रस्ते ने देखैत।” ❑

सत्य विद्या

विद्याध्ययन साधना छी। जइसँ अन्तः क्षेत्र शुद्ध आ पुरुषार्थक जनम होइत। जेकरा सम्पादित केने बिना मानव जीवनक सभ उपलब्धि व्यर्थ।

जिनगी भरि भरद्वाज मुनि तपस्या करैत रहला। जखन मरैक बेर एलैन तँ देवदूत लेमए एलैन। देवदूतकेँ भारद्वाज मुनि कहलखिन- “हमरा अही लोकमे फेर जनमए देल जाउ। स्वर्ग जा कऽ की करब?”

मुनिक बात सुनि, आश्चर्जित होइत देवदूत पुछलकैन- “तपक लक्ष्य तँ स्वर्ग प्राप्त करब होइए।”

भारद्वाज कहलखिन- “ज्ञान संचय आ पूर्ण सत्य तक पहुँचैले अखन हमर ज्ञान-सम्पदा बहुत कम अछि। तँए, ओते जनम धरि तपस्या करए चाहै छी जाधैर सत्यकेँ लगसँ नै देखि सकिऐ।”

स्वर्गसँ ज्ञान बहुत पैघ होइए। स्वर्गसँ सुविधा भेटै छै मुदा ज्ञानसँ आनन्द। ❑

समता

गुरुकुलमे जे ़विद्याध्ययन होइत ओ अमृत सदृश होइत। किएक तँ ओ साधनाक नै उच्च स्तरीय आदर्शक निर्माण करैत। ऐ हेतु गुरुकुलक छात्र उपभोगकेँ नै उपयोगक महत सत्-प्रयोजन-ले अपन ऐगला माने भावी दिशाधाराकेँ निर्धारित करैए। एक दिन सम्पन्न घरसँ आएल छात्र गुरुकुल संचालक आत्रेयसँ पुछलकैन- “भगवन, जे कियो अपना घरसँ नीक भोजन आ नीक वस्त्र मंगा सकै छैथ ओ ओकर उपयोग किए ने कऽ सकै छैथ? ऊहो किए निर्धने परिवारक छात्र जकाँ जीवन-यापन करत?”

गम्भीर मुद्रामे आत्रेय कहलखिन- “छात्र, श्रेष्ठ माने उत्तम मनुक्ख जइ समाजमे रहै छैथ ओ ओइ समाजक अनुकूल जीवन-यापन करै छैथ। यएह समता अपनो आ दोसरो लेले सौजन्य उत्पन्न करैए। सम्पन्नताक प्रदर्शन इर्ष्या आ अहंकारकेँ उत्पन्न करैए। जइसँ विग्रहक जनम होइए। जे सहयोगक नींवकेँ दोमि दइए। विषमतेसँ समाजमे अनेको विग्रह ठाढ़ होइत अछि। अपराध बढ़ैए, जइसँ अनाचारक जनम सेहो होइत अछि। ऐठाम माने गुरुकुलमे समान जीवन जीबैक रस्ता सिखौल जाइत अछि। धनिक अपन धन गरीबकेँ उठबैमे लगबए नै कि निजी सुविधा-सम्वर्द्धनमे।”

समताक दूरगामी सत्-परिणामकेँ छात्र बुझि अधिक उपयोगक विचारकेँ बदैल लेलक। ❑

जेते चोट तेते सक्कत

कोशाम्बीक राजा शूरसेनसँ मंत्री भद्रक पुछलकैन- “राजन, अपने श्रीमन्त छी। राकुमारक शिक्षा-ले एकसँ एक विद्वान् रखि सकै छिऐ। तहन अपने ऐ पुष्प सन बच्चाकेँ वन्य प्रदेशमे बनल गुरुकुलमे किए पठबै छिऐन? जैठाम सुविधाक घोर अभाव छइ। एहेन कष्टमय जीवनचार्यामे बच्चाकेँ पठाएब उचित नहि?”

मंत्रीक विचार सुनि मुस्कियाइत शूरसेन उत्तर देलखिन- “हे भद्रक, जहिना आगिमे तपौलासँ सोना चमकै छै तहिना कष्टपूर्ण जीवनचर्यासँ मनुक्ख बनैए। कष्टे मनुक्खकेँ धैर्य, साहस आ अनुभव दइ छइ।

वातावरणक प्रभाव सभसँ बेसी नव उमेरक बच्चेपर पड़ैए। ऋृषि सम्पर्क आ कष्टमय जिनगी राजमहलमे थोड़े भेट सकैए। ऐठाम तँ हम ओकरा भोगीए-विलासी बना सकै छी। जौं क्षणिक मोहमे पड़ब तँ ओकर भविष्ये चौपट्ट भऽ जेतइ। तँए ओकर उज्ज्वल भविस-ले गुरुकुल पठाएब उचित अछि।” ❑

परिष्कार

गुरुकुलमे विद्याध्ययन सभ जाति, सभ वर्ण आ सभ समुदाय-ले हितकारी अछि। अगर जौं किनको अपन पैतृक बेवसाय करबाक होनि, तिनको पैघ उपलब्धि-ले संस्कारक शिक्षाक ग्रहन अत्यन्त अनिवार्य अछि।

एक गाममे क्षत्रिय आ वैश्य रहै छल। ब्राह्मणक बालक तँ गुरुकुल पढ़ैले चलि गेला। दुनूक -क्षत्रीओ आ वैश्योक- मनमे छल जे

हम योद्धा बनब तँ हम वणिक। अनेरे विद्याध्ययनमे समय किए लगाएब। मुदा जखन कनी असथिर भऽ सोचलक तँ अपनापर शंका जरूर भेलइ। मनमे खुट-खुटी एलइ। मने-मन सोचलक जे से नहि तँ कुल पुरोहितसँ किए ने पुछि लिऐन। दुनू जा कऽ पुरोहितसँ पुछलकैन। कुल पुरोहित उत्तर देलखिन-

"ब्रह्मविद्याक तात्पर्य संयासी बनि भीख मांगब नै होइत। ओ जीवनक अन्तिम भागमे अधिकारी बेकती द्वारा ग्रहण कएल जाइ छइ। ब्रह्मविद्याक प्रयोजन गुण, कर्म, सोभावकेँ परिष्कार करब होइ छइ। जे सभ स्तरक प्रगैत-ले आवश्यक अछि। क्षत्रिय आ वैश्य जौं ओइ विद्याकेँ ग्रहण करत तँ अपन-अपन जिनगीक कार्यक्षेत्रमे अधिक सफल आ सुन्नर ढंगसँ सम्पादन करत।"

प्राचीनकालमे गुरुकुलमे, कठिनसँ कठिन कार्यक भार छात्रकेँ देल जाइ छल। जइसँ भारीसँ भारी काज करबाक अभ्यास बनै छेलइ। कुल पुरोहितक परामर्श मानि ऊहो दुनू -क्षत्रिय और वैश्य- अपन-अपन बालककेँ गुरुकुल भेजब शुरू केलक।

गुरुकुलसँ अध्ययन कऽ लौटलापर अपन काजकेँ, बिनु अध्ययन केलहाक तुलनामे अधिक सफल भेल। ❑

कथनी नै करनी

एकटा लोहार तीर बनबैक विद्यामे निपुन छल। तीरो अद्भुत बनबै छल।

तीर बनबैक कलाकेँ सीखैले दोसर लोहार आबि पुछलक-

"भाय, तोँ केना वाण बनबै छह, से हमरो कहह।"

पहिल लोहार जवाब देलकै- “भाय, कहलेटा सँ सभ लूरि नै होइ छइ। तँए हम वाण बनबै छी, तूँ धियानसँ देखह।”

सुनि दोसर लोहार लगमे बैस देखए लगल। तखने एकटा बरियाती बगलक रस्तासँ गुजरै छल। बरियातियो खूब झमटगर। दर्जनो गाड़ी, रंग-बिरंगक बजाक संग सजाबटो सुन्नर रहए। दोसर लोहार, तीर बनौनाइ देखब छोड़ि, बरियाती देखए लगल।

जखन बरियाती आँखिक अढ़ भऽ गेल, तखन ओ लोहार बाजल- “बड़ सुन्नर बरियाती छेलइ।”

तीर बनबैबला लोहार कहलक- “भाय, हमरा ने तखैन देखैक फुरसत छल आ ने अखैन तोहर बात सुनैक अछि। जाधैर कोनो काजकेँ तत्परतासँ नै कएल जाएत ताधैर काजक सफलताक कोन आश। तँए, जे काज तत्परता आ एकाग्रतासँ कएल जाएत, वएह काज सफल हएत।”

अपसोच करैत दोसर लोहार सोचए लगल जे एकाग्रताक अभ्यास करब सभसँ जरूरी अछि। जौं से नै करब तँ जीवनमे कहियो कोनो काजमे सफल नै हएब।

ज्ञानक सूत्र केतौसँ भेटए ओकर अंगीकार जरूर करक चाही।❑

शालीनता

विद्या बेकतीकेँ विनम्र बनबैए। ओकर अन्तरंगक स्तरकेँ ऊपर उठबैए। शिक्षा केतौ भेट सकैए मुदा विद्याक सूत्र केतौ-केतौ भेटैए। जइ बेकतीकेँ विद्याक सूत्र भेट जाइत ओइ बेकतीक काया-कल्प

भऽ जाइत। छान्दोग्य उपनिषदक छअम प्रपाठमे उद्दालक आ श्वेतकेतुक संवाद अछि। विद्यालयक परीक्षा पास कऽ श्वेतकेतु आएल। मुदा ने ओकर आत्म परिष्कृत भेल आ ने उदण्डता कमल। जइसँ श्वेतकेतुक पिता उद्दालककेँ दुख भेलैन। खिसिया कऽ कहलखिन-

"अगर बेकतीत्वमे शालीनताक समावेश नै भेल तँ अनेरे कियो किए पढ़ैमे समय नष्ट करत?"

महसूस करैत श्वेतकेतु कहलकैन-

"अगर ई रहस्य जौं हमर शिक्षक जनितैथ तँ जिनगी भरि शिक्षके किए रहितैथ वा तँ ऋृषि बनैबतैथ वा द्रष्टा।"

श्वेतकेतुक विचार सुनि पिता मने-मन सोचए लगला जे पुत्रक प्रति पितोक दायित्व होइत। एकटा गुल्लरिक फड़ आनि उद्दालक फोड़लैन। गुल्लरिक भीतरमे छोट-छोट अनेको बीआ छेलइ। ओइ बीआकेँ देखबैत कहलखिन-

"ऐ नान्हि-नान्हिटा बीआक भीतर विशाल वृक्ष छिपल अछि। तहिना जेकरा आत्म-ज्ञान भऽ जाइ छै ओ वृक्षे सदृश विकासो करैए आ फड़बो-फुलेबो करै अछि। तहूँ ओइ तत्वकेँ चिन्हऽ।" ❑

मजूरी

एक दिन गाड़ीक प्रतीक्षामे लियो टाल्सताय स्टेशनपर ठाढ़ रहैथ। एकटा अमीर परिवारक महिला, साधारण आदमी बुझि हुनका कहलकैन- "हमर पति सामनेबला होटलमे छैथ। अहाँ जा कऽ हुनका ई चिट्ठी दऽ अबयौन। ऐ काज-ले दू आना पाइ देब।"

चिट्ठी नेने टाल्सताय होटल जा दऽ देलखिन। घुमि कऽ आबि अपन कमेलहा दू आना पाइयो लऽ लेलैन। कनीकाल पछातइ एकटा अमीर आदमी आबि, प्रणाम कऽ टाल्सतायसँ गप-सप्प करए लगल। ओ आदमी हुनकासँ नम्रतापूर्वक गप्प करैत। गप-सप्पक क्रममे ओ आदमी टाल्सतायकेँ आदर सूचक शब्द “काउंट” सँ सम्बोधित करैत रहैन। बगलमे बैसल ओ महिला सभ किछु देखैत-सुनैत। ओ महिला एक गोरेकेँ पुछलक- “ई के छैथ?”

ओ आदमी लियो टाल्सतायक नाओं कहलखिन। टाल्सताइक नाओं सुनि ओ महिला, टाल्सताय लग आबि क्षमा मांगि अपन दुनू आना पाइ घुमा दइले कहलकैन। हँसैत टाल्सताय उत्तर देलखिन-

“बहिनजी, ई हमर मजूरीक पाइ छी। एकरा हम किन्नहु नै घुमाएब।” ❑

जीवन यात्रा

गंगोत्रीसँ गंगाजल धरतीसँ बाहर निकैल चलि पड़ल। पहाड़सँ निच्चाँ आरो निच्चाँ होइत मैदानमे पहुँचल। एक गोरे ऐ प्रक्रियाकेँ गम्भीरतासँ देखि रहल छल। आगू मुहेँ जल बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। जइमे अनेको जल-नद आबि-आबि मिलैत गेल। जइसँ एक विशाल नदी बनि गेल।

ओ नदी जाइत-जाइत समुद्रमे मिलि गेल। जे बेकती देखि रहल छेलइ। ओइ बेकतीक मनमे भेलै जे जलक ई मुरुखपाना छी। किएक तँ जे हिमालयक उच्च शिखर छोड़ि, अनेक प्रकारक दुख उठा, नोनगर पानिमे मिलल। एकरा मुरुखपाना नै कहबै तँ की

कहबै? ओइ बेकतीक मनःस्थितिकेँ नदी बुझि गेल। कहलक-

"अहाँ हमर यात्राक मर्म नै बुझि सकलौं। केतबो ऊँच हिमालय किए ने हुअ मुदा ओ अपूर्ण अछि। पूर्णता तँ गहराइमे होइ छै, जैठाम पहुँचलापर मनक सभ कामना समाप्त भऽ जाइ छइ। हम हिमालय सन महान ऊँचाइक आत्मा छी जे पूर्णता पबैले निरन्तर चलैत समुद्रक गहराइमे पहुँचलौं तँए, हमरा बेहद खुशी अछि, अप्पन लक्ष्य धरि पहुँच गेलौं।" ❑

ज्योति

जनक और याज्ञवल्क्यक बीच ज्ञानक चरचा चलै छल। जनक पुछलखिन-

"सुर्यास्त भेलापर -सुरूज डुमलापर- अन्हारक सघन वनमे रस्ता केना ताकल जाए?"

जनकक प्रश्न सुनि मुस्कियाइत याज्ञवल्क्य उत्तर देलखिन-

"तरेगन रस्ता बता सकैत।"

याज्ञवल्क्यक उत्तरसँ असन्तुष्ट होइत जनक पुछलखिन-

"अगर मेघौन होइ? संगे दीपकक प्रकाश सेहो नै उपलब्ध होइ, तखैन?"

जनकक प्रश्नक गम्भीरताकेँ बुझैत याज्ञवल्क्य कहलखिन-

"अपना सुझि-बुझिक सहारा लेबाक चाही।"

विवेकक प्रकाश हर मनुक्खमे होइ छइ। जे कहियो नै मुझाइत। ओइ सूतल विवेककेँ जगाएबे ऋृषि समुदायिक पवित्र कर्तव्य छी। ❑

पवनक विवेक

चन्द्रमाकेँ दू सन्तान- एक बेटा आ एक बेटी। बेटाक नाओं पवन आ बेटीक आँधी। एक दिन आँधीक मनमे उपकल जे पिता संसारिक पिता जकाँ हमरो दुनू भाए-बहिनमे भेद करै छैथ। आँधीक बेथाकेँ चन्द्रमा बुझि गेलखिन। बेटीक आत्मनिरीक्षण-ले चन्द्रमा एकटा अवसर देबाक विचार केलैन।

दुनू भाए-बहिनकेँ बजा पुछलखिन-

“बाउ, अहाँ सभ स्वर्गक इन्द्रक काननक परिजात नामक देववृक्षकेँ देखने छी?”

दुनू भाए-बहिन कहलखिन-

“हँ।”

पिता-

“अहाँ दुनू ओतए जाउ आ सात खेप ओकर परिक्रमा कए कऽ आउ।”

पिताक आज्ञा मानि दुनू गोरे चलि देलक। आँधी हू-हू-आ कऽ दौगल। जइसँ गरदा, खढ़-पात आ कूड़ा-कड़कट उड़बैत लगले पहुँच आ सात बेर परिक्रमा कऽ चोट्टे घुमि कऽ आबि गेल। मने-मन आँधी सोचैत जे हम्मर काज देखि पिता प्रशंसा करता।

पवन पाछू घुमि कऽ आएल। ओकरा संग सौंधी-सुगन्ध सेहो आएल। जइसँ सौंसे घर गमैक उठल।

मुस्कियाइत चन्द्रमा बेटीकेँ कहलखिन-

“बेटी, अहाँ नीक जकाँ बुझि गेल हेबै जे जे अधिक तेज गतिसँ चलत ओ खाली झोरा लऽ कऽ औत मुदा जे सोबहाविक

गतिसँ चलत ओ मनकेँ मुग्ध करैबला सुगन्ध सेहो लौत। जइसँ सौंसे वातावरण सुगन्धित होएत।

वानप्रस्थक यात्रा पवन देव सदृश उदेसपूर्ण होइत। ❑

आत्मबल-2

जइ समैमे डॉक्टर राधाकृष्णन कौलेजमे पढ़ैत रहैथ, घटना ओइ समैक छी। कौलेजमे पादरी शिक्षक अधिक रहथिन।

एक दिन एकटा प्रोफेसर, किलासेमे हिन्दू धर्मक निन्दा खुलेआम केलैन। बालक राधाकृष्णन सेहो किलासमे छला। प्रोफेसरक बातसँ हुनका एते क्रोध भेलैन जे सम्हारि नै सकला। उठि कऽ ठाढ़ होइत पुछलखिन-

"महाशय, की इसाई धरम आन धर्मक निन्दा केनाइ सिखबैए?

राधाकृष्णनक प्रश्न सुनि ओ तमसा कऽ बजला- "और की हिन्दुधर्म दोसराक प्रशंसा करैए?"

राधाकृष्णन जवाब देलखिन- "हँ, हम्मर धरम कोनो धर्मक अधला नै करैए। गीतामे कृष्ण कहने छथिन 'कोनो देवताकेँ उपासना केलासँ हमरे उपासना होइत अछि।' आब अहीं कहू जे हम्मर धरम केकर निन्दा करैए?"

प्रोफेसर निरुत्तर भऽ गेला। ❑

खुदीराम बोस

स्वतंत्रता संग्रामक प्रखर सिपाही खुदीराम बोसकेँ मुजफ्फरपुर जेलमे फाँसी भेलैन। जइ समय फाँसी भेल रहैन ओइ समय खुदीरामक वएस मात्र अठारह बरख आठ मासक रहैन। ओना, हुनकर जनम बंगालमे भेल छेलैन मुदा ओ अपनाकेँ भारत माताक बेटा बुझै छला। हुनकापर अंग्रेज किंग फोर्डक हत्याक आरोप लगौल गेल छेलैन। ओ जेहने कर्मठ तेहने हँसमुख छला। फाँसीसँ किछु समय पहिने जेलर उदार पूर्वक आम आनि खाइले दैत कहलकैन-

“चुपचाप खा लिअ। कियो बुझए नहि।”

खुदीराम आम रखि लेलैन। साँझू पहर जखन दोहरा कऽ जेलर आबि पुछलकैन तँ ओ जवाब देलखिन- “जखैन आइ फाँसीए होइबला अछि, तँ डरसँ किछु खाइ-पीबैक मन नै होइए। अहाँक आम ओहिना कोनमे राखल अछि।”

आमक गुद्दा खा कऽ बोस खोंइचाक खपलोइयामे मुहसँ हवा भरि ओहिना रखि देने रहथिन। कोनमे पहुँच जखन जेलर आम उठौलक तँ पचकि गेलइ। जैपर जेलर भभा कऽ हँसल। जेलरक हँसी देखि खुदीरामो खूब जोरसँ ठहाका मारि हँसला।

मृत्युक एक्को पाइ डर हुनका नै छेलैन।

खुदीरामक फाँसीक चरचा, लोकमान्य तिलक अपन पत्रिका ‘केशरी’मे ‘देशक दुर्भाग्य’ शीर्षक नाओंसँ लेख लिखलैन। जैपर तिलककेँ छह मासक कारावास भेलैन। ❑

शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो

गुरुकुलमे ई अनिवार्य नै जे नीक -आलीशान- मकानक बन्द कोठरीए-टामे शिक्षा देल जाए। अनिवार्य ई जे छात्रक मन:स्थितिक अनुरूप प्राकृतिक पाठशालामे बेवहारिक शिक्षा भेटइ। जइसँ बेकतीत्वमे प्रखरताक समावेश-सम्वर्धन भऽ सकए।

महर्षि जरत्कारुक गुरुकुलमे छात्र विद्रुध प्रवेश पौलक। किछुए दिन पछातइ विद्रुधक प्रतिभासँ गुरु जरत्कारु प्रभावित होइत कहलखिन- "बाउ, पौरुषक -पुरुषत्व- परीक्षामे उतीर्ण भेलेपर कियो बरिष्ठ -महान- बनि सकैए। अहाँ पराक्रमक संग-संग पोथीओ पढ़ू।"

महर्षिक परामर्शसँ सहमत होइत विद्रुध कहलकैन- "अपनेक जे आदेश हुअए, तैयार छी।"

विद्रुध कऽ एक साए गाए प्रभुदारण्यमे चरबैक आदेश दैत कहलखिन- "जखैन हजार गाए भऽ जाए तखैन घुमि कऽ आएब।"

पोथी सभ सेहो लऽ लेलक। साए गाएकेँ हजार गाए बनबैमे विद्रुधकेँ बारह बरख समय लगल। बच्चो सभ पुष्ट। किएक तँ कोनो बच्चाकेँ दूध पीबैमे कोताही नै करैत। ऐ बारह बर्खक बीच विद्रुध अनेको साधक, विद्वानसँ सम्पर्क बना सीखबो केलक आ रस्ताक बाधासँ सेहो निपटल। जइसँ ओकर प्रतिभामे आरो चारि चान लगि गेलै घुमि कऽ एलापर चेहरासँ ब्रह्मतेज टपकैत। किएक तँ अपन बुधिक प्रयोगसँ पढ़बो केलक आ बुझबो आ सीखबो केलक।

विद्रुधक मेहनैत आ साहस देखि जरत्कारु हृदैसँ आनन्दित होइत अपन आश्रमक भार दऽ नमहर काज करए अपने चलि गेला।❑

लौह पुरुष

ई घटना 1946 इस्वीक छी। बम्बइ बन्दरगाहमे नौ-सैनिक विद्रोह केलक। अंग्रेज शासक ओकरा -नौ-सैनिककेँ- गोलीसँ भुजि देबाक धमकी देलक। जेकरा जवाबमे भारतक नौ-सेना माटिमे मिला देब कहलक। स्थिति भयानक बनि गेल। पाछू हटैले कियो तैयार नहि। ओइ समय सरदार वल्लभ भाय पटेलक हाथमे बम्बइक नेतृत्व छेलैन। जिनकापर सभ टकटकी लगौने। मुदा सरदार पटेलक मनमे एक्को मिसिया घबड़ाहट नहि। बम्बइक गवर्नर बजा कऽ मारे अन्ट-सन्ट कहलकैन। गवर्नरक बात सुनि, शेरक बोली सदृश गरजि कऽ सरदार पटेल उत्तर देलखिन-

“ओ -गवर्नर- अपना सरकारसँ पुछि लिअ जे अंग्रेज भारतसँ मित्र जकाँ विदा हएत आकि लाश बनि।”

अंगेरज गवर्नर सरदार पटेलक जवाबसँ ठर्रा गेल। आखिरकार ओकरा समझौता करए पड़ल। वएह सरदार पटेल स्वतंत्र भारतक पहिल गृहमंत्री बनला।

कोनो आदमीमे साहस ओहिना नै बनैत। पुरुषार्थक बलपर विकसित होइत। ❑

जंग लगल

एक बेर भगवान वुद्धक समक्ष श्रेष्ठ पुत्र सुमन्त आ श्रमिक पुत्र तरुण संगे प्रब्रज्या लेलक। दुनू गोरे भावनापूर्वक संघारामक अनुशासनक पालन करए लगल। किछु मासक प्रगैतक जानकारी दैत प्रधान भिक्षु (संघाराम) कहलकैन- “तरुणक अपेक्षा सुमन्त

अघिक स्वस्थ आ पढ़ल-लिखल अछि। भावनो प्रवल छइ। मुदा सौंपल गेल काज आ साधनोक उपलब्धि तरुणमे सुमन्तक अपेक्षा अधिक अछि। जेकर कारण बुझिमे नै अबैए।"

संधारामक विचार सुनि तथागत -वुद्ध- कहलखिन- "अखैन सुमन्त जंग लगल लोहाक औजार सदृश अछि। जंग छुटैमे किछु समय लागत।"

तथागतक बात संघाराम नीक-नाहाँति नै बुझि सकल। तँए प्रश्न वाचक नजैर-सँ-नजैर मिला टकर-टकर मुँह दिस तकैत रहलैन।

स्पष्ट करैत वुद्ध कहलखिन-

"सुमन्तक अधिक समय आलस्य आ प्रमादमे बितल अछि। जइसँ बेकतीत्व, जंग लगल औजार सदृश भऽ गेल अछि। मुदा तरुण एहेन उपकरण अछि जेकरामे जंग छुबो ने केलक अछि। तँए, लगले फल पाबि रहल अछि। सुमन्तक जंग छोड़बैमे पर्याप्त समय आ साधना लागत। तखैन जा कऽ अभीष्ट फल निकलत।" ❑

जीवकक परीक्षा

आदर्श शिक्षक खाली अध्ययने नै छात्रकेँ ओइ विद्यामे एहेन पारंगत बना दैत, जइसँ ओ स्वर्ण बनि चमैक उठैत। तक्षशिला विश्वविद्यालयमे सात बरख आयुर्वेदक शिक्षा पाबि आचार्य वरस्पैत जीवकक परीक्षा लऽ कऽ विदा करबाक समय निकाललैन। समय निकालि गुरु (वरस्पैत) जीवककेँ हाथमे खुरपी दैत कहलखिन-

"एक योजनक बीच एकटा एहेन पौघा उपाड़ि कऽ नेने आउ जेकर औषधि नै बनैत हुअए।"

खुरपी लऽ जीवक विदा भेल। मास दिन घुमैत रहल मुदा एक्कोटा एहेन गाछ नै भेटलै जेकर औषधि नै बनैत होइ। मास दिन पछातइ जीवक घुमि कऽ आबि वरस्पैतकेँ कहलकैन-

“गुरुदेव, हमरा एक्कोटा एहेन गाछ नै भेटल जेकर औषधि नै बनैत होइ।”

जीवककेँ गरदैन लगबैत वरस्पैत कहलखिन- “वत्स, अहाँ सफल भेलौं। आब अहाँ जाउ, आयुर्वेदक प्रचार करू।” ❑

तप

श्रमे ओ देवता छी जे सभ सिद्धिक स्वामी छी। आयुष्यकेँ पूर्वार्द्धेमे एकर सम्पादन-ले विधाता मनुक्खकेँ शक्ति सम्पन्न बना दइ छथिन। जखने एकर उपेक्षा होइत तखने समाज अबेवस्थित हुअ लगैत। राजा बिराल मुनि बैवस्वतकेँ प्रणाम कऽ चुपचाप बैस गेला। सूक्ष्मदर्शी गुरु -बैवस्वत- बुझि गेलखिन जे कोनो गम्भीर चिन्तामे बिराल पड़ल छैथ।

पुछलखिन-

“बिराल, आइ अहाँ अशान्त जकाँ बुझि पड़ै छी। कथीक चिन्ता अछि से हमरो कहू?”

अपन अन्तर्वेदनाकेँ प्रगट करैत बिराल कहलखिन-

“देव, नै जानि किए प्रजाजन अशान्त छैथ। सभ कियो धरम आ शान्तिसँ विमुख भेल जा रहल छैथ। जइसँ धन-धान्यक अभाव आ प्रेम-भाव टुटि रहल अछि। अपराध वृत्ति बढ़ि रहल अछि।”

बिरालक विचार धियानसँ सुनि बैवस्वत कहलखिन- “जइ देशमे लोक मेहनैतसँ देह चोरौत, श्रमकेँ सम्मान जनक स्थान नै देत, ओइठाम केना समृद्धि भऽ सकैए।”

श्रम ओहन तप छी जइसँ समाजक सभ दोष मेटा जाइत अछि। तँए, श्रमकेँ साधना बुझि सभकेँ ऐमे लगि जेबाक चाही। जइ परिवार, समाज आ देशमे श्रमकेँ जेते महत देल जाएत, ओ ओते उन्नैत करत। ❑

उल्टा अर्थ

शिक्षा केहेन देल जाए, की देल जाए ई गम्भीर प्रश्न छी।

एक गोरेकेँ दूटा सन्तान छल। एक बेटा दोसर बेटी। सम्पन्न परिवार। दुनू सन्तानकेँ बच्चेसँ सुख-सुविधा भेटैत रहल। जइसँ वयस्क होइत-होइत अनेको व्यसनक आदैत लगि गेलइ।

अपन दुनू बच्चाकेँ बिगड़ल देखि पिताक मनमे चिन्ता भेलैन। भीतरे-भीतर सोगाए लगला। जइसँ रोगी जकाँ खिन्न हुअ लगला। एक दिन एकटा मित्र पुछलकैन-

“मित्र, अहाँ दिनानुदिन खिन्न किए भेल जा रहल छी?”

मित्रक बात सुनि ओ उत्तर देलकखिन-

“मित्र, सभ किछु अछैतो दुनू बच्चा बिगैड़ गेल अछि। वएह चिन्ता मनकेँ पकड़ने अछि।”

दुनू गोरे विचारि तँइ केलक जे दुनू बच्चाकेँ एक मास महाभारतक कथा, जइमे धरम आ सदाचारक सभ तत्व मौजूद अछि, सुनौल जाए। सएह केलक।

मास दिन महाभारतक कथा सुनला पछातइ दुनू आरो बिगैड़ गेल। बेटा अपना मितकेँ कहलक- “भगवान श्री कृष्णकेँ सोलह हजार रानी छेलैन तँ दस-बीससँ सम्बन्ध राखब केना अधला हएत?”

तहिना बेटियो अपन बहिनाकेँ कहलक- “कुन्तीकेँ कुमारियेमे बेटा भेलै जे श्रेष्ठ नारीक श्रेणीमे छैथ तखैन हम कोन अधला काज करै छी।”

आब प्रश्न उठैत जे एना किए भेल?

अखैन धरि जे कथा श्रवणक बेवहार अछि ओ अपूर्ण अछि। दृष्टिकोण बदलैले एहेन प्रभावी वातावरण बनबए पड़त जइमे कथाक चर्च आ क्रियामे समुचित समन्वय हेबाक चाही। तखने दृष्टिकोण बदलत आ समुचित उपयोगी बनत। ❑

जाति नहि पानि

वुद्धदेवक प्रमुख शिष्य आनन्द श्रावस्तीमे भिक्षाटन करैत रहैथ। गरमी मास तँए रौदो तीख। हुनका पिआस लगलैन। लगमे पानिक कोनो जोगार नै देखि किछु आगू बढ़ला। एकटा युवतीकेँ इनारपर पानि भरैत देखलखिन। पानि देखि मनमे सवुर भेलैन। इनार लग पहुँच ओइ युवतीकेँ आनन्द कहलखिन- “दाय, हमरा बड़ जोर पिआस लगल अछि कनी पानि पियाउ?”

पानि नै दऽ ओ युवती कहलकैन- “साधुबाबा, हम चण्डालक बेटी छी हम्मर छुबल पानि केना पीब?”

कनीकाल गुम्म रहि आनन्द कहलखिन- “बुच्ची, हम तोरा तँ

जाति नै पुछलियह। पानि मंगलियह।”

पिआससँ तरसैत आनन्दकेँ देखि ओइ युवतीकेँ दया लगल। मुदा मनमे विचित्र द्वन्द्व उपैक गेलइ। अन्तमे ओ पानि भरि आनन्दकेँ देलकैन, पानि पीब आनन्द तृप्त भऽ गेला।

महात्मा नारायण स्वामी कहने छैथ जे जाति-पाति आ अस्पृश्यताक बन्धन हिन्दू जाति-ले कलंक छी। यएह बन्धन सभ जातिकेँ छिन्न-भिन्न केने अछि। एकरे चलैत सभ जातिक बीच घृणा आ द्वेष पसरल अछि। ❑

ऊँच-नीच

एक राति, जखन पुजेगरी मन्दिरक केबाड़ बन्न कऽ चलि गेल, स्तम्भक माने खुट्टाक पाथर देवमूर्ति बनल पाथरसँ पुछलक- “की भाय, हम सभ तँ एक्के पहाड़क पाथर छी। फेर अहाँक पूजा होइए आ हम जे मकानक -मन्दिरक- भार उठैने छी से हम्मर कोनो मोजरे नहि?”

देवताक आसनपर बैसल पाथर मने-मन विचार करए लगल। मुदा प्रश्नक जवाब नै बुझि कहलक- “भाय, हम ऐ रहस्यकेँ नै जनै छी। पुजेगरी विद्वान छैथ हुनकासँ बुझि काल्हि कहब।”

प्रातःकाल पुजेगरी आबि पूजा करए लगल। फूल-पात चढ़ा, दुनू हाथ जोड़ि पुजेगरी धियान केलैन आकि देव-पाथर पुछलखिन-

“मन्दिरमे जेते पाथर अछि सभ तँ गुण-जातिसँ एक्के अछि। फेर हम किए पूजणीए छी?”

पुजेगरी- “हे देव, अपने बड़ पैघ बात पुछलौं। एक गुण, घर्म

आ जातिक सभ वस्तुक उपयोग एक्के पद-ले हुअए, ई सर्वथा असम्भव अछि। प्रकृति केकरो एक रंग नै रहए दइए। जे मनुक्खोमे अछि। बहुतो मनुक्खमे एक तरहक प्रतिभा आ गुण-घर्म होइए मुदा ओहूमे अपन श्रेष्ठ कर्मक कारणे कियो सभसँ आगू बढ़ि जाइत आ कियो पाछू पड़ि जाइत। तँए एकर अर्थ ई नै जे ओ -पाछू पड़ल- अपनाकेँ हेय बुझए। किएक तँ परिवर्त्तन सृष्टिक निअम छिऐ। आइ जे ऊपर अछि ओ काल्हियो ऊपरे रहत एकर कोनो गारंटी नै छइ। तहिना जे निच्चाँ अछि ओ सभ दिन निच्चेँ रहत सेहो बात नहि।” ❑

पागलखाना

एकटा छोट-छीन देश आनन्द लोक। देशमे लोकक संख्या जमीने अनुकूल। उर्वर माटि मीठ पानि, मधुर हवाक मिलान तँए मनुक्खसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछ, फल-फूल, जीव-जन्तु धरि आनन्दसँ रहैत। दुनियाँक आन देशमे तँ ढेरो सम्प्रदाय अछि मुदा ओइ देशमे दुइएटा। दू सम्प्रदाय रहनौं कहियो अपनामे झगड़ा-झंझट नै होइत। एक्के इनारक पानि पिऐत, एक्के पोखैरमे नहाइत। एक्के स्कूलमे पढ़ैत आ मौका-कुमौका एक्के जहलोमे रहैत। तेतबे नहि, बाढ़ि, रौदी, बिहाड़ि, शीतलहरी सेहो संगे झेलैत।

एक दिन दुनू सम्प्रदायक बीच एकटा गाममे झगड़ा अइले भऽ गेलै जे दुनू अपन-अपन सम्प्रदायकेँ दोसरसँ पैघ कहए लगलै। एकठामसँ झगड़ा शुरू भेल आ सगरे देश पसैर गेल। झगड़ोक रूप बदलए लगलै। गारि-गरौवैलसँ पटका-पटकी होइत खून-खच्चर हुअ लगलै। अन्तमे दुनू सम्प्रदाय दू देश बना लेलक।

दुनू देशक सिपाही सिमापर बाँसक खुट्टा गारि-गारि सिमान काएम करए लगल। अदहासँ जखन आगू बढ़ल तँ सिमापर एकटा पागलखाना पड़ैत रहए।

दुनू देशक सिपाही पगलखन्नाक बगलमे बैस विचारए लगल जे ऐठाम केना सिमा काएम करब? दुनूमे सँ कियो अपना दिस पगलखन्ना लेमए नै चाहैत।

दुनूक बीच विवाद शुरू भेल। दुनू अपन काज रोकि अपना-अपना सरकारकेँ खबैर देलक। सरकार पागलक संख्या पता लगबए चाहलक जे दुनू सम्प्रदायक कए-कए गोट पागल अछि। तइले आदेश देलक। दुनू देशक सिपाही मिलि कऽ पागलखाना जा पुछलक-

“अपन-अपन सम्प्रदायक नाओं कहू?”

सभ पागल हल्ला करैत कहए लगलै-

“अरे बेकूफ, भाग एतऽ सँ हम सभ एक छी आ एक रहब।”❑

❑❑❑

❑❑

❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक

मौलिक कृति:



1. गामक जिनगी: (कथा संग्रह), 2009
2. मौलाइल गाछक फूल: (उपन्यास), 2009
3. उत्थान-पतन: (उपन्यास), 2009
4. जिनगीक जीत: (उपन्यास), 2009
5. मिथिलाक बेटी: (नाटक), 2009
6. जीवन-मरण: (उपन्यास), 2010
7. जीवन संघर्ष: (उपन्यास), 2010
8. बजन्ता-बुझन्ता: (बीहैन कथा संग्रह) 2013
9. शंभुदास: (दीर्घ कथा संग्रह) 2013
10. उलबा चाउर: (कथा संग्रह), 2013
11. अर्द्धांगिनी: (कथा संग्रह), 2013
12. सतभैंया पोखैर: (कथा संग्रह), 2013
13. भकमोड़: (कथा संग्रह), 2013
14. नै धाड़ैए: (उपन्यास), 2013
15. बड़की बहिन: (उपन्यास), 2013
16. इन्द्रधनुषी अकास: (काव्य संग्रह), 2013
17. तीन जेठ एगारहम माघ: (गीत संग्रह), 2013

18. राति-दिन: (काव्य संग्रह), 2013

19. सरिता: (काव्य संग्रह), 2013

20. गीतांजलि: (काव्य संग्रह), 2013

21. सुखाएल पोखरिक जाइठ: (काव्य संग्रह), 2013

22. कम्प्रोमाइज: (नाटक), 2013

23. झमेलिया बिआह: (नाटक), 2013

24. रत्नाकर डकैत: (नाटक), 2013

25. स्वयंवर: (नाटक), 2013

26. पंचवटी: (एकांकी संचयन), 2013

27. गढ़ैनगर हाथ (बीहैन कथा संग्रह), 2014

28. गामक शकल-सूरत: (कथा संग्रह), 2014

29. लजबिजी: (कथा संग्रह), 2014

30 समरथाइक भूत: (कथा संग्रह), 2014

31. अप्पन-बीरान: (कथा संग्रह), 2014

32. बाल गोपाल: (कथा संग्रह), 2014

33. रटनी खढ़: (दीर्घ कथा संग्रह) 2014

34. पतझाड़: (कथा संग्रह), 2014

35. अपन मन अपन धन: (कथा संग्रह), 2015

36. उकडू समय: (कथा संग्रह), 2015

37. मधुमाछी: (कथा संग्रह), 2015

38. पसेनाक धरम: (कथा संग्रह), 2015

39. गुड़ा-खुद्दीक रोटी: (कथा संग्रह), 2015

40. फलहार: (कथा संग्रह), 2015

41. खसैत गाछ: (कथा संग्रह), 2015

42. ठूठ गाछ: (उपन्यास), 2015

43. कल्याणी: (एकांकी), 2015

44. सतमाए: (एकांकी), 2015

45. समझौता: (एकांकी), 2015

46. तामक तमघैल: (एकांकी), 2015

47. बीरांगना: (एकांकी), 2015

48. एगच्छा आमक गाछ: (कथा संग्रह), 2016

49. शुभचिन्तक: (कथा संग्रह), 2016

50. गाछपर सँ खसला: (कथा संग्रह), 2016

51. डभियाएल गाम: (कथा संग्रह), 2016

52. गुलेती दास: (कथा संग्रह), 2016

53. मुड़ियाएल घर: (कथा संग्रह), 2016

54. बीरांगना: (कथा संग्रह), 2017

55. स्मृति शेष: (कथा संग्रह), 2017

56. बेटीक पैरुख: (कथा संग्रह), 2017

57. क्रान्तियोग: (कथा संग्रह), 2017

58. त्रिकालदर्शी: (कथा संग्रह), 2017

59. पैंतीस साल पछुआ गेलौं: (कथा संग्रह), 2017

60. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं: (उपन्यास), 2017

61. दोहरी हाक: (कथा संग्रह), 2018

62. सुभिमानी जिनगी: (कथा संग्रह), 2018

63. देखल दिन: (कथा संग्रह), 2018

64. गपक पियाहुल लोक: (कथा संग्रह), 2018

65. दिवालीक दीप: (कथा संग्रह), 2018

66. अप्पन गाम: (कथा संग्रह), 2018

67. लहसन: (उपन्यास), 2018

68. पंगु: (उपन्यास), 2018

69.आमक गाछी: (उपन्यास), 2018

70. सतबेध: (गीत संग्रह), 2018

71. खिलतोड़ भूमि: (कथा संग्रह), 2019

72. चितवनक शिकार: (कथा संग्रह), 2019

73. चौरस खेतक चौरस उपज: (कथा संग्रह), 2019

74. समयसँ पहिने चेत किसान: (कथा संग्रह), 2019

75. भौक: (कथा संग्रह), 2019

76. गामक आशा टुटि गेल: (कथा संग्रह), 2019

77. पसेनाक मोल: (कथा संग्रह), 2019

78. चुनौती: (कथा संग्रह), 2019

79. रहसा चौरी: (गीत संग्रह), 2019

80. कृषियोग: (कथा संग्रह), 2020

81. हारल चेहरा जीतल रूप: (कथा संग्रह), 2020

82. रहै जोकर परिवार: (कथा संग्रह), 2020

83. कामधेनु: (गीत संग्रह), 2020

84. मन मथनः (गीत संग्रह), 2020

85. अकास गंगाः (गीत संग्रह), 2020

86. सुचिताः (उपन्यास) 2020

87. कर्ताक रंग कर्मक संगः (कथा संग्रह), 2020

88. गामक सूरत बदैल गेलः (कथा संग्रह), 2020

89. अन्तिम परीक्षाः (कथा संग्रह), 2020

90. घरक खर्चः (कथा संग्रह), 2020

91. मोड़परः (उपन्यास), 2021

92. संकल्पः (उपन्यास), 2021

93. अन्तिम क्षणः (उपन्यास), 2021

94. नीक ठकान ठकेलौंः (कथा संग्रह), 2021

95. कुण्ठाः (उपन्यास), 2021

96. पयस्विनीः (निबन्ध-प्रबन्ध), 2021

97. जीवनक कर्म जीवनक मर्म (कथा संग्रह), 2021

98. संचरणः (कथा संग्रह), 2022

199. भरि मन काजः (कथा संग्रह), 2022

100. आएल आशा चलि गेलः (कथा संग्रह), 2022

101. जीवन दानः (कथा संग्रह), 2022

102. अप्पन सातीः (कथा संग्रह), 2022

103. साहित्यकारक विवेकः (कथा संग्रह), 2022

104. नब बनक नब फलः (कथा संग्रह), 2022

105. सुनयना बेटीः (उपन्यास), 2023

106. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल: (कथा संग्रह), 2023

107. बासभूमि: (कथा संग्रह), 2023

108. टकुआटान: (कथा संग्रह)

119. एकलव्यपन: (कथा संग्रह), 2023

110. एक चुटकी खुशी: (कथा संग्रह), 2023

111. नियति आ पुरुषार्थ: (बाल कथा संग्रह), 2023

112. श्रद्धा: (बाल कथा संग्रह), 2023

❑❑❑

❑❑

❑

Notes